Environment Pedagogy

पर्यावरण शिक्षण

Most Important For Samvida varg 3 CTET UPTET and Other State TET

ऐसी ही PDF के लिये Google पर Search करें – "Nitin Gupta PDF"

For Best PDF, Search on Google - "Nitin Gupta PDF"

Free Download All Subject PDF

आप नीचे दिये Link से संबंधित Subject की सभी PDF को Download कर सकते हैं

Gepgraphy PDF

Economics PDF

Polity PDF

Science PDF

Computer PDF

Environment PDF

PDF
General Hindi PDF

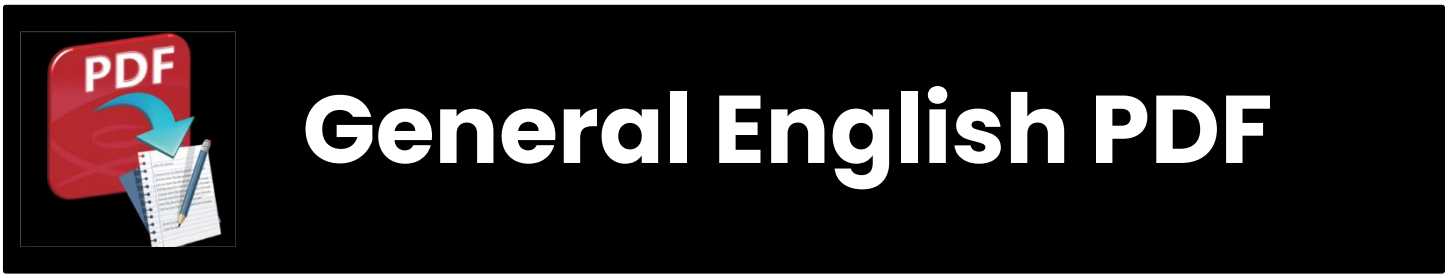
PDF
General English PDF

PDF
Child Development and
Pedagogy PDF

PDF
MP GK PDF

PDF
UP GK PDF

PDF
Rajasthan GK PDF

भाग-4 पर्यावरण शिक्षणशास्त्र

पर्यावरण अध्ययन की अवधारणा

■ पर्यावरण अध्ययन की अवधारणा

पर्यावरण की अवधारणा दो शब्दों से मिल कर बनी है—'परि' तथा 'आवरण'। 'परि' का अर्थ है 'चारों ओर' तथा 'आवरण' का अर्थ है 'वह जो चारों ओर से घेरे'।

पर्यावरण का आशय उन सब तत्त्वों से है जो मानव के चारों ओर उपस्थित है। इसमें वायु, धरती, वन, सूर्य आदि सभी शामिल हैं। इसके अतिरिक्त मानव के चारों ओर मानव द्वारा निर्मित सामाजिक तत्त्व भी हैं, जो उसे घेरे हुए उसे प्रतिक्षण किसी न किसी रूप में प्रभावित करते रहते हैं।

मानव का प्रत्येक क्षण पर्यावरण में व्यतीत होता है।

पर्यावरण का अर्थ तथा इसके विभिन्न पक्षों के बारे में विद्वानों के कुछ विचार निम्नलिखित हैं—

1. सी.सी. पार्क के अनुसार, "मनुष्य एक विशेष स्थान पर विशेष समय पर जिन सम्पूर्ण परिस्थितियों से घिरा हुआ है उसे पर्यावरण कहा जाता है।"

2. डगलस तथा हॉलैण्ड के अनुसार, "जीव जगत के प्राणियों के विकास, परिपक्वता, प्रकृति व्यवहार तथ जीवन शैली को प्रभावित करने वाली समस्त बाह्य शक्तियों, परिस्थितियों तथा घटना को पर्यावरण में सम्मिलित किया जाता है और उन्हीं की सहायता से पर्यावरण का वर्णन किया जाता है।"

3. अन्सटैसी के अनुसार, "व्यक्ति के वंशानुक्रम के अतिरिक्त वह सब कुछ पर्यावरण माना जाता है जो उसे प्रभावित करता है।"

4. बोरिंग के अनुसार, "एक व्यक्ति के पर्यावरण में वह सब कुछ सम्मिलित किया जाता है, जो उसके जन्म से मृत्युपर्यन्त तक प्रभावित करता है।"

संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि "पर्यावरण भौतिक, मानसिक, सामाजिक, नैतिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं भावात्मक आदि सम्पूर्ण शक्तियों एवं परिस्थितियों का योग होता है जो जीवन, प्रकृति एवं व्यवहार विकास में प्रत्येक प्राणियों की परिपक्वता को प्रभावित करता है।"

पर्यावरण के घटक (Components of Environment)

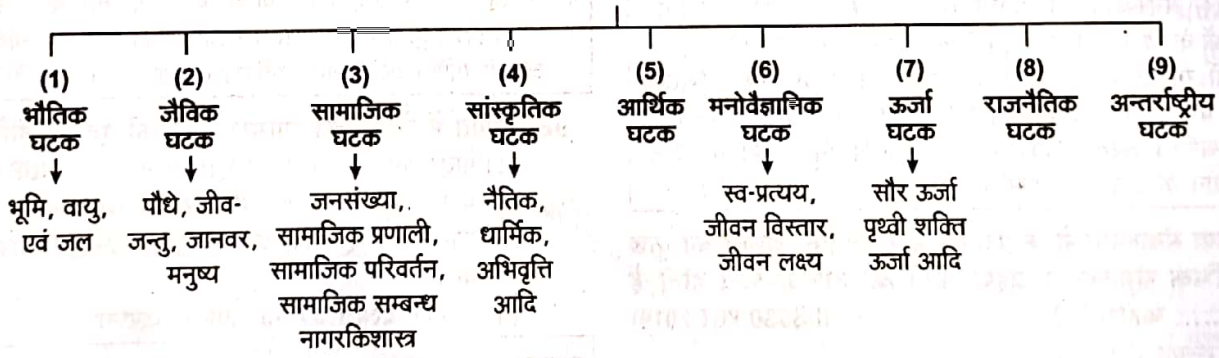

■ पर्यावरण अध्ययन पाठ्यक्रम में एक अलग विषय के रूप में

पर्यावण अध्ययन की अवधारणा एक अलग विषय के रूप में विशेषकर कक्षा 6 से 8 में इक्कसवीं सदी की देन है।

वर्तमान काल में संयुक्त राष्ट्र संघ ने वर्ष 1972 में स्टॉकहोम (स्वीडन में) पर्यावरण पर एक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया तथा संसार में पर्यावरण जागरूकता का कार्यक्रम चलाया। इसके पश्चात् स्कूलों में पर्यावरण के विभिन्न पक्षों का अध्ययन आरम्भ हुआ।

भारत वर्ष में आधारभूत तथा गैर आधारभूत शिक्षा पाठ्यक्रम में अलग विषय के रूप में पर्यावरण अध्ययन को कोई स्थान नहीं दिया गया है।

माध्यमिक शिक्षा आयोग 1952-53 ने पर्यावरण अध्ययन का कोई उल्लेख नहीं किया है।

For Best PDF, Search on Google - "Nitin Gupta PDF"
Scanned by CamScanner

कोठारी शिक्षा आयोग 1964-66 ने पर्यावरण का अध्ययन (Study of the Environment) को कक्षा 3 तथा 4 के पाठ्यक्रम में अलग विषय माना है। कक्षा 6 से 8 में सामाजिक विज्ञान/सामाजिक अध्ययन (Social Studies) नाम दिया गया है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1968, 1986 तथा 1992 में 'पर्यावरण अध्ययन' नामावली का उल्लेख नहीं है, किन्तु इनमें पर्यावरण के प्रति 'जागरूकता' की बात कही गई है।

वर्ष 2000 में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान परिषद् ने पाठ्यक्रम तैयार किया। इसमें कक्षा 9 से आगे की कक्षाओं में पर्यावरण अध्ययन को एक स्वतन्त्र विषय माना गया है।

वर्ष 2005 में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान तथा शिक्षण परिषद् ने 'राष्ट्रीय पाठ्यक्रम फ्रेमवर्क' दस्तावेज निकाला। इसमें पर्यावरण अध्ययन को कक्षा 3 से 5 तक के पाठ्यक्रम में अलग विषय के रूप में मान्यता दी गई है

पर्यावरण का वर्गीकरण

कर्ट लेविन द्वारा पर्यावरण का वर्गीकरण
(Classification as given by Kurt Lewin)

- (1) भौतिक पर्यावरण (Physical Environment)
  जैविक तत्त्वों (Biological Elements) को कर्ट लेविन ने भौतिक पर्यावरण में सम्मिलित किया है
- (2) सामाजिक तथा सांस्कृतिक पर्यावरण (Social and Cultural Environment)
- (3) मनोवैज्ञानिक पर्यावरण (Psychological Environment)

पर्यावरण अध्ययन के मुख्य घटक (Main Components of EVS)

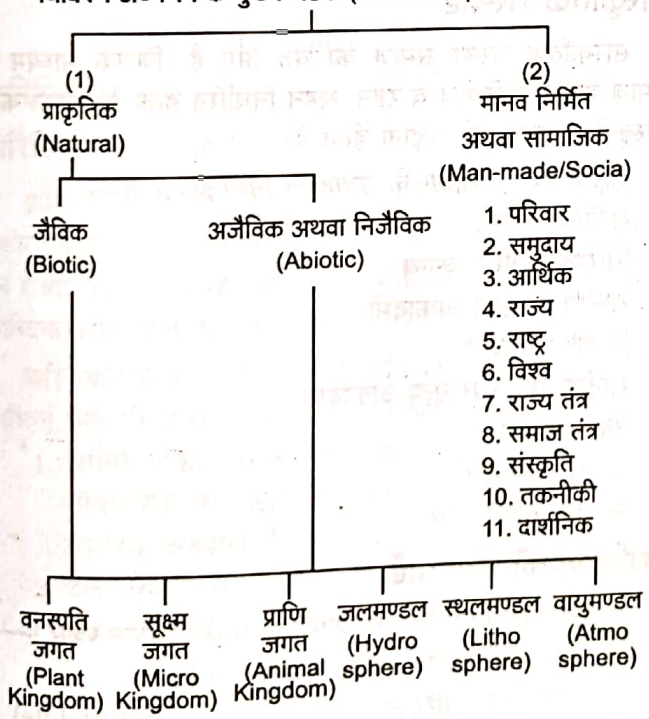

उपरोक्त से स्पष्ट है कि पर्यावरण के दो भाग हैं तथा सामाजिक अध्ययन का सम्बन्ध मुख्यत: सामाजिक वातावरण से है।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और शिक्षण परिषद् द्वारा दिया गया पर्यावरण अध्ययन का वर्गीकरण

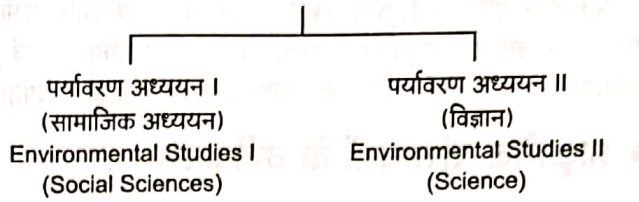

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और शिक्षण परिषद् (NCERT) ने 'विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2001 तथा 2005) में पर्यावरण सम्बन्धी अध्ययन को कक्षा 1 से 5 के लिए दो भागों में बाँटा है

(i) प्रकृति सम्बन्धी पक्ष, (ii) मानव सम्बन्धी पक्ष।

पर्यावरण अध्ययन भाग I—पर्यावरण अध्ययन के इस भाग की विषय-सामग्री के मुख्य स्रोत हैं-इतिहास, भूगोल, नागरिकशास्त्र तथा समाजशास्त्र।

पर्यावरण अध्ययन भाग II— पर्यावरण अध्ययन के इस भाग की विषय सामग्री के मुख्य स्रोत हैं-प्रकृति विज्ञान।

मानव एवं पर्यावरण में अन्तर्सम्बन्ध—मानव जीवन एवं वातावरण का गहरा सम्बन्ध है। दोनों को एक-दूसरे से पृथक् नहीं किया जा सकता।

■ पर्यावरण अध्ययन के प्रमुख घटक एवं महत्त्व

सामाजिक अध्ययन के मुख्य घटक नीचे दिए हैं—

1. मानव (Man), 2. प्रकृति (Nature)
3. सामाजिक सांस्कृतिक संस्थान
(Socio-cultural Institutes)।

■ मानव

पर्यावरण अध्ययन में मानव सम्बन्धों का अध्ययन चार बिन्दुओं पर आधारित किया जाता है—

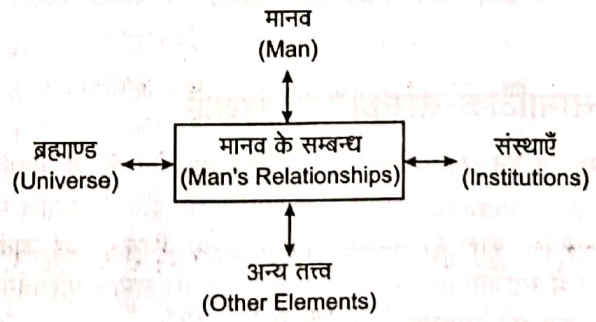

- मानव का दूसरे मानव से सम्बन्ध।
- मानव का विभिन्न संस्थाओं से सम्बन्ध।
- मानव का ब्रह्माण्ड से सम्बन्ध।
- मानव का अन्य तत्त्वों से सम्बन्ध।

For Best PDF, Search on Google - "Nitin Gupta PDF"
Scanned by CamScanner

■ प्रकृति

प्रकृति में भूमि, जल, वायु, खनिज, वन, वन्यजीव आदि सभी आ जाते हैं। मानव इन प्राकृतिक तत्त्वों से प्रभावित होता है एवं इन्हें प्रभावित करता है। इसे मानव का भौतिक वातावरण कहा जाता है।

■ प्राकृतिक संसाधनों के वर्गीकरण

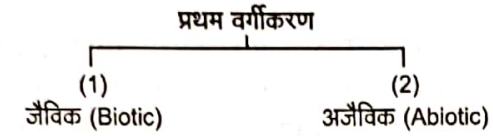

जैविक संसाधनों में वे सभी संसाधन सम्मिलित हैं, जिनमें जीवन होता है। जैसे पेड़-पौधे, वनस्पति, पशु-पक्षी, जीवाश्म (Microbes), मछली तथा अन्य जलीय जीव।

अजैविक संसाधनों में भूमि, जल, वायु, ऊर्जा, प्रकाश तथा खनिज पदार्थ आते हैं।

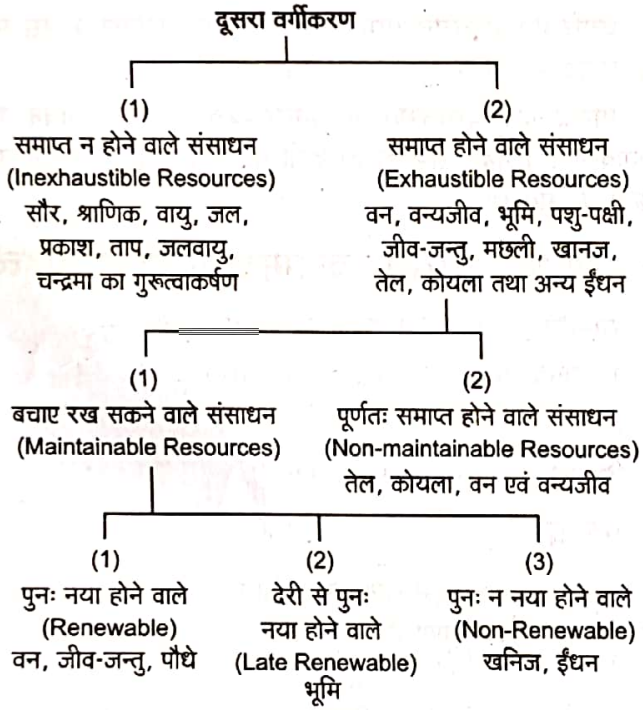

■ सामाजिक-सांस्कृतिक संस्थाएँ

समाज उन व्यक्तियों (मानवों) का समूह होता है जो अन्तर्क्रिया द्वारा (Interaction) द्वारा में आपस सम्बन्धित होते हैं। समाज मानव सम्बन्धों का जाल है। समाज में समानता तथा भिन्नता पाई जाती है। समाज में सहयोग तथा संघर्ष दोनों पाए जाते हैं। समाज परिवर्तनशील है। समाज की व्यवस्था जटिल होती है।

समाज में अनेक प्रकार की संस्थाएँ होती हैं, जो इस प्रकार हैं—

परिवार

परिवार का हमारे जीवन में एक महत्त्वपूर्ण स्थान है। प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी परिवार का सदस्य होता है। बच्चे का जन्म, उसका पालन-पोषण, खान-पान आदि सभी कार्य परिवार में होते हैं। प्रत्येक व्यक्ति का समाजीकरण भी परिवार द्वारा होता है।

परिवार सामाजिक संगठन की एक मौलिक इकाई है।

परिवार के प्रकार

1. एकाकी परिवार (Nuclear Family)
2. संयुक्त परिवार (Joint Family)

एकाकी परिवार (Nuclear Family)—एकाकी परिवार ऐसा समूह है जिसमें पति, पत्नी और उनके अविवाहित बच्चे होते हैं।

संयुक्त परिवार (Joint Family)—संयुक्त परिवार एक से अधिक एकाकी परिवारों से मिलकर बनता है। सभी सदस्य साधारणतया एक ही आवास में रहते हैं। भोजन तथा सम्पत्ति में साझेदार होते हैं। आजकल संयुक्त परिवार प्रणाली का विघटन होता जा रहा है।

सामाजिक संस्था

सामाजिक संस्था समाज का वह अंग है, जिसके माध्यम से समाज के कार्यों को क्रियान्वित किया जाता है। मानव की आधारभूत आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए संगठन तथा स्थापित प्रणालियाँ सामाजिक संस्थाएँ कहलाती हैं। सामाजिक संस्था का मुख्य कार्य सामाजिक व्यवहार पर नियन्त्रण रखना है। क्योंकि समाज में अनेक प्रकार की संस्थाएँ होती है, जैसे-परिवार, नातेदारी, जाति, राज्य, धर्म, स्कूल आदि। ये संस्थाएँ औपचारिक एवं अनौपचारिक दोनों ही तरीकों से सामाजिक नियन्त्रण को स्थापित करती हैं।

सांस्कृतिक संस्थाएँ

सांस्कृतिक संस्था समाज का वह अंग है, जिसके माध्यम से समाज का रीति-रिवाज व रहन-सहन निर्धारित होता है। इनका कार्य सांस्कृतिक मूल्यों को बढ़ाना होता है।

सांस्कृतिक संस्थाओं के उदाहरण निम्न प्रकार हैं—

- साहित्य परिषद्
- विरिष्ठ नागरिक कल्ब
- राष्ट्रीय संस्कृति अकादमी
- सिन्धी अकादमी
- राष्ट्रीय संगीत व नृत्य अकादमी
- उर्दू अकादमी
- पंजाबी अकादमी
- भारतीय नाटक मंच

पर्यावरण की समस्याएँ

पर्यावरण सम्बन्धी मुख्य सरोकार तथा समस्याएँ निम्न प्रकार है—

1. प्रदूषण नियन्त्रण (Pollution Control)
2. वन्य जीवन परिरक्षण (Preservation of Wild Life)
3. समायोजन (Balance in Ecology)
4. संसाधनों का संरक्षण (Conservation of Resources)

For Best PDF, Search on Google - "Nitin Gupta PDF"
Scanned by CamScanner

प्रसिद्ध वैज्ञानिक आइनस्टीन (Einstein) ने कहा था है, कि "दो चीजें असीमित हैं—एक ब्रह्माण्ड तथा दूसरी मानव की मूर्खता।" मानव ने अपनी लापरवाही के कारण अनेक समस्याएँ उत्पन्न की हैं, *परन्तु इनमें चार मुख्य सरोकार इस प्रकार हैं*—

1. प्रदूषण, 2. निर्धनता, 3. अशिक्षा, 4. जनसंख्या वृद्धि

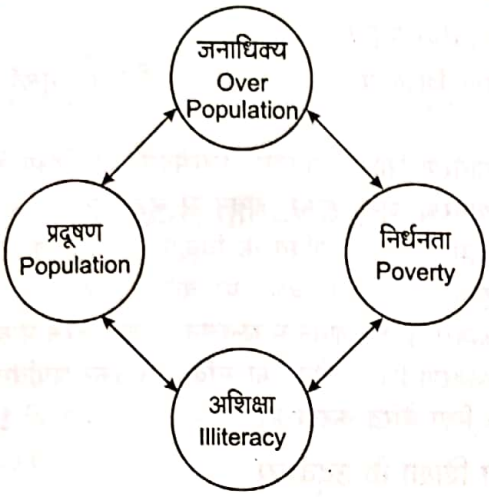

■ पर्यावरण समस्याओं/सरोकारों का वर्गीकरण

पर्यावरण सरोकारों को हम दो भागों में विभाजित कर सकते हैं

1. प्राकृतिक पर्यावरण समस्या अथवा सरोकार (Nature Made or Natural Environmental Concerns or Hazards)
2. मानवकृत पर्यावरण सरोकार (Man-Made Environmental Concerns)

पारिस्थितिकी

पारिस्थितिकी का अर्थ

पारिस्थतिकी अंग्रेजी भाषा के Ecology शब्द का हिन्दी पर्याय है। इकोलॉजी शब्द लैटिन के मूल शब्द Oikos तथा Logos से बना है। इन शब्दों का अर्थ क्रमशः घर और ज्ञान है। इस प्रकार इकोलॉजी का शाब्दिक अर्थ जीवों के गृह जीवन के ज्ञान से है।

पारिस्थितिकी की कुछ महत्त्वपूर्ण परिभाषाएँ जो पारिस्थितिकी के विभिन्न पक्षों पर प्रकाश डालती हैं, इस प्रकार हैं—

1. **चार्ल्स एच. साउथविक** के अनुसार, "पारिस्थितिकी जीवधारियों के आपस में उनके पर्यावरण के सम्बन्धों का वैज्ञानिक अध्ययन है।"
2. **टेलर के** अनुसार, "पारिस्थितिकी समस्त जीवों के समस्त पर्यावरणों के साथ सम्बन्धों का अध्ययन है।"
3. **साउथ ब्रिडे** के अनुसार, "पारिस्थितिकी एक वैज्ञानिक अध्ययन है, जो जीव प्राणियों के साथ सम्बन्धों का अध्ययन करता है।"

पारिस्थितिकी के घटक

	जैविक		अजैविक
1.	उत्पादक	1.	जलवायुकारक
(i)	हरित पादप	(i)	प्रकाश
(ii)	प्रकाश-संश्लेषण जीवाणु	(ii)	तापमान
(iii)	रसायन-संश्लेषण जीवाणु	(iii)	वर्षण वायु तथा वायुमण्डल
2.	उपभोक्ता	2.	भौमिक कारक
(i)	शाकाहारी	(i)	पोषक तत्त्व
(ii)	मांसाहारी	(ii)	अम्लीयता
(iii)	उभयहारी	(iii)	नमी
(iv)	मृतोपजीवी		
3.	अपघटक	3.	भौम्याकृति
(i)	जीवाणु.	(i)	भू-रूपाकृति
(ii)	कवक	(ii)	ढलान
		(iii)	उन्नततांश (ऊँचाई)

उत्पादक, उपभोक्ता तथा अपघटक

1. उत्पादक वे जीव हैं जोकि कार्बोहाइड्रेट के रूप में भोजन निर्माण करते हैं। जो पौधे प्रमुख उत्पादक होते हैं।

2. उपभोक्ता वे प्राणी हैं जो अपना भोजन स्वयं नहीं बनाते हैं, परन्तु वे पौधों और प्राणियों को ग्रहध्स का अपना जीवन निर्वाह करते हैं।

3. अपघटक वे सूक्ष्म जीव कहलाते हैं जो अपना जीवन निर्वाह के लिए अणुओं को तोड़कर सरल अकार्बनिक पदार्थों में बदल देते हैं जिसे उत्पादकों द्वारा दोबारा उपयोग किया जाता है।

पारिस्थितिकी शाखाएँ

1. जनसंख्या पारिस्थितिकी (Population Ecology)
2. मानव पारिस्थितिकी (Human Ecology)
3. व्यावहारिक पारिस्थितिकी (Applied Ecology)
4. समुदाय पारिस्थितिकी (Community Ecology)
5. आवासीय पारिस्थितिकी (Habitat Ecology)
6. भौगोलिक पारिस्थितिकी (Geographical Ecology)
7. उत्पादन पारिस्थितिकी (Production Ecology)
8. सौर-ऊर्जा पारिस्थितिकी (Radiation Ecology)
9. समाजशास्त्र पारिस्थितिकी (Sociology)
10. प्रणाली पारिस्थितिकी (System Ecology)
11. चरित्रशास्त्र (Ethology)

For Best PDF, Search on Google - "Nitin Gupta PDF"
Scanned by CamScanner

परितन्त्र का प्रत्यय

सर्वप्रथम 1935 में ए.जी. टैनसले (A.G. Tansley) ने परितन्त्र (Ecosystem) शब्द का प्रयोग किया था। टैनसले तथा एफ.आर फोसबर्ग (F.R. Fosberg) के अनुसार, "पारितन्त्र एक क्रियाशील अन्त:क्रिया है, जो जीवधारियों तथा उनके प्रभावशाली पर्यावरण के मध्य भौतिक तथा जैविक वातावरण के साथ होती है।"

परितन्त्र के प्रकार
(Type of Ecosystem)

(1)	(2)	(3)
प्राकृतिक परितन्त्र (Natural Ecosystem)	बनावटी या मानवकृत (Artificial of Man-Made Ecosystem)	अन्तरिक्ष परितन्त्र (Space Ecosystem)

पारिस्थितिकी संकट के कारण

पारिस्थितिकी संकट के मुख्य छः कारण हैं—

1. तीव्र औद्योगिक विकास
2. जनसंख्या विस्फोट
3. अनियोजित विकास
4. अन्धाधुन्ध खनन
5. आधुनिक प्रौद्योगिकी
6. आधुनिक यातायात के साधन।

■ पर्यावरण शिक्षा

पर्यावरण शिक्षा का अर्थ

पर्यावरण शिक्षा एक नई अवधारणा है। अत: इसकी अलग-अलग परिभाषाएँ दी जा रही हैं। *कुछ प्रसिद्ध परिभाषाएँ निम्नलिखित हैं—*

1. यूनस्को के लिए फिनिश (Finish National Commission for UNESCO) के अनुसार, "पर्यावरण शिक्षा, पर्यावरण सुरक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त करने का साधन है। पर्यावरण शिक्षा किसी विज्ञान अथवा विषय के अध्ययन की पृथक् शाखा नहीं है। इसे जीवनपर्यन्त सम्पूर्ण शिक्षा के अन्तर्गत लिया जाना चाहिए।"

2. जर्मनी के आर. ई. लौब (R.E. Lob) के के अनुसार, "पर्यावरण शिक्षा औद्योगिक संस्थानों से जीवन बचाने के संकट से बचने की शिक्षा है और पर्यावरण की सुरक्षा के लिए लोगों के ज्ञान और व्यवहार में जीवनपर्यन्त परिवर्तन लाने की ओर उद्देशित है।"

3. यूनेस्को के पर्यावरण सेमिनार जो जर्मनी में वर्ष 1976 में हुआ था के अनुसार, "पर्यावरण शिक्षा ऐसी प्रक्रिया है जिससे पर्यावरण संरक्षण के लक्ष्यों को प्राप्त किया जाए। यह विज्ञान तथा अध्ययन क्षेत्र की पृथक् शाखा नहीं है, अपितु जीवनपर्यन्त चलने वाली शिक्षा की प्रक्रिया है।"

■ पर्यावरणीय शिक्षा की आवश्यकता

प्रसिद्ध वैज्ञानिक तथा विचारक आइंस्टाइन ने कहा था, "दो चीजें असीमित हैं 'एक ब्रह्माण्ड' तथा दूसरी 'मानव की मूर्खता'। मानव ने अपनी मूर्खता के कारण अनेक समस्याएँ उत्पन्न कर ली हैं। इनमें चार प्रमुख समस्याएँ हैं— (i) जनसंख्या वृद्धि, (ii) निरक्षरता, (iii) दरिद्रता, (iv) प्रदूषण।

पर्यावरण शिक्षा प्रदान करने के निम्नलिखित मुख्य आवश्यक कारक हैं—

1. पर्यावरण शिक्षा व्यक्तिगत जिम्मेदारी की शिक्षा देती है।
2. पर्यावरण शिक्षा हमारे जीवन से जुड़ी है।
3. पर्यावरण शिक्षा व्यक्ति के विकास में सहायक है।
4. पर्यावरण शिक्षा स्वच्छता पर बल देती है।
5. पर्यावरण शिक्षा जीवन में सन्तुलन स्थापित करने में सहायक है।
6. पर्यावरण शिक्षा लोगों को सक्रिय बनाकर पर्यावरण सुधारने के लिए प्रेरित करती है।

पर्यावरण शिक्षा के उद्देश्य

संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण शिक्षा कार्यक्रम के द्वारा वर्ष 1975 में बेलग्रेड (यूगोस्लाविया) में आयोजित 'अन्तर्राष्ट्रीय पर्यावरण शिक्षा कार्य गोष्ठी' ने 'बेलग्रेड घोषणापत्र' निकाला। *इसके अनुसार पर्यावरण शिक्षा के निम्नलिखित उद्देश्य बताए गए हैं—*

1. **सहभागिता**—व्यक्तियों तथा सामाजिक समूहों को पर्यावरण सम्बन्धी समस्याओं का हल करने में सहभागी बनाना।
2. **कुशलताएँ**—व्यक्तियों तथा सामाजिक समूहों में पर्यावरणीय समस्याओं को दूर कर सकने की कुशलताओं का निर्माण करना।
3. **मूल्यांकन**—व्यक्तियों तथा सामाजिक समूहों को पर्यावरणीय उपायों तथा शिक्षा कार्यक्रमों का पारिस्थितिक, राजनीतिक, सामाजिक, सौंदर्यबोध तथा शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में मूल्यांकन कर सकने की योग्यता का विकास करना।
4. **ज्ञान**—व्यक्तियों तथा सामाजिक समूहों को सम्पूर्ण पर्यावरण तथा उससे जुड़ी समस्याओं को आधारभूत समझकर विकास करना।
5. **जागृति**—व्यक्तियों तथा सामाजिक समूहों को सम्पूर्ण पर्यावरण तथा उससे जुड़ी समस्याओं के प्रति जागरूकता पैदा करना।

■ राष्ट्रीय पाठ्यचर्या के सन्दर्भ में पर्यावरण अध्ययन

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा वर्ष 2005 ने राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2000 की तरह ही विज्ञान व सामाजिक विज्ञान को 'पर्यावरण अध्ययन' में सभी प्राथमिक कक्षाओं में समाहित करने का सुझाव दिया है *इस पाठ्यचर्या की रूपरेखा के अनुसार, प्राथमिक स्तर पर पर्यावरण अध्ययन के उद्देश्य निम्न प्रकार हैं—*

For Best PDF, Search on Google - "Nitin Gupta PDF"
Scanned by CamScanner

- प्राकृतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक वातावरण के मध्य सम्बन्ध स्थापित करना।
- बच्चों में चारों ओर की दुनिया (प्राकृतिक व सामाजिक) के प्रति जिज्ञासा उत्पन्न करना।
- बच्चों को ऐसी गतिविधियों में व्यस्त रखना ताकि वह सूक्ष्म अवलोकन, चित्रों, आरेखों, वर्गीकरण व स्वयं करने वाली गतिविधियों इत्यादि से मूल ज्ञानात्मक कौशल हासिल कर सके।
- डिजाइन व निर्माण, अनुमान व मापन पर जोर देना ताकि वह बाद के स्तरों पर तकनीकी एवं संख्यात्मक कौशल प्राप्त कर सके।

■ पर्यावरण अध्ययन की पाठ्यपुस्तक 'आसपास' शृंखला

पर्यावरण शिक्षण की वर्तमान पाठ्यपुस्तकें राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा वर्ष 2005 के सुझावों पर आधारित हैं और इस उद्देश्य से लिखी गई हैं कि बच्चे बिना किसी ज्ञानात्मक बोझ के तनाव वातावरण में सीख सके।

इस पाठ्यपुस्तकों की कुछ उल्लेखनीय विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

- पाठ्यपुस्तकों की विषयवस्तु बालकेन्द्रित हैं।
- रंगबिरंगे चित्रों से सजी ये पुस्तकें बच्चों को स्वयं पढ़ने के लिए आकर्षित करती हैं।
- विषयवस्तु में प्राकृतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक पक्ष को समग्र रूप से प्रस्तुत किया गया।
- स्वयं करके सीखने और खोज विधि को महत्त्व दिया गया है।
- पुस्तकीय ज्ञान को बाहरी वातावरण से जोड़ने पर विशेष बल दिया गया है।
- बहु-सांस्कृतिक स्वरूप जैसे-लिंग, वर्ग, संस्कृति, धर्म, भाषा और क्षेत्रीयता को समान से समाहित किया गया है।
- पाठ्यपुस्तकों में बच्चों को पर्यावरण और उसके संरक्षण तथा सामाजिक मुद्दों के संवेदनशील बानाने पर बल दिया गया है।
- पुस्तकों में पाठ्यवस्तु और उस पर आधारित क्रियाकलापों को स्थानीय वातावरण के अनुसार परिवर्तित करने का प्रावधान है।
- पाठ्यपुस्तकों में विभिन्न प्रकार के क्रियाकलाप; जैसे अवलोकन, खोज, वर्गीकरण, प्रयोग, कार्टून बनाना, अन्तर ढूँढना, बातचीत करना आदि दिए गए हैं। ताकि बच्चों को सीखने में रुचि बनी रहे।

■ पर्यावरण अध्ययन शिक्षा की ओर अभिमुखता

वर्तमान में विज्ञान की शिक्षा सभी विकासशील देशों का प्रमुख चिन्तन विषय बनी हुई है। इसके परिणामस्वरूप प्रसार के साथ ही गुणात्मक सुधार को उच्च प्राथमिकता प्रदान की गई है। विकासशील देशों में उभरने वाली विज्ञान की अभिमुख दशाओं का उल्लेख निम्नवत किया जाता है—

1. वैचारिक शिक्षा पर जोर (Emphasis of Conceptual Learning)—तथ्यों के एक समग्र रूप में पर्यावरण की पढ़ाई का परम्परागत अभिगम अभी तक प्रचलित है, लेकिन कुछ देशों में पर्यावरण की वैचारिक समझ की ओर विशेष बल दिया जा रहा है।

2. अन्तः अनुशासित उपागम (Interdisciplinary Approach)—साठ के दशक में एकल अनुशासनात्मक अभिप्राय या संयुक्त राज्य अमेरिका में बहुत से कार्यक्रम और पाठ्यक्रम विकसित हुए है। उदाहरणार्थ—BSCS, PSSC, भौतिकी, रसायन, ESCP आदि। इन कार्यक्रमों में प्रयोगशाला निर्देश और पर्यावरण की अवधारणाओं एवं प्रक्रियाओं की गुणवत्ता सुधारने के लिए बहुत सारे प्रयास किए।

वैज्ञानिकों, सामाजिक विज्ञानियों तथा अध्यापकों को प्रशिक्षण देने वालों को अधिगमो, प्रविष्टियों तथा सम्पूर्ण अभगम के लिए आवश्यक सामग्री के नियोजन और कार्यान्वयन में अन्तर्क्रिया करने का अवसर दिया जाना आवश्यक है।

3. वैयक्तिक या छात्र-केन्द्रित शिक्षण (Individualized or Pupil Centered Teaching)—पर्यावरण में व्यक्तिपरक, निर्देश का व्यापक समर्थन किया जाता है। यह श्रव्य-शिक्षण निर्देश, स्लाइड, फिल्म, फिल्म-लूप या वीडियो टेप के उपयोग को सम्मिलित करता है।

4. पर्यावरण शिक्षा के राज्य संस्थानों की स्थापना (Establishment of State Institute of EVS Education)—बहुत से देशों में पर्यावरण शिक्षा के पृथक् संस्थानों की स्थापना की जा रही है। यह संस्थान विज्ञान में पाठ्यक्रम विकास के लिए उत्तरदायी हैं।

5. सामाजिक सरोकारों का उन्मूलन (Social Issues Oriented)—विज्ञान पढ़ाने का कुछ विकसित देशों में एक बढ़ता हुआ रुझान, इसके सामाजिक लक्ष्यों पर बल देने से है। इसके बहुत से कारण हैं। अति जनसंख्या, प्रदूषण, मानसिक स्वास्थ्य, जीनों (Genetic) वास्तुकारी, सीखने की प्रक्रिया, तन्त्रिका विज्ञान जैसी मूल वैज्ञानिक अवधारणाओं को समझे बिना इन समस्याओं को विद्यार्थी नहीं समझ सकते हैं।

बच्चों की आवश्यकताएँ तथा रुचियाँ और समाज की समस्याएँ समय-समय पर परिवर्तित होने से पाठ्यक्रम विकास की प्रक्रिया को निरन्तर विकसित करने की आवश्यकता है।

शिक्षण-अधिगम नियोजन प्रक्रिया

■ सूक्ष्म पाठ-योजना

शिक्षण एक जटिल प्रक्रिया है। शिक्षण अन्तर्गत अनेक कौशल समाहित होते हैं। शिक्षण में प्रमुख रूप से प्रश्नोत्तर, पुनर्बलन सहायक सामग्री प्रयोग, सम्प्रेषण प्रविधियों, व्याख्या आदि सम्मिलित की जाती हैं। शिक्षण कौशल अर्जित करने की विधि है, जिसमें शिक्षण नियन्त्रित अभ्यास के माध्यम से, नियन्त्रित परिवेश में विशिष्ट शिक्षण व्यवहार पर ध्यान केन्द्रित कर विभिन्न शिक्षण कौशलों में कुशलता प्राप्त करता है।

For Best PDF, Search on Google - "Nitin Gupta PDF"
Scanned by CamScanner

सूक्ष्म शिक्षण के प्रत्यय को सर्वप्रथम स्टेनफोर्ड विश्वविद्यालय, अमेरिका के एलेन, रायन बाइट एवं केविन (1959) ने विकसित किया। इसका मुख्य प्रयोग शिक्षक प्रशिक्षण के क्षेत्र में किया गया।

सूक्ष्म योजना, अर्थ एवं परिभाषाएँ

बी. के. पासी के अनुसार, "सूक्ष्म शिक्षण एक प्रशिक्षण प्रविधि है, जिसमें विद्यार्थी आध्यापकों को एक छोटी अवधि में, थोड़े विद्यार्थियों को किसी एक विशिष्ट शिक्षण कौशल का प्रयोग कर, एक प्रत्यय का शिक्षण करना होता है।"

"*क्लिफ्ट के अनुसार*" सूक्ष्म एक शिक्षण प्रशिक्षण प्रक्रिया है, जिसमें शिक्षण कौशल, शिक्षण समय एवं कक्षा आकार को सीमित करके शिक्षण परिस्थिति को सरल व अधिक नियन्त्रित कर दिया जाता है।"

अत: सूक्ष्म योजना तीन आधारों पर आधारित होती है—

1. शिक्षक के व्यवहार का अवलोकन सम्भव है।
2. शिक्षक के व्यवहार को मात्रात्मक रूप देना सम्भव है।
3. शिक्षक के व्यवहार में परिवर्तन लाना सम्भव है।

सूक्ष्म पाठ योजना के स्तर

किलफ्ट व अन्य (1976) (Clift and Others) के अनुसार सूक्ष्म पाठ योजना तीन स्तरों में विभाजित किया जाता है—

1. स्थानान्तर स्तर
2. ज्ञानार्जन स्तर
3. कौशल अर्जन स्तर

1. स्थानान्तरण स्तर—इसको पुनर्बलन के रूप में देखा जा सकता है। इस स्तर पर प्रशिक्षणार्थी को उस समय तक पृष्ठपोषण (Feed-back) दिया जाता है, जब तक कि वह अपेक्षित कौशल में वांछित स्तर तक कुशलता अर्जित नहीं कर लेता।

2. ज्ञानार्जन स्तर—इस स्तर में प्रशिक्षणार्थी, प्रशिक्षक द्वारा प्रस्तुत आदर्श शिक्षण का अवलोकन करता है।

3. कौशल अर्जन स्तर—प्रशिक्षणार्थी, शिक्षण कौशल का अभ्यास, सीमित समय और सीमित विद्यार्थी संख्या की कक्षा में करता है।

सूक्ष्म शिक्षण की प्रक्रिया एवं सोपान

सूक्ष्म शिक्षण की प्रक्रिया को क्लिफ्ट एवं उनके सहयोगियों ने वर्ष 1976 में उद्घाटित करते हुए यह स्पष्ट किया कि सूक्ष्म शिक्षण की प्रक्रिया तीन ध्रुवों अथवा अवस्थाओं पर अवलम्बित होती है। इसके अन्तर्गत शिक्षण की तीनों अवस्थाएँ-शिक्षण पूर्व क्रिया अवस्था, शिक्षण मध्य क्रिया अवस्था एवं शिक्षण पश्चात् क्रिया अवस्था सम्मिलित होती है।

सूक्ष्म शिक्षण प्रक्रिया सामान्यत: निम्न सोपानों में की जाती है—

अभिनवीकरण—इस सोपान में सूक्ष्म शिक्षण प्रक्रिया के सैद्धान्तिक पक्ष, को लेकर उसके लाभ व सीमाओं की व्याख्या की जाती है।

शिक्षण कौशल पर चिन्तन—इस सोपान में शिक्षण कौशल के प्रत्यय को स्पष्ट किया जाता है। कुछ शिक्षण कौशलों का अभ्यास व प्रशिक्षण हेतु चयन किया जाता है। तत्पश्चात् किसी एक कौशल के अभ्यास हेतु चयन कर लिया जाता है।

आदर्श पाठ की प्रस्तुति—इस सोपान में प्रशिक्षक शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के सम्मुख चयनित कौशल का किसी विषय में प्रयोग करते हुए आदर्श पाठ प्रस्तुत करता है।

सूक्ष्म शिक्षण पाठ योजना का निर्माण—इस सोपान में प्रशिक्षणार्थी एक एकांश का चयन सूक्ष्म शिक्षण हेतु करता है एवं उसके लिए पाठ योजना का निर्माण करता है।

सूक्ष्म शिक्षण पाठ की प्रस्तुति—इस सोपान में प्रशिक्षणार्थी निर्मित सूक्ष्म शिक्षण पाठ योजना के आधार पर शिक्षण करता है। शिक्षण की अवधि पाँच-छ: मिनट की होती है और इसे विद्यार्थियों के छोटे समूह लगभग (लगभग 10-12 विद्यार्थी) को पढ़ाया जाता है। प्रशिक्षक पृष्ठपोषण देने हेतु अवलोकन करता है। इसके लिए वीडियो टेपिंग का सहारा भी लिया जा सकता है।

इकाई योजना के मुख्य पद—प्रो. हेनरी सी. मोरिसन ने इकाई अवधारणा को प्रतिपादित किया है, इन्होंने इकाई योजना के पाँच चरण बताए हैं, *जो इस प्रकार हैं—*

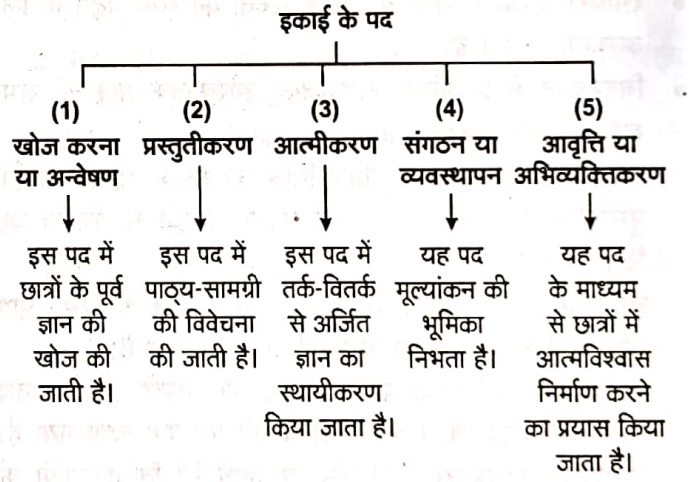
इकाई के पद
(1) खोज करना या अन्वेषण
इस पद में छात्रों के पूर्व ज्ञान की खोज की जाती है।
(2) प्रस्तुतीकरण
इस पद में पाठ्य-सामग्री की विवेचना की जाती है।
(3) आत्मीकरण
इस पद में तर्क-वितर्क से अर्जित ज्ञान का स्थायीकरण किया जाता है।
(4) संगठन या व्यवस्थापन
यह पद मूल्यांकन की भूमिका निभता है।
(5) आवृत्ति या अभिव्यक्तिकरण
यह पद के माध्यम से छात्रों में आत्मविश्वास निर्माण करने का प्रयास किया जाता है।

पर्यावरण अध्ययन में इकाइयों का निर्माण

पाठ्यवस्तु को उचित इकाइयों में विभक्त करने में निम्न बातों पर ध्यान दिया जाना चाहिए—

1. निर्धारित पाठ्यक्रम में जिस प्रकार का प्रकरणयुक्त विभक्तीकरण किया गया है उसी के अनुरूप विभिन्न प्रकरणो (Topics) को विभिन्न इकाइयाँ मानी जानी चाहिए।

2. एक प्रकार के विभिन्न प्रकरणों को जो विषयवस्तु तथा अधिगम उद्देश्यों के दृष्टिकोण से समान प्रतीत हों, उन्हें मिलाकर इकाइयों का निर्माण किया जा सकता है। उदाहरण के लिए जनसंख्या, खनिज संसाधन तथा सागर सम्पदा आदि। इन सभी को मिलाकर एक इकाई 'प्राकृतिक संसाधन' बनाई जा सकती है।

For Best PDF, Search on Google - "Nitin Gupta PDF"
Scanned by CamScanner

इकाई योजना की मुख्य बातें

इकाई योजना की मुख्य बातें निम्न प्रकार हैं—

1. इसमें अनुदेशन के उद्देश्यों की स्पष्टता को महत्त्वपूर्ण माना गया है।
2. प्रत्येक इकाई अर्थपूर्ण होती है।
3. विषय-वस्तु को छोटी-छोटी परन्तु अर्थपूर्ण इकाइयों में बाँट-बाँट कर पढ़ाना।
4. इस अनुदेशन में एक बात का विशेष ध्यान रखा जाता है कि प्रत्येक इकाई पूर्व पढ़ाई गई इकाई पर आधारित होती है या इससे सम्बन्धित होती है।

इकाई योजना

पाठ्यक्रम, पाठ्यवस्तु, विषय क्षेत्र, प्रयोगात्मक कलाओं एवं विज्ञानों का प्रमुख उपविभाजिन इकाई कहलाता है। शिकागो विश्वविद्यालय के शिक्षाशास्त्री एच. सी. मौरीसन (H.C. Morrison's) द्वारा इसका प्रतिपादन किया गया था, इसलिए इसे मौरीसन उपागम के नाम से भी जाना जाता है। मौरीसन के कथनानुसार, "किसी भी व्यक्तित्व, विज्ञान, कला अथवा आचरण शास्त्र का वह व्यापक तथा महत्त्वपूर्ण पक्ष जिसका अध्ययन व्यक्ति के मार्गदर्शन में सहायक होता है, अध्ययन इकाई कहलाता है।"

इकाई योजना की विशेषताएँ–

इकाई योजना की विशेषताएँ निम्न प्रकार हैं—

1. इकाई महत्त्वपूर्ण एवं स्वयं में पूर्ण हो होनी चाहिए।
2. इकाई विद्यार्थियों की समक्ष, सूझ-बूझ में वृद्धि करने वाली हो/साथ ही विद्यार्थियों में परस्पर सहायोग की सम्भावनाओं में वृद्धि करती हो।
3. इकाई विद्यार्थियों को विभिन्न प्रकार के अनुभव प्रदान करने वाली हो।
4. इकाई में पुस्तक तथा सहायक सामग्री का उपयुक्त प्रकार से प्रयोग किया जा सकता हो।
5. इकाई सामाजिक गतिशीलता पर वृद्धि एवं बल देती हो। इकाई योजना में मूल्यान्कन निहित होना चाहिए।

इकाई योजना की सीमाएँ

इकाई योजना की सीमाएँ निम्न प्रकार हैं—

1. इकाई योजना का अपूर्ण ज्ञान एवं कुछ मूलभूत तथ्यों का न सीख पाना।
2. माता-पिता तथा दर्शकों का असहानुभूति पूर्ण दृष्टिकोण
3. प्रशिक्षण एवं साधनों का अभाव
4. अध्यापकों की उदासीनता और पुस्तकालयों तथा प्रयोगशालाओं में सुविधाओं का अभाव।

■ पाठ योजना

पाठ योजना का अर्थ—साधारण शब्दों में पाठ योजना का अर्थ योजना से है जो अध्यापक कक्षा में शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया से पूर्ण पाठ के विभिन्न पक्षों के विषय में सोच कर तैयार करता है।

'पाठ योजना' शिक्षण-कार्य आरम्भ करने से पहले शिक्षण-कार्यक्रम को व्यक्त किया जाता है। यह कार्यक्रम बनाते समय शिक्षक को शिक्षा के व्यापक उद्देश्य, पाठ्य-विषय के लक्ष्य, विद्यार्थियों की रुचियों को सम्मुख रखकर अनुकूल शिक्षण-साधनों तथा शिक्षण-विधियों को निश्चित एवं व्यवस्थित करना होता है।

पाठ योजना के विभिन्न प्रकार

पाठ योजना के प्रकार निम्न हैं—

1. रसानुभूति पाठ (Appreciation Lesson)
2. कौशल पाठ (Skill Lesson)
3. ज्ञान पाठ (Knowledge Lesson)

पाठ योजना का महत्त्व

पाठ योजना प्रभावशाली शिक्षण-अधिगम की आधारशिला है। इसके लाभ निम्न प्रकार हैं—

1. पाठ योजना अध्यान-अधिगम को क्रमबद्ध बनाते हुए उसके उद्देश्यों में स्पष्टता लाती है।
2. अध्यापक को पाठ्य-वस्तु की प्रकृति के अनुसार शिक्षण विधि का चुनाव करने में सहायता मिलती है।
3. कक्षा में विद्यार्थियों की व्यक्तिगत विभिन्नताओं को ध्यान में रख कर अध्यापक कक्षा में क्रियाओं की व्यवस्था करने में सक्षम होता है।
4. पाठ योजना शिक्षण तथा अधिगम से सह-सम्बन्ध स्थापित करती है।
5. पाठ योजना में शामिल-अधिगम सामग्री का चुनाव करने में पाठ योजना उपयुक्त अवसर शिक्षक को प्रदान करती है।
6. कक्षा-कक्ष में आने वाली परिस्थितियों के बारे में अनुमान लगाने में सहायता मिलती है।
7. पाठ योजना पाठ्य सामग्री की उचित ढंग से व्याख्या करने में सहायक है।
8. अध्यापक को सोचने का अवसर मिलता है कि किस प्रकार से विद्यार्थियों से प्रश्न किए जा सकते हैं।
9. पाठ योजना अध्यापक तथा विद्यार्थी दोनों के समय व शक्ति की बचत करने में सहायक होती है।
10. पाठ योजना अध्यापक क्को उचित दृश्य-श्रव्य सामग्री के प्रयोग के लिए प्रेरित करती है।

अन्त में कहा जा सकता है कि पाठ योजना का सम्बन्ध किसी भी विषय के या उपविषय के शिक्षण से सम्बन्धित योजना से है, जो निश्चित शिक्षण लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए, अध्यापक द्वारा कक्षा में सम्पन्न की जाने वाली क्रियाओं के बारे में एक निश्चित एवं व्यवस्थित रूपरेखा प्रदान करती है।

एक आदर्श पाठ योजना की विशेषताएँ

आदर्श पाठ योजना की विशेषताएँ निम्न प्रकार हैं—

1. पाठ योजना निश्चित उद्देश्यों पर आधारित होती है।

For Best PDF, Search on Google - "Nitin Gupta PDF"
Scanned by CamScanner

2. पाठ योजना में प्रकरण को छोटे-छोटे भागों अथवा सोपानों में विभक्त किया जाता है।
3. पाठ योजना में उपयुक्त प्रश्नों का विवरण रहता है।
4. इसके द्वारा उपयुक्त सहायक सामग्री के सम्बन्ध में निर्णय लिया जाता है।
5. इसमें पूर्व ज्ञान पर आधारित रहती है।
6. पाठ योजना में सरल भाषा का प्रयोग किया जाता है।
7. पाठ योजना उचित विद्यार्थी क्रियाओं का प्रावधान करती है।
8. पाठ योजना में विभिन्न प्रकार के प्रश्नों का समावेश होता है।
9. पाठ योजना स्मृति स्तर से चिन्तन स्तर तक विद्यार्थियों को पहुँचाती हैं
10. पाठ योजना विद्यार्थी सहभागिता का अवसर प्रदान करती है।
11. पाठ योजना गृह कार्य का प्रावधान करती है।
12. पाठ योजना मूल्यांकन की व्यवस्था करती है।

पाठ योजना निर्माण के विविध उपागम

1. हरबर्ट की पंचपद प्रणाली (Herbartian Five-Step Approach)
2. मॉरिसन अथवा इकाई उपागम (Morrison's or Unit Approach)

पाठ योजना निर्माण के विभिन्न उपागम

1. हरबर्ट की पंचपद प्रणाली (Herbartian Five-Step Approach)
2. मॉरिसन अथवा इकाई उपागम (Morrison's or Unit Approach)

पाठ योजना निर्माण के विभिन्न उपागम

1. हरबर्ट की पंचपद प्रणाली (Herbartion Five-step Approach)
2. मॉरिसन अथवा इकाई उपागम (Morrison's or Unit Approach)

■ ज्ञानात्मक पाठ : हरबर्ट जे.एफ. की पंचपद प्रणाली

ज्ञानात्मक पाठ का उद्देश्य विद्यार्थियों को किसी विषय के नए तथ्यों से अवगत कराना है। यह कार्य व्यस्थित और सुनियोजित ढंग से होना चाहिए, जिससे विद्यार्थियों को ज्ञान ग्रहण करने में सुविधा रहे। पाठ की योजना बनाने में हरबर्ट महोदय ने पहल की। इस योजना बनाने के लिए पहले निम्न चार भग या पद निर्धारित किए—

1. **स्पष्टता** (Clarity)—पाठ के तथ्यों को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करना ताकि विद्यार्थी आसानी से सीखा लें।
2. **सम्बन्ध** (Relation)—पूर्व-ज्ञान को नए ज्ञान से सम्बन्ध स्थापित करना ताकि नए तथ्य अधिक स्थायी हो सकें।
3. **व्यवस्था** (System)—पाठ्य सामग्री को पूर्व-ज्ञान से मिलाना तथा सुव्यवस्थित करना। ऐसा करने से ही शिक्षक सफलता प्राप्त कर सकता है।
4. **विधि** (Method)—ज्ञान को विभिन्न परिस्थितियों में प्रयोग करके दिखाना तथा उसे अधिक ग्राह्य बनाना।

पाठ योजना के चरण

इसके पश्चात् हरबर्ट के अनुयायियों ने विशेषकर जिल्लर (Ziller) तथा रैन (Rein) ने इनको नए ढंग से प्रस्तुत करके पाँच अन्य पदों या सोपानों का निर्माण किया। उन्होंने हरबर्ट के पाँच नियमित पदों का ही नाम दिया।

पाठ योजना के मुख्य चरण निम्न प्रकार हैं—

1. तैयारी—यह प्रथम चरण है। इससे बच्चों के मस्तिष्क को नया ज्ञान प्राप्त करने के लिए तैयार किया जाता है। यह बच्चों तथा अध्यापक दोनों के लिए अति आवश्यक है। श्रेष्ठ अध्यापन के दो रहस्य हैं—पहला, बच्चों का वर्तमान स्तर क्या है और दूसरा उन्हें किस दिशा में किस प्रकार प्रयत्नशील होना चाहिए।''

2. उद्देश्य कथन—पाठयोजना के उद्देश्य से परिचित होना अध्यापक एवं विद्यार्थी दोनों के लिए आवश्यक है। पाठ योजना का उद्देश्य कथन सरल, स्पष्ट एवं कम शब्दों में प्रस्तुत करना चाहिए। उदाहरण के लिए—आज हम यातायात परिवहन के साधनों के विषय में जानकारी प्राप्त करेंगे।

3. प्रस्तुतीकरण—प्रस्तुतीकरण से अध्याय का आरम्भ होता है। इसके द्वारा विद्यार्थियों में अधिक-से-अधिक क्रियाशीलता बनाया जा सकता है। प्रश्न, दृष्टान्त-सामग्री, व्याख्या, निदर्शन एवं अन्य साधन सामग्रियों का उपयोग कर सकता है।

4. तुलना अथवा सम्बन्ध—विद्यार्थियों को नवीन ज्ञान इस प्रकार दिया जाना चाहिए कि उसका सम्बन्ध विद्यार्थियों द्वारा पूर्व अर्जित किए ज्ञान से सम्बन्धित हो सके। पाठ योजना का तुलनात्मक चरण सामान्यीकरण एवं ज्ञान को व्यवस्थित करता है। यह समता एवं विषयता का साधारणीकरण करता है। इस चरण में विद्यार्थी अपने पूर्व ज्ञान से नवीन ज्ञान की आलोचनात्मक तुलना करते हैं।

5. प्रयोग—ज्ञान तभी 'शक्ति' (Power) जब इसका प्रयोग किया जाए। ज्ञान जब, स्पष्ट तथा उपयोगी हो तभी वह मानसिक विकास में सहायता देता है और जीवन का अभिन्न अंग बनता है।

प्रयोग (Application) तथा पुनरुक्ति (Recapitulation) में एक भारी अन्तर विद्यमान होता है। पुनरुक्ति में केवल पाठ को दोहराया जाता है; परन्तु प्रयोग में अर्जित ज्ञान को नई परिस्थितियों के अनुसार ढालने के लिए मस्तिष्क को पर्याप्त रूप से क्रियाशील होना पड़ता है।

प्रयोग के विभिन्न रूप हो सकते हैं—

(i) समस्याओं का समाधान।
(ii) मॉडल, मानचित्र तथा चार्ट आदि बनाना।
(iii) निबन्ध आदि लिखना।
(iv) क्रियात्मक कार्य करना।

For Best PDF, Search on Google - "Nitin Gupta PDF"
Scanned by CamScanner

हरबर्ट के पाँच पदों की सीमाएँ

हरबर्ट के अनुसार पदों की सीमाएँ निम्न प्रकार हैं—

1. इन पदों का काफी महत्त्व है और हरबर्ट ने ही पहली बार इस दिशा में कार्य किया। ज्ञान के पाठ में योजना बनाने में ये बड़े उपयोगी हैं, परन्तु कौशल और रसानुभूति-पाठ में इनका प्रयोग नहीं किया जा सकता। अत: इनकी उपयोगिता सीमित है।

2. इस योजना के अनुसार, जैसे कि प्रस्तुतीकरण में अध्यापक ही अधिक सक्रिय माना जाता है, जबकि आधुनिक युग में बच्चों की सक्रियता पर अधिक बल दिया जाता है।

3. हरबर्ट के पाँच पदों का उपयोग तभी उचित है जब प्रतिदिन नया पाठ शुरू किया जाए। यदि एक ही पाठ कई दिन चलता रहे तो इस विधि का प्रयोग ठीक सही प्रतीत नहीं होता।

4. प्रतिदिन विषय की घोषणा या पुरानी भूमिका की आवश्यकता नहीं होती।

इकाई योजना तथा पाठ योजना में अन्तर

	इकाई योजना (Unit Plan)		पाठ योजना (Lesson Plan)
	मॉरिसन द्वारा इकाई योजना प्रस्तुत की गई।		हरबर्ट ने पाठ योजना का शुभारम्भ किया।
1.	इकाई योजना का स्वरूप व्यापक होता है।	1.	पाठ योजना का स्वरूप संकुचित होता है।
2.	इकाई योजना में सम्पूर्ण विषय को बहुत कम भागों में बाँटा जाता है।	2.	विषय-वस्तु में अनेक पाठ होते हैं। वास्तव में पाठ योजना, इकाई का एक छोटा अंग होता है।
3.	विषय-वस्तु का समान उद्देश्यों के सन्दर्भ में विभिन्न इकाइयों में विभाजित किया जाता है।	3.	पाठ योजना में विषय-वस्तु के समान उद्देश्य होना आवश्यकत नहीं है।
4.	इकाई योजना शिक्षण उद्देश्यों अथवा रुचियों अथवा आवश्यकताओं पर आधारित हो सकती है।	4.	पाठ योजना, तीनों तत्त्वों अर्थात् उद्देश्यों, रुचियों तथा आवश्यकताओं पर आधारित होती है।
5.	इकाई योजना में विषय-वस्तु के उचित संगठन को प्राथमिकता दी जाती है।	5.	पाठ योजना में विषय-वस्तु के प्रस्तुतीकरण पर अधिक ध्यान दिया जाता है।
6.	इकाई योजना मूल्यांकन के लिए आधार प्रस्तुत करती है।	6.	पाठ योजना विद्यार्थियों की अधिगम उपलब्धियों के मापन को आधार प्रदान करती है।

पर्यावरण अध्ययन शिक्षण के उपागम

पर्यावरण अध्ययन, विज्ञान दृष्टिकोण शिक्षण के अन्तर्गत सम्मिलित किया जाता है। इस शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का मुख्य उद्देश्य वैज्ञानिक खोज के लिए दृष्टिकोण व कौशल का विकास करना और वैज्ञानिक अवधारणाओं व सामान्यीकरण को समझना है। शिक्षक का मुख्य उद्देश्य छात्रों में 'वैज्ञानिक विचारधारा का विकास' करना है।

विचार प्रक्रिया से प्राप्त परिणाम के लिए अधिगम, अवधारणाएँ, सिद्धान्त, आभास या सामान्यीकरण आधार के रूप में कार्य करते हैं। दृष्टिकोण, व्यवहार, निष्कर्ष, कार्य और विचारधारा की उपलब्धि है। अत: किसी भी प्रकार के विज्ञान शिक्षण में प्रयोग सामान्यीकृत निष्कर्ष विचारधारा का होना आवश्यक है।

विज्ञान शिक्षण के मुख्य उद्देश्यों को प्राप्त करने के अनेक उपागम हैं। इसमें मुख्य हैं—

1. वैचारिक उपागम (Conceptual Approach)
2. प्रक्रिया उपागम (Process Approach)
3. संगठित व समाकेतिक उपागम (Integrated and Incluience)
4. छात्र-केंद्रित क्रिया आधारित (Child-Centered Activity Based)
5. समस्या-समाधान विधि (Problem-Solving Method)
6. पर्यावरण अध्ययन उपागम (Environmental Study Approach)
7. वैज्ञानिक विधि (Scientific Method)
8. क्रियाकलाप उपागम (Activity Approach)
9. शिक्षक केंद्रित बनाम छात्र-केंद्रित उपागम (Teacher Centred *Versus* Child Centred Approach)
10. पूछताछ उपागम (Inquiry Approach)

■ वैचारिक उपागम

वैचारिक उपागम की क्रियाकलापों को करते समय विद्यार्थियों को विभिन्न अवसर मिलते हैं। किसी चीज का स्पर्श करने का, आभास होने का, स्वाद लेने का, सूंघने आदि का संवेदनात्मक अनुभव बाह्य पर्यावरणीय प्रेरणा द्वारा उत्पन्न होता है। इनके परिणामस्वरूप बोधात्मक ज्ञान पर्यावरणीय प्रेरणा के परिणामस्वरूप उत्पन्न होता है। पर्यावरणीय प्रेरणा के परिणामस्वरूप उत्पन्न जागरूकता व संवेदना से विकसित बोधात्मक ज्ञान विचारधारा को शृंखलाबद्ध रूप में उत्पन्न करने का प्रारम्भिक कार्य करता है।

■ प्रक्रिया उपागम

प्रक्रिया उपागम को अंतर्गत विद्यार्थी दी गई समस्या के हल तक पहुँचने के लिए स्वयं अपनी विधि का चयन करता है।

इस प्रक्रिया में विभिन्न गतिविधियाँ सम्मिलित होती हैं। इन गतिविधियों के द्वारा अंत में निष्कर्ष पर पहुँचा जाता है।

इस प्रकार है—

1. **अंकों का उपयोग** (Using Numbers)—गिनना, प्रतिशत, निकालना, सारणीकरण आदि विधियों का उपयोग विज्ञान में किया जाता है।

For Best PDF, Search on Google - "Nitin Gupta PDF"
Scanned by CamScanner

2. **प्रेक्षण** (Observing)—प्रेक्षण से तात्पर्य है उन विस्तृत बातों पर ध्यान केंद्रित करना जिन्हें सरलतापूर्वक देखा जा सकता है।
3. **कल्पना व परिणाम** (Assuming Infering)—प्रेक्षित प्रमाणों के आधार पर तार्किक परिणामों पर पहुँचना।
4. **नापना** (Measuring)—लंबाई, वजन या आयतन आदि नापना।
5. **संचारण** (Communicating)—सम्पूर्ण और संक्षिप्त सूचनाओं को स्पष्टतम रूप में प्रस्तुत करना।
6. **विभाजीकरण** (Classification)—समानता व असमानता के आधार पर विभिन्न समूहों में बाँटना।
7. **परिकल्पना निर्माण** (Hypothesis)—तथ्य से सम्बन्धित विभिन्न प्रकार के प्रेक्षणों का विवेचन करने हेतु एक शिक्षित अनुमान का निर्माण करना।
8. **पूर्वानुमान** (Predicating)—सुझावों को पूर्ण प्रेक्षण पर आधारित करके अग्रित प्रेक्षण के निष्कर्ष सुझाना।
9. **प्रयोग करना** (Experimenting)—एक या अधिक परिवर्तियों (चरों) का नियंत्रित परिस्थिति में परीक्षण करना और प्रासंगिक आँकड़ों को भविष्य में व्याख्या करने हेतु एकत्रित करना।
10. **परिवर्तियों का नियंत्रण पाना** (Controlling Variables)—किसी प्रश्न का उत्तर ढूंढ़ने के लिए या किसी समस्या का हल ढूंढ़ने के लिए एक-एक करके सभी परिवर्तियों को प्रभाव का परीक्षण करना।
11. **अनुसंधान** (Research)—किसी प्रश्न का उत्तर ढूंढ़ने की नियोजित खोज। उपर्युक्त सभी चरणों वैज्ञानिक विधि या प्रक्रिया उपागम के भाग हैं।
12. **आदर्शों का निर्माण** (Formulating Models)—सूचना, आँकड़ों या तथ्यों का समूहीकरण इस प्रकार करना कि वह एक प्रसंग विशेष की व्याख्या कर सकें।

■ समावेशी प्रक्रिया पर आधारित शिक्षण अधिगम

प्रारम्भिक विद्यालयों में पर्यावरण अध्ययन शिक्षण की एक महत्वपूर्ण भूमिका हैं वह विद्यार्थी में अपने भविष्य से सम्बन्धित महत्वपूर्ण निर्णय लेने के लिए आवश्यक दृष्टिकोण और कौशल का विकास करता है।

विद्यार्थी कक्षा में प्रवेश से पूर्व के चार या पाँच वर्षों में अपने-आप और अपने पर्यावरण के मध्य होने वाली प्रतिक्रिया में रत रहता है। क्योंकि प्राथमिक स्तर पर बच्चों की प्रवृत्ति क्रियाशील, फुर्तीली, जिज्ञासु, चंचल होती है इसलिए वह पर्यावरण के साथ समन्वय करके अधिक सीख सकता है।

पर्यावरण उपागम

पर्यावरण अध्ययन उपागम स्पष्ट करता है कि पर्यावरण विज्ञान पढ़ाने के लिए सामग्रियों से भरा पड़ा है। यह सामग्री दृश्य एवं श्रव्य दोनों प्रकार की हो सकती है जैसे—प्राकृतिक, मानव निर्मित, सजीव, निर्जीव आदि। जब शिक्षक प्रकृतिक रूप से या मानव निर्मित रूप से अपने आस-पास की सामग्री का उपयोग विज्ञान शिक्षण या सामाजिक शिक्षण में करता है तो वह उपागम पर्यावरण-अध्ययन उपागम कहलाता है।

समावेशी उपागम

समावेशी शिक्षा आयु, लिंग, वर्ग, जाति, शारीरिक बौद्धिक क्षमताओं के आधार पर आर्थिक, भौगोलिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक पृष्ठभूमि इत्यादि किसी भी आधार पर बच्चों को शिक्षा से वंचित करने का विरोध करती है।

भारत सरकार ने शिक्षा का अधिकार अधिनियम को लागू कर 6-14 वर्ष के सभी बच्चों की अनिवार्य व नि:शुल्क शिक्षा का प्रावधान किया है।

समावेशी शिक्षा/उपागम की विशेषताएँ

- सहभागिता द्वारा सीखने का अवसर
- विभिन्न क्षमता वाले बच्चों में सामूहिक कार्य करने की भावना का विकास
- स्वय: अध्ययन की योग्यता का विकास
- नेतृत्व क्षमता का विकास
- अनुभवों के आधार पर ज्ञान-सृजन
- सीखने की अपनी गति व शैली
  उत्तरदायित्व की भावना का विकास

पर्यावरण अध्ययन शिक्षा के कौशल

■ अवलोकन का अर्थ

अवलोकन का अर्थ है किसी वस्तु, स्थान तथा प्रयोग आदि को ध्यानपूर्वक देखना, ध्यान देकर उस पर चिंतन तथा मनन करना होता है। अवलोकन में अनेक प्रकार की क्रियाएँ शामिल होती हैं। अवलोकन के पश्चात् तथ्यों को प्राय: लिखित रूप दिया जाता है।

अवलोकन प्रविधि

'निरीक्षण' ज्ञानार्जन का वह सुबोध एवं प्रभावशाली साधन है जिसके द्वारा विद्यार्थी स्वयं क्रियाशील रहकर किसी वस्तु या तथ्य का पता लग सकता है। जो ज्ञान विद्यार्थी अवलोकन द्वारा प्राप्त करता है, वह स्थायी होता है।

1. निरीक्षण कराते समय शिक्षक विद्यार्थियों को स्वतंत्रतापूर्वक निरीक्षण करने की आज्ञा दे विद्यार्थियों, परन्तु साथ ही साथ उनका पथ-प्रदर्शन एवं कार्यों का निरीक्षण भी करता रहे।
2. निरीक्षण के हेतु चयन की हुई परिस्थितियाँ छात्रों के सामाजिक जीवन से सम्बन्धित है।
3. शिक्षक जिन सामाजिक संस्था या संगठन का विद्यार्थियों को निरीक्षण करना चाहता है, उसे उनको दिखाने से पूर्व उनको स्वयं निरीक्षण कर लेना चाहिए।

For Best PDF, Search on Google - "Nitin Gupta PDF"
Scanned by CamScanner

पर्यावरण अध्ययन शिक्षण में अवलोकन का महत्त्व

भ्रमण द्वारा अनेक प्रकार की भौगोलिक आकृतियों का प्रत्यक्ष ज्ञान देने के लिए भ्रमण यात्राओं का आयोजन किया जाता है।

विद्यार्थियों को भ्रमण के लिए नदी, पर्वत, बाँध, डेरी फार्म, मिल बिजलीघर, पानी साफ करने के स्थान, खदान, कृषि फार्म आदि पर ले जाया जा सकता है।

1. विद्यार्थियों की मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं की संतुष्टि करने में यह विधि सहायक होती है।
2. इस विधि से प्रत्यक्ष रूप में ज्ञान प्राप्त हो जाता है।
3. विद्यार्थियों को प्रयोगात्मक तथा व्यावहारिक ज्ञान प्राप्ति का अवसर मिलता है।
4. यह विधि रोचक ढंग से ज्ञान प्राप्ति से सहायता देती है।
5. विद्यार्थियों की मानसिक शक्तियों को विकसित होने का समुचित अवसर मिलता है।
6. इस विधि के माध्यम से विद्यार्थियों को अपनी इन्द्रियों के माध्यम से सही-सही ज्ञान प्राप्त करने का प्रशिक्षण प्राप्त होता है।
7. अवलोकन द्वारा प्राप्त ज्ञान छात्रों के सम्पूर्ण ज्ञान का अंग बन जाता है।
8. विद्यार्थियों जो ज्ञान स्वयं अवलोकन से प्राप्त करते हैं, वह स्थायी होता है।
9. अवलोकन द्वारा छात्र वास्तविक पर्यावरण स्थितियों से परिचित होते हैं।

अवलोकन प्रविधि की सीमाएँ

1. इस विधि से व्यवस्थित तथा सुनियोजित ढंग से ज्ञान प्राप्त नहीं हो सकता।
2. यह विधि बहुत समय लेती है। पाठ्यक्रम समय पर समाप्त नहीं किया जा सकता।
3. यह विधि अपेक्षाकृत खर्चीली है।
4. निरीक्षण प्रविधि में बहुत निपुणता की आवश्यकता होती है।

अवलोकन विधि से अधिकतम लाभ उठाने के उपाय

1. अवलोकन से पूर्व विद्यार्थियों को अवलोकन किए जाने वाले तथ्य या वस्तु के बारे में भूमिका के रूप में कुछ दिशा-निर्देश दिए जाते हैं।
2. अवलोकन के समय विद्यार्थियों को अधिक से अधिक स्वतन्त्रता दी जानी चाहिए।
3. विद्यार्थियों की अपनी स्मरण शक्ति को तीव्र बनाने सम्बन्धी अभ्यास भी प्रदान किये जाने चाहिये।
4. दूरी, संख्या, आकार, रंग-रूप और आकृति आदि का अनुमान लगाने, विभिन्न आवाजों को पहचानने, गन्धों को जानने आदि का अभ्यास विद्यार्थियों को कराया जाना चाहिए।
5. अवलोकन की हुई क्रियाओं तथा वस्तुओं को सही ढंग से नोट करने की आदत विद्यार्थियों में डालनी चाहिए।
6. विद्यार्थियों को क्रियाओं और वस्तुओं के अवलोकन के बाद उन पर निष्पक्ष दृष्टिकोण से चिन्तन और मनन कर उचित निष्कर्ष निकालने के लिये प्रेरित किया जाना चाहिए।
7. अवलोकन के पश्चात् जो भी अनुभव विद्यार्थियों को हुए हैं तथा वे जिस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं, उस पर सामूहिक रूप से विचार-गोष्ठी का आयोजन किया जाना चाहिए।

अवलोकन के प्रकार (Types of Observation)

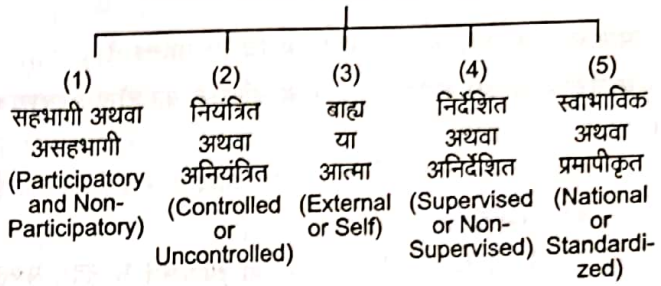

अवलोकन के लाभ

2. यह छात्रों के अशाब्दिक व्यवहार की जाँच में सहायक है।
1. इसका सभी स्तरों पर प्रयोग किया जा सकता है।
3. यह प्राकृतिक अथवा स्वाभाविक वातावरण में विद्यार्थियों के व्यवहार को जाँचने का अवसर प्रदान करता है।
4. अवलोकन के माध्यम से विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के विभिन्न गुणों की जाँच की जा सकती है।
5. अवलोकन के आधार पर अध्यापक विद्यार्थियों के विभिन्न गतिविधियों के सन्दर्भ में चयन करता है।
6. अध्यापक विद्यार्थियों की प्रगति का क्रमबद्ध रूप से मूल्यांकन करता है।
7. अवलोकन द्वारा अध्यापक अपनी अनुदेशन प्रक्रिया में सुधार करता है।
8. अवलोकन के आधार पर अध्यापक विद्यार्थियों को उनकी रुचियों, विद्यार्थियों, दृष्टिकोणों, मूल्यों आदि के अनुसार मार्गदर्शन करता है।
9. वैज्ञानिक तथा मनोवैज्ञानिक ढंग से किया गया अवलोकन विद्यार्थियों तथा अध्यापक में अच्छे सम्बन्ध स्थापित करने में सहायक होता है।
10. अवलोकन के आधार पर अध्यापक के बाह्य व्यवहार के बारे में निर्णय लेता है।

अवलोकन प्रविधि सम्बन्धी सावधानियाँ

अवलोकन सम्बन्धी निम्नलिखित सावधानियाँ शिक्षक को अपनानी चाहिए—

1. पर्यावरण अध्ययन में मूल्यांकन हेतु विषिष्ट व्यवहार को परिभाषित करना।
2. व्यवहार के निरीक्षण चक्र की योजना बनाना।
3. आवश्यक विशेष परिस्थितियों का निर्णय लेना।

For Best PDF, Search on Google - "Nitin Gupta PDF"
Scanned by CamScanner

4. व्यवहारों की सूची का निर्माण करना।
5. व्यवहार निरीक्षण में दक्षता प्राप्त करना।
6. चुने गए विभिन्न व्यवहारों पर ध्यान केन्द्रित करना।
7. प्रदर्शित व्यवहारों का मूल्यांकन करना।

मानचित्र कौशल

■ मानचित्र कौशलों के प्रकार

मानचित्रों का पर्यावरण अध्ययन में विशेष महत्त्व है।

मानचित्रों के बारे में निम्न प्रकार के कौशलों का होना आवश्यक है।

1. देशान्तर तथा अक्षांश रेखाओं, रंगों आदि के संकेतों को जानने का कौशल।
2. परम्परागत संकेतों का ज्ञान अर्थात् मानचित्र में नदी, पर्वत, समुद्र किस प्रकार के चिन्हों से दिखाए जाते हैं।
3. दिशाओं के ज्ञान का कौशल।
4. मानचित्र का पैमाना जानने का कौशल।
5. वर्षा आदि को दर्शाने वाले चिन्हों का ज्ञान का कौशल।
6. यातायात अर्थात् रेल की पटरी तथा सड़कों के संकेत जानने का कौशल।

मानचित्रों का महत्त्व

मानचित्रों का महत्त्व—पर्यावरण अध्ययन तथा पर्यावरण अध्ययन में मानचित्रों का प्रयोग तो बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। विभिन्न प्रकार के मानचित्र-राजनीतिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, भौगोलिक तथा आर्थिक विषय का ज्ञान बढ़ाने में बहुत सहायक होते हैं।

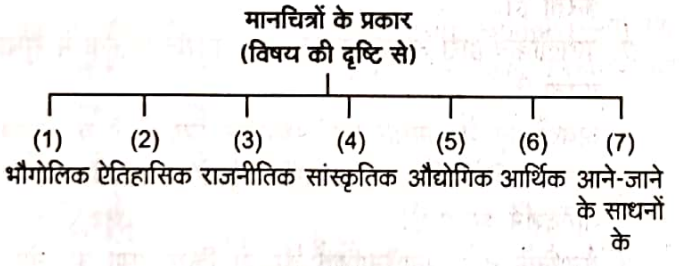

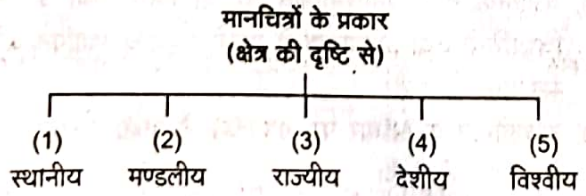

मानचित्रों के चयन से सम्बन्धित मुख्य बातें

1. विद्यार्थियों की योग्यता, आयु तथा कक्षा के स्तर को ध्यान में रखकर मानचित्र का चयन किया जाए।
2. मानचित्र का आकार उचित होना चाहिए।
3. मानचित्रों में दर्शाए गए स्थान तथा अन्य तत्त्व शुद्ध हों।
4. मानचित्र में संकेत ठीक प्रकार से दिए जाए।
5. मानचित्र का पैमाना उपयुक्त हो।

मानचित्रों के प्रदर्शन में सावधानियाँ

1. मानचित्र दिखाते समय संकेतक (Pointer) का प्रयोग करना चाहिए।
2. मानचित्र कक्षा में इस प्रकार दिखाया जाए कि सभी विद्यार्थियों मानचित्र के सभी भागों को भली-भाँति देख सकें और समझ सकें।
3. जहाँ संभव हो मानचित्रों के निर्माण में विद्यार्थियों की सहायता ली जाए।

विद्यार्थियों में मानचित्र सम्बन्धी कौशलों के विकास की क्रियाएँ

1. विभिन्न प्रकार के मानचित्रों में अन्तर ढूँढना।
2. मानचित्र पर दो स्थानों में दूरी को मापने के लिए विद्यार्थियों को कहा जाना चाहिए।
3. मानचित्रों में विभिन्न प्रकार की उपज वाले स्थानों को दिखाना।
4. विद्यार्थियों के किसी राज्य, देश अथवा मानचित्र में विभिन्न दिशाओं में स्थित स्थानों की सूची बनाना।
5. विद्यार्थियों को संकेतों के आधार पर राजधानियाँ, बन्दरगाह आदि बताना।
6. विद्यार्थियों को राज्य आदि के मानचित्र बनाने के लिए कहना।

मानचित्र का निर्माण

मानचित्र बनाने के बारे में निम्नलिखित बातों का पर ध्यान देना आवश्यक है।

1. मानचित्र संकेतों की जानकारी।
2. वर्षा को दर्शाने वाले चिन्ह।
3. मानचित्र में प्रयोग किए जाने वाले रंग।
4. मानचित्र का पैमाना (Scale)

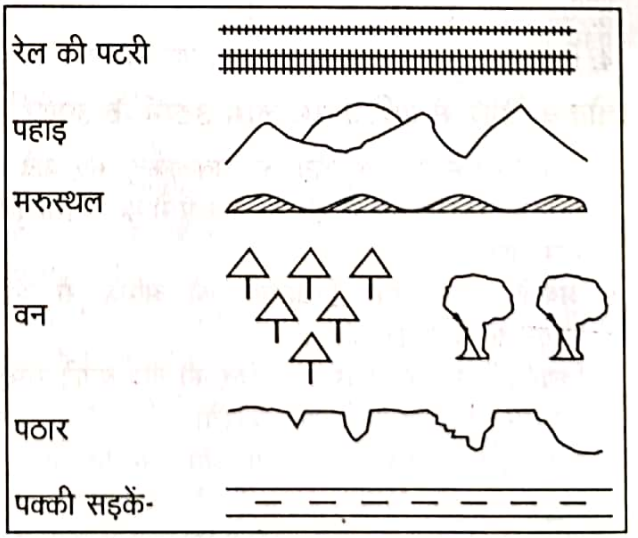

चित्र : कुछ महत्त्वपूर्ण मानचित्र संकेत

For Best PDF, Search on Google - "Nitin Gupta PDF"
Scanned by CamScanner

नक्शे में दिखाई गई वार्षिक वर्षा	
▭	5 से.मी. से कम
▭	5 से 10 से.मी. तक
▭	10 से 20 से.मी. तक
▭	20 से 50 से.मी. तक
▭	50 से.मी. से अधिक

सहयोगी अधिगम उपागम

"सहयोगी अधिगम वह शिक्षा उपागम है जो शिक्षण के अनेकों तरीकों को जन्म देती है, जो सभी बच्चों को एक ही उद्देश्य की ओर समूहों में काम करने, एक जैसी समस्या या कार्य या कार्य को बाँटने की ओर लगते हैं, इस प्रकार से कि वे ऐसा व्यवहार करें जिससे परस्पर निर्भरता दिखती हो तथा प्रत्येक बच्चे की भागीदारी तथा प्रयास भी नजर आते हों।"

सहयोगी अधिगम पद्धतियाँ एवं पर्यावरण अध्ययन भली भाँति मिले हुए हैं।

सहयोगी अधिगम शिक्षकों को निम्नलिखित के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

- एकल विषय की सीमाओं से परे जाने के लिए
- 'मूल्य' सीखने सिखाने की पारम्परिक आदर्श सोच से निकलने के लिए
- यह समझने के लिए कि व्यक्तियों में अंतर होता है तथा भिन्नताएँ लोकतंत्र हेतु आवश्यक हैं।
- बच्चों को सहयोग की भावना समझने में सहायता करने के लिए।
- छोटे अध्येताओं को सशक्त बनाने के लिए।

सहयोगी अधिगम के उपयोग

सहयोगी अधिगम का सिद्धांत अनुसंधान एवं अभ्यास का दृढ़ आधार है। यदि इसे जिम्मेदारी के साथ लागू किया जाए, तो इससे कक्षा में केवल शैक्षिक प्रगति को ही सहारा नहीं मिलता बल्कि छोटे बच्चों के सामाजिक कौशल भी सुधार होता है।

सहयोगी अधिगम के नियम

छोटे समूहों के लिए सहयोगी अधिगम के कई तरीकें तथा संरचनाएँ हैं। लेकिन पहले से तैयार तरीकों का जानने की अपेक्षा सहयोगक अधिगम के कुछ आवश्यक पक्षों पर आधारित उचित तरीके एवं सामग्री को तैयार किया जाए तो अधिक प्रभावी रहेगा।

तीन अति महत्वपूर्ण सिद्धान्त निम्नलिखित हैं—

1. सकारात्मक रूप से एक-दूसरे पर निर्भरता—इसमें शामिल है समूह का एक सांझा उद्देश्य हो, सभी के संसाधन सांझे हों, एक समूह की एक पहचान बनाई जाए (जैसे कि सदस्यों द्वारा चुना गया नाम) इत्यादि।

2. समान स्तर पर सहक्रियाएँ—समूह के सदस्यों के बीच समान स्तर पर सहक्रियाएँ समूह के सहज कार्य हेतु आवश्यक है। समूह के सदस्यों के समान स्तर की सहक्रियाओं को करवाने के लिए यह महत्वपूर्ण है कि शिक्षक प्रत्येक शिक्षार्थी को जानते हों।

3. व्यक्तिगत जिम्मेदारी—यह बहुत महत्वपूर्ण है कि प्रत्येक बच्चे को कुछ न कुछ काम दिया जाए तथा कुछ कार्य समूह के सभी सदस्य इकट्ठे करेंगे।

पर्यावरण अध्ययन हेतु सहयोगी अधिगम के उपयोग

सहयोगी अधिगम बच्चों में दूसरों के दृष्टिकोण एवं विचारों को समझने की योग्यता को बढ़ाता है, दूसरों के साथ घुलने-मिलने के कौशलों को विकसित करने में सहायता करता है।पर्यावरण अध्ययन के शिक्षण अधिगम द्वारा इन सभी कौशलों का विकास अति महत्वपूर्ण है।

पर्यावरण अध्ययन की कक्षा स्थानीय संदर्भ पर आधारित होती है। सहयोगी अधिगम बच्चों को अलग प्रकार से लेकिन परिस्थिति उसी के अनुसार उचित प्रक्रिया करने के योग्य बनाता है।

पर्यावरण अध्ययन एक सक्रिय विषय क्षेत्र है। परिस्थितियाँ बच्चों को इस प्रकार के अवसर देती हैं कि वे बहु-आयामी विचारों की खोज कर सकें।

पर्यावरण अध्ययन शिक्षण अधिगम विश्लेषणात्मक सोच तथा समस्याओं के समाधान से सम्बन्धित है सहयोगी अधिगम काफी हद तक शिक्षार्थियों में इन कौशलों का विकास करने में सहायता कर सकता है।

■ भूमिका निभाना

भूमिका निभाना प्रविधि का अर्थ

भूमिका निभाना एक प्रविधि जिस का अर्थ है किसी प्रकरण अथवा जीवन्त समस्या का अनुभव करना तथा दूसरों के समक्ष प्रस्तुत करना। उदाहरणार्थ: किसी महान् व्यक्ति की भूमिका (Part) निभाना। अध्यापक प्रशिक्षण में भी इस विधि का प्रयोग किया जाता है। इसमें विद्यार्थी अध्यापक किसी प्रकरण को अपने साथियों को पढ़ाता है तथा अन्य विद्यार्थी अध्यापक उस पाठ का अवलोकन करते हैं।

पर्यावरण अध्ययन शिक्षण में भ्रमण प्रविधि

■ शिक्षण परिभ्रमण अथवा यात्रा प्रविधि का अर्थ

शिक्षण परिभ्रमण प्रविधि का अर्थ उस प्रविधि से है जिसके माध्यम से विद्यार्थियों को कक्षा तथा स्कूल से बाहर अधिगम के लिए ले जाया जाता है।

परिभ्रमण प्रविधि का पर्यावरण अध्ययन में महत्व—कक्षा में विद्यार्थियों को पर्यावरण के बारे में सब कुछ नहीं बताया जा सकता। पर्यावरण के बारे में महत्त्वपूर्ण जानकारी देने के लिए उचित पर्यावरण के प्रति उचित दृष्टिकोण निर्माण के लिए तथा कौशल पौषण के लिए क्षेत्र भ्रमण प्रविधि बहुत महत्व रखती है।

For Best PDF, Search on Google - "Nitin Gupta PDF"
Scanned by CamScanner

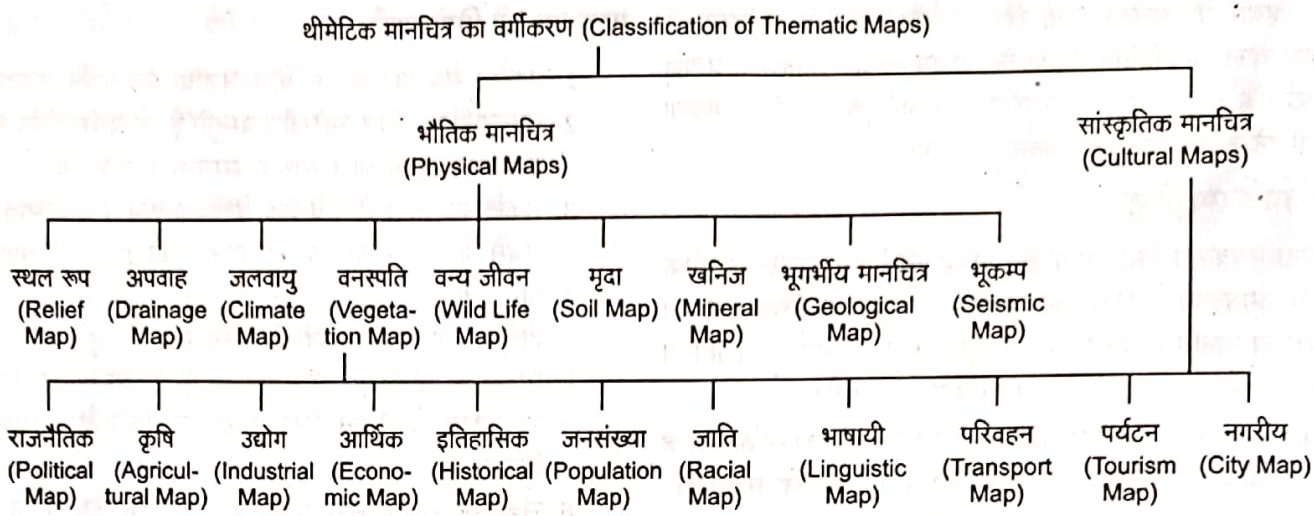

■ मौसम चार्ट : महत्व एवं विश्लेषण

मौसम सम्बन्धी आँकड़ों के आरेखीय चित्रण को मौसम चार्ट कहते हैं। मौसम सम्बन्धी आँकड़ें विस्तृत होते हैं, इन्हें मौसम के प्रतीक चिन्हों द्वारा प्रदर्शित किया जा सकता है। मौसम के प्रतीक चिन्हों द्वारा—

इसके अंतर्गत एक चार्ट का मौसम से सम्बन्धित प्रतीक चिन्हों का प्रयोग करके मौसम चार्ट तैयार किए जाते हैं। मौसम चार्ट मौसम पूर्वानुमान के लिए महत्वपूर्ण होते हैं। ये विभिन्न तापीय क्षेत्रों वायु राशियों, वायुदाब, आर्द्रता एवं वर्षण के क्षेत्रों की स्थिति जानने एवं पहचानने में मदद करते हैं। भारतीय मौसम विभाग का मुख्यालय नई दिल्ली में है और इसके अतिरिक्त छः प्रादेशिक मौसम विज्ञान केंद्र स्थापित किए गए हैं। जोकि चेन्नई, मुंबई, नई दिल्ली, कोलकाता, नागपुर और गुवाहटी में हैं। इसके अतिरिक्त मौसम विज्ञान विभाग के अनेक विभाग भी हैं जैसे कृषि मौसम विज्ञान, उष्ण कटिबंधीय मौसम विज्ञान अनुसंधान एवं विकास प्रशिक्षण और मौसम के उपकरणों का निर्माण। उपग्रह द्वारा प्राप्त मौसम सम्बन्धी पूर्वानुमान की रिपोर्ट भी पूर्ण रूप से ही तैयार की जाती है।

मौसम चार्ट का विश्लेषण

किसी स्थान एवं समय के संदर्भ में दिन प्रतिदिन की वायुमंडलीय दशाओं में परिवर्तन को मौसम कहते हैं, जबकि विशाल क्षेत्र में लम्बी अवधि तक पाई जाने वाली वायुमंडलीय दशाओं के योग को जलवायु कहते हैं।

वर्षा—वर्षा वर्षण का एक सामान्य रूप है। भारत में अधिकांश वर्षा ग्रीष्म ऋतु में दक्षिणी पश्चिमी मानसून पवनों द्वारा होती है। भारत में वर्षा का असमान वितरण है। भारत में कहीं पर 200 सेमी से भी अधिक वर्षा होती है जबकि भारत के विशेषकर पश्चिमी मरूस्थलीय भाग में 20 सेमी से भी कम वर्षा हो पाती है। भारत जैसे कृषि प्रधान देश में वर्षा का विशेष महत्व है।

आर्द्रता—वायुमंडल में उपस्थित जलवाष्प की मात्रा को आर्द्रता कहा जाता है। आर्द्रता वायुमंडल में तीन रूप में पाई जाती है-गैसीय अवस्था में जलवाष्प, तरल अवस्था में जल के रूप में तथा ठोस अवस्था में हिमकणों के रूप में। आर्द्रता हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण है आर्द्रता के कारण ही वर्षा, ओले, कोहरा, धुंध, पाला, हिमपात आदि होते हैं। आर्द्रता की मात्रा वायुमंडल में तापमान को नियंत्रित करती है तथा यह पृथ्वी पर पाए जाने वाले समस्त जीव-जंतु व पेड़-पौधों के लिए अति आवश्यक है। वायुमंडल में आर्द्रत की मात्रा को मुख्यतः दो विधियों द्वारा प्रकट किया जा सकता है।

1. निरपेक्ष आर्द्रता—वायु की प्रति इकाई आयतन में विद्यमान जलवाष्प की कुल मात्रा को निरपेक्ष आर्द्रता कहते हैं इसे ग्राम प्रति घन मीटर में व्यक्त किया जाता है। वायु की आर्द्रता एक स्थान से दूसरे स्थान पर समय के साथ परिवर्तित होती रहती है।

2. सापेक्ष आर्द्रता—किसी तापमान पर वायुमंडल में उपस्थित जलवाष्प तथा उसी तापमान पर उसी वायु की जलवाष्प धारण करने की क्षमता को सापेक्ष आर्द्रता कहते हैं। इसे प्रतिशत में व्यक्त किया जाता है। वायु में जितनी अधिक जलवाष्प होगी उतनी ही अधिक सापेक्ष आर्द्रता होगी। वायु का तापमान बढ़ने से सापेक्ष आर्द्रता कम हो जाती है। और कम करने से बढ़ जाती है।

पवनें—पृथ्वी के धरातल के समानांतर बहने वाली वायु को पवन कहते हैं। वायुदाब में अंतर होने के कारण वायु गतिशील होकर निश्चित दिशा की ओर बहती है। पवनें सदैव उच्च वायुदाब से निम्न वायुदाब की ओर बहती है। पवनें क्षैतिज एवं ऊर्ध्वाधर दिशा में चलती है। पवनों के कारण वर्षा, तूफान चक्रवात आदि मौसमी घटनाएँ घटित होती है। पवनें आर्द्रता, तापमान से प्रभावित होकर ठंडी, गर्म व शुष्क अनुभव की जाती है।

वायुदाब—सभी पदार्थों की भाँति वायु का भार होता है जिससे वह धरातल पर दाब डालती है। वायुमंडल द्वारा पृथ्वी पर डाले जाने वाले भार को वायुमंडलीय भार कहते हैं। वायुदाब को मिलीबार मे मापते हैं। एक मिलीबार एक वर्ग सेमी पर एक ग्राम भार के बल के बराबर होता है। समुद्रतल पर वायुदाब अधिक पाया जाता है वायुदाब को मानचित्र पर समुदाव रेखाओं द्वारा दर्शाया जाता है। समदाब रेखाएँ समान। वायुदाब वाले स्थानों को मिलाने वाली रेखाएँ होती है। वायुदाब मुख्य रूप से दो प्रकार का होता है—

उच्च वायुदाब और निम्न वायुदाब।

जहाँ पर कम तापमान होता है वहाँ। उच्च वायुदाब और जहाँ अधिक तापमान होता है वहाँ निम्न वायुदाब विकसित होते हैं। पवनें

For Best PDF, Search on Google - "Nitin Gupta PDF"
Scanned by CamScanner

उच्च वायुदाब से निम्न वायुदाब की ओर चलती हैं। ग्रीष्म काल में उच्च वायुदाब समुद्र तल पर पाया जाता है जबकि निम्न वायुदाब धरातल पर। शीत ऋतु में उच्च वायुदाब स्थल पर जबकि निम्न वायुदाब समुद्र तल पर विकसित होता है।

मौसम चार्टों का महत्व

1. मौसम चार्टों द्वारा ऋतुओं की जानकारी।
2. मौसम चार्टों द्वारा ऋतु फसलों की जानकारी।
3. पर्यटको के लिए उपयोगी।
4. मौसम चार्टों द्वारा सम्बन्धित क्षेत्रों के स्थानीय मौसम की जानकारी।
5. सांस्कृतिक रीति-रिवाजों को जानने में सहायक।
6. मौसम के पूर्वानुमान की जानकारी।

पर्यावरण अध्ययन हेतु स्वनिर्मित उपकरण अल्पव्ययी अधिगम उपकरणों का विकास व उपयोग

कार्यशाला के उपकरण प्राथमिक विज्ञान किट में उपलब्ध हैं जिन्हें उपकरणों में स्वनिर्माण करने में प्रयोग किया जा सकता है। मिनी टूल किट में छोटे सुचालनीय और बहुउद्देश्यीय कार्यशाला के उपकरण होते हैं। किट निर्देशिका उपकरणों के स्वनिर्माण का निर्देशन भी है। पर्यावरण से सामग्री एकत्रित करके उपकरणों के स्वनिर्माण उपकरण अल्पव्ययी अधिगम उपकरण का उदाहरण हैं।

उदाहरण

पर्यावरण अध्ययन शिक्षण में साइकिल एक अद्भुत सहज उपलब्ध शिक्षण सामग्री है। इसका उपयोग घर्षण बल साधारण मशीन, कार्य, शक्ति दाब, सुचालक व कुचालक, साइकिल की घंटी में कम्पन आदि के पढ़ाने में किया जा सकता है।

पाठशाला में आप क्वथनांक, हिमांक बिंदु, वाष्पीकरण और क्वथन, संघनन, घनीकरण, ठोस, द्रव्य-गैस, कुचालक व सुचालक ईंधन, ज्वाला, थर्मस फ्लास्क, प्रेशर कुकर, पानी का दाब, संतुलित आहार, वसा, कार्बोहाइड्रेट, भोजन को पकाना व संरक्षित करना, पकाने व संग्रह करने के बर्तन, हरी सब्जियाँ, विद्युत तापक रसोई गैस, स्टोव आदि का अध्ययन कर सकते हैं।

अल्पव्ययी सामुदायिक संसाधन

प्राथमिक स्तर पर पर्यावरण अध्ययन पढ़ाते समय आस-पास के वातावरण से कुछ सामग्री का उपयोग करते हैं। इस प्रकार की सामग्री घर, स्कूल व पड़ोस से प्राप्त हो सकती है। पृथ्वी, आकाश और हमारा शरीर भी शिक्षण सामग्री के रूप में उपयोग में लाये जा सकते हैं। सभी साधन वातावरण से प्राप्त हो सकते हैं। ये लोग और उपलब्ध सामग्री दोनों ही विज्ञान शिक्षण में सहायक हो सकते हैं। *सामुदायिक संसाधनों को मुख्य रूप से दो भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है—*

(i) सामग्री
(ii) मनुष्य

पृथ्वी पर नदियाँ, सड़कें, पुल, समुद्र रेगिस्तान, वन, पर्वत, विभिन्न प्रकार के जानवर तथा पेड़-पौधे हैं। नदियों में हम नाव देखते हैं। समुद्र में जहाज देखते हैं। आकाश में हम हवाई जहाज देखते हैं। इन सभी से कुछ लोग जुड़े हुए हैं। इनमें कार्य करते हैं। ये सभी सामग्रियाँ और इनसे जुड़े हुए लोग पर्यावरण अध्ययन के लिए बहुमूल्य सामुदायिक संसाधनों के रूप में उपयोग में लाये जाते हैं।

यदि हम अपने शरीर को देखें तो पाएंगे कि हममें से कुछ छोटे कद के हैं और कुछ लम्बे हैं। कुछ पतले हैं और कुछ मोटे हैं। कुछ काले हैं तथा कुछ गोरे रंग के हैं। हम विभिन्न धर्मों से सम्बन्ध रखते हैं, परन्तु फिर भी हम सभी के शरीर के अंग एकसमान हैं। हम सबके शरीर का ताप समान (37°C) है। हम सब ही समुदाय के अंग हैं। यह भी पर्यावरण शिक्षण में सहायक सिद्ध हो सकते हैं।

पर्यावरण अध्ययन के शिक्षण में काम आने वाली सामग्रियों में से कुछ को पर्यावरण से एकत्रित कर सकते हैं। विज्ञान किट और मिनी टूल किट में उपलब्ध उपकरणों की सहायता से कुछ सामग्री का स्वनिर्माण किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त समय-समय पर समुदाय में उपलब्ध मुनष्यों को अपने विद्यालय में निमंत्रित कर सकते हैं।

समुदाय विभिन्न प्रकार की सामग्री, स्थान व लोगों से परिपूर्ण है। ये सभी सामुदायिक संसाधन हैं। इनका उपयोग पर्यावरण अध्ययन के शिक्षण के समय अपनी जरूरत के अनुसार कर सकते हैं।

पर्यावरण अध्ययन अधिगम का आंकलन

■ पर्यावरण अध्ययन में सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन

मूल्यांकन का अर्थ एवं परिभाषा

मूल्यांकन का अर्थ है, पाठ्यक्रम में निहित उद्देश्यों और मूल्यों की ओर उन्मुख छात्रों में प्रगति और अभिवृद्धि की परख। शिक्षा के उद्देश्यों, शैक्षणिक अनुभव तथा मूल्यांकन में परस्पर घनिष्ठ सम्बन्ध है। उद्देश्यों के आधार पर अनुभवों की योजना बनाई जाती है और उद्देश्य प्राप्त हुए या नहीं, इसको जानने के लिए मूल्यांकन किया जाता है।

परीक्षा (Examination) की अपेक्षा मूल्यांकन अधिक व्यापक शब्द है। मूल्यांकन से छात्र की अध्ययन-आदतों पर तथा शिक्षक-पद्धति पर बड़ा प्रभाव पड़ता है।

मूल्यांकन का मापन (Measurement) से अधिक व्यापक अर्थ है और इसमें गुणात्मक तत्त्वों को भी संख्यात्मक द्वारा व्यक्त किया जाता है। मूल्यांकन में परीक्षणों के नियम-सिद्धान्त, उनका निर्माण, मानकीकरण, प्रशासन तथा उनके द्वारा प्राप्त परिणामों की व्याख्या आदि सभी कुछ निहित माना जाता है।

शिक्षा में इसका प्रयोग प्राय: उपलब्धि, बुद्धि, अभिवृत्ति, व्यक्तित्व आदि की वस्तुनिष्ठ परीक्षणों (Objective Tests) द्वारा जाँच करने के लिए किया जाता है।

For Best PDF, Search on Google - "Nitin Gupta PDF"
Scanned by CamScanner

1. **क्लारा एम. ब्राउन** (Clara M. Brown)—मूल्यांकन उद्देश्य निश्चित करने, उनके प्रति सफलता प्राप्त करने और नई परिस्थितियों में नए उद्देश्य निश्चित करने ही बहुत आवश्यक हैं। मूल्यांकन का अर्थ शुद्ध दोषरहित जाँच करना हैं। 'मूल्यांकन' 'परीक्षा' तथा 'मापन' की अपेक्षा अधिक व्यापक है, क्योंकि इसमें उद्देश्यों को ध्यान में रखकर प्राप्त प्रमाणों के आधार पर निष्कर्ष निकाले जाते हैं।

2. मूल्यांकन में उन सब क्रियाओं की जाँच सम्मिलित की जाती है, जिनका पढ़ाई से सम्बन्ध हो अथवा न हो।

3. **थॉमस एचत्र ब्रिज** (Thomas H. Briggs) **तथा जोसफ जस्टमैन** (Jo-seph Justman) लिखते हैं कि मूल्यांकन एक क्रिया है, जिसके द्वारा किसी कार्य के महत्त्व को निश्चित किया जाता है। उन्होंने आगे कहा कि शिक्षा के क्षेत्र में मूल्यांकन का अर्थ शिक्षा के उद्देश्य की समझ होनी चाहिए जिसे हम निरीक्षण द्वारा प्राप्त करना चाहते हैं। उन्होंने कहा—

(i) यदि कक्षा में अध्यापन-कार्य को सुधारना है तो मूल्यांकन का कार्य यह होगा कि वह निश्चित करे कि किस सीमा तक सुधार हुआ?

(ii) यदि छात्रों को अधिक ज्ञान देना उद्देश्य है तो मूल्यांकन द्वारा यह जाँच की जाएगी कि नए कार्यक्रम के अनुसार क्या विद्यार्थियों को वास्तव में अधिक ज्ञान प्राप्त हुआ है।

(iii) यदि निरीक्षण का उद्देश्य यह है कि शिक्षा में विद्यार्थियों की अपनी आवश्यकताओं की ओर अधिक ध्यान दिया जाए, तो मूल्यांकन का कार्य यह निश्चित करना होगा कि खण्ड अध्ययन, व्यक्तिगत अध्यापन आदि से व्यक्तिगत आवश्यकताओं को कहाँ तक सन्तुष्ट किया जा सका।

4. **भारतीय शिक्षा आयोग** (1964-66) (Indian Education Commission 1964-66) के अनुसार, "अब यह मान लिया गया है कि मूल्यांकन एक सतत् प्रक्रिया है। यह सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था का एक अभिन्न अंग है और अन्तिम रूप से शैक्षिक उद्देश्यों से सम्बन्धित है। यह छात्रों के अध्ययन आदतों तथा अध्यापक की अनुदेशन विधि पर बहुत अधिक प्रभाव डालता है। इस प्रकार शैक्षिक उद्देश्यों के मापन में केवल सहायक ही सिद्ध नहीं होता अपितु उसे सुधारना भी है।"

मूल्यांकन की विशेषताएँ

मूल्यांकन की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

1. मूल्यांकन एक निरन्तर प्रक्रिया है।
2. मूल्यांकन व्यापक धारणा है जिसमें परीक्षा तथा मापन दोनों सम्मिलित हैं।
3. मूल्यांकन केवल मासिक पक्ष ही नहीं अपितु छात्र के विकास का चहुँमुखी पक्ष है।
4. मूल्यांकन केवल अनुदेशन की उपलब्धि को ही नहीं जाँचता वरन् उसको उन्नत भी बनाता है।
5. मूल्यांकन सम्पूर्ण शिक्षा प्रणाली का एक अभिन्न अंग है जो शिक्षा के उद्देश्य, पाठ्यक्रम तथा शिक्षण विधियों से गहरा सम्बन्ध रखता है।
6. मूल्यांकन केवल विद्यार्थियों की कमजोरियों तथा असफलताओं की छानबीन ही नहीं करता, बल्कि उन्हें वांछनीय व्यवहार परिवर्तन की दिशा में उचित सहयोग देता है।
7. मूल्यांकन केवल परम्परागत परीक्षा के साधनों का प्रयोग नहीं करता है, अपितु अनेक प्रकार के नए ढंग के मनोवैज्ञानिक टैस्टों का भी प्रयोग करता है।
8. मूल्यांकन शिक्षण उद्देश्यों में भी परिवर्तन करने में सहायक होता है।

मूल्यांकन की आवश्यकता

शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थी का चहुमुखी विकास है। उसके मानसिक विकास के साथ-साथ शारीरिक, भावात्मक तथा नैतिक विकास का उत्तरदायित्व भी स्कूल पर है।

संक्षेप में मूल्यांकन की आवश्यकता निम्न उद्देश्यों की पूर्ति से है—

1. मूल्यांकन से पता चलता है कि शैक्षिक उद्देश्य की पूर्ति किस सीमा तक होती है।
2. मूल्यांकन से पता चलता है कि अध्यापक की शिक्षा-विधियाँ प्रभावी हैं या नहीं।
3. मूल्यांकन से छात्रों के व्यवहार में आने वाले परिवर्तनों का ज्ञान प्राप्त होता है।
4. मूल्यांकन से छात्रों की उपलब्धि तथा सीमाओं के बारे में जानकारी प्राप्त होती है तथा उसी के अनुसार योजनाएँ बनाई जाती हैं।
5. मूल्यांकन से विद्यार्थियों को उनके अपने बारे में जानकारी मिलती है।
6. मूल्यांकन से पता चलता है कि विषय सामग्री उपयुक्त है अथवा नहीं।
7. मूल्यांकन स्कूलों में प्रवेश का आधार बनाया जाता है।
8. मूल्यांकन परामर्श तथा निर्देशन का आधार बनाया जाता है।
9. मूल्यांकन से विद्यार्थियों के वर्गीकरण में सहायता मिलती है।

For Best PDF, Search on Google - "Nitin Gupta PDF"
Scanned by CamScanner

10. मूल्यांकन पाठ्यक्रम में परिवर्तन लाने में सहायक है।
11. मूल्यांकन छात्रवृत्तियाँ देने में सहायक होता है।
12. मूल्यांकन अध्यापक की कुशलता का परीक्षण करने में सहायक होता है।

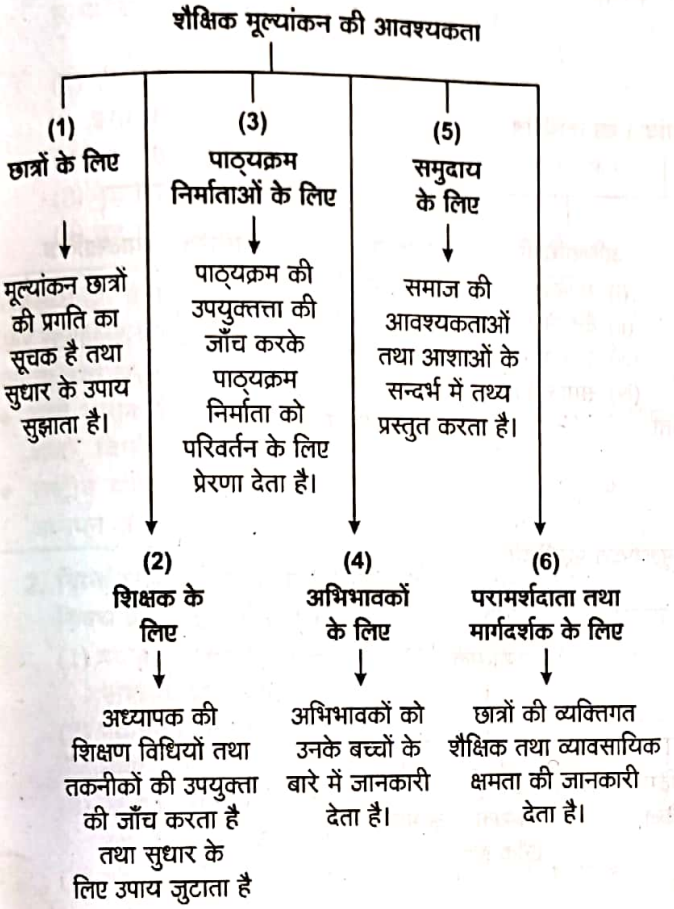
शैक्षिक मूल्यांकन की आवश्यकता
(1) छात्रों के लिए
मूल्यांकन छात्रों की प्रगति का सूचक है तथा सुधार के उपाय सुझाता है।
(3) पाठ्यक्रम निर्माताओं के लिए
पाठ्यक्रम की उपयुक्तता की जाँच करके पाठ्यक्रम निर्माता को परिवर्तन के लिए प्रेरणा देता है।
(5) समुदाय के लिए
समाज की आवश्यकताओं तथा आशाओं के सन्दर्भ में तथ्य प्रस्तुत करता है।
(2) शिक्षक के लिए
अध्यापक की शिक्षण विधियों तथा तकनीकों की उपयुक्ता की जाँच करता है तथा सुधार के लिए उपाय जुटाता है
(4) अभिभावकों के लिए
अभिभावकों को उनके बच्चों के बारे में जानकारी देता है।
(6) परामर्शदाता तथा मार्गदर्शक के लिए
छात्रों की व्यक्तिगत शैक्षिक तथा व्यावसायिक क्षमता की जानकारी देता है।

मूल्याकन का कार्यक्षेत्र

माध्यमिक शिक्षा आयोग ने लिखा है, "आज स्कूल के बच्चे मानसिक विकास के साथ-साथ उसके शारीरिक, सामाजिक और भावात्मक विकास की ओर ध्यान देता है।" संक्षेप में, यह कहा जा सकता है कि आज की शिक्षा बच्चे के पूर्ण व्यक्तित्व का विकास करती है। शिक्षा के इन उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए *विस्तृत मूल्यांकन में निम्न बातें सम्मिलित होनी चाहिए—*

1. पाठ्यक्रम में दिए गए विषयों का मूल्यांकन।
2. कुशलताओं का मूल्यांकन।
3. मूल्यों का मूल्यांकन।
4. शारीरिक विकास का मूल्यांकन।
5. नैतिक विकास का मूल्यांकन।
6. सामाजिक विकास का मूल्यांकन।

■ सतत् तथा व्यापक मूल्यांकन

शिक्षा आयोग 1964-66 ने अनुभव किया कि अब यह मान लिया गया है कि मूल्यांकन एक निरन्तर क्रिया है और शिक्षा-प्रणाली का एक अभिन्न अंग है। मूल्यांकन का सीधा सम्बन्ध शिक्षा के उद्देश्य से होता है। मूल्यांकन विद्यार्थियों के अध्ययन और अध्यापकों की शिक्षण-प्रणाली को बहुत प्रभावित करता है। इस प्रकार मूल्यांकन केवल सफलता अथवा असफलता की जाँच ही नहीं करता, बल्कि शिक्षा में सुधार लाने में भी सहायता देता है।

भारत में मूल्यांकन की प्रचलित (और केवल एकमात्र) प्रणाली लिखित परीक्षा है। स्वाभाविक रूप से नयी मूल्यांकन प्रणाली तब ही स्वीकार की जा सकती है, जब वह लिखित परीक्षाओं को इस प्रकार सुधार दे कि शैक्षिक सफलता की जाँच विश्वासपूर्ण और सरल हो जाए। विद्यार्थियों की कई प्रकार की उन्नति को लिखित परीक्षाओं द्वारा नहीं मापा जा सकता। अत: जाँच को पूर्ण और विश्वसनीय बनाने के लिए निरीक्षण, मौखिक और प्रयोगात्मक परीक्षा जैसे अन्य साधन प्रमाण एकत्र करने के लिए प्रयोग में लाये जाने लगे हैं। छात्रों की शैक्षिक उन्नति अथवा विकास की जाँच करने के लिए मूल्यांकन साधन को सुधारने और विश्वसनीय बनाने की आवश्यकता है।

सतत् तथा व्यापक मूल्यांकनः शिक्षा के उद्देश्यों के सन्दर्भ में

विद्यार्थियों का मूल्यांकन उनको 'पास-फेल' अथवा 'ग्रेड' के लिए नहीं है, जैसा कि परम्परागत परीक्षा प्रणाली में होता था अपितु मूल्यांकन का उद्देश्य विद्यार्थी का चहुंमुखी विकास है। एक दिशा प्रदान करता है जिसको ध्यान में रखकर विद्यार्थी का सतत् विकास किया जाता है। मूल्यांकन केवल बौद्धिक पक्ष का ही नहीं, अपितु विद्यार्थी के सभी पक्षों का है।

सतत् तथा विस्तृत मूल्याकन के निम्नलिखित तीन आधार हैं—

1. शिक्षा के उद्देश्य।
2. शैक्षिक अनुभव, जो विद्यार्थियों को उपलब्ध कराए जा रहे हैं।
3. मूल्यांकन की विधियाँ तथा साधन।

मूल्यांकन तथा शिक्षा के अन्य पक्षों का परस्पर गहरा सम्बन्ध है। मूल्यांकन के आधार पर उद्देश्यों में भी परिवर्तन लाया जाता है।

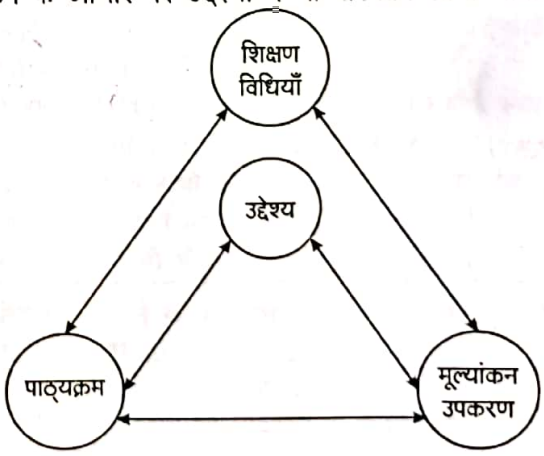

सतत् (निरन्तर) तथा विस्तृत मूल्यांकन के मुख्य तत्त्व इस प्रकार हैं—

1. एक ऐसी मूल्यांकन-प्रक्रिया का कार्यान्वयन करना जिसमें विद्यार्थी के विकास के सभी पक्षों पर ध्यान दिया जाए।
2. मूल्यांकन प्रक्रिया का अध्यापकों, विद्यार्थियों और अभिभावकों द्वारा प्रभावशाली प्रयोग करना।

For Best PDF, Search on Google - "Nitin Gupta PDF"
Scanned by CamScanner

3. आकस्मिक एवं व्यक्तिपरक तत्त्वों को मूल्यांकन विधि से समाप्त करना।
4. रटने और बिना समझे याद करने की विधि को रोकना।
5. विभिन्न प्रकार के प्रश्न-निबधात्यक तथा वस्तुनिष्ठ प्रश्नों की उचित व्यवस्था करना।
6. माध्यमिक स्तर पर चरणबद्ध तरीके से सत्र-प्रणाली को प्रारम्भ करना।
7. पाठान्तर क्रियाओं का विस्तृत आयोजन करना।
8. अंकों के स्थान पर ग्रेडों का प्रयोग करना।

सतत तथा विस्तृत मूल्यांकन का कार्यक्षेत्र

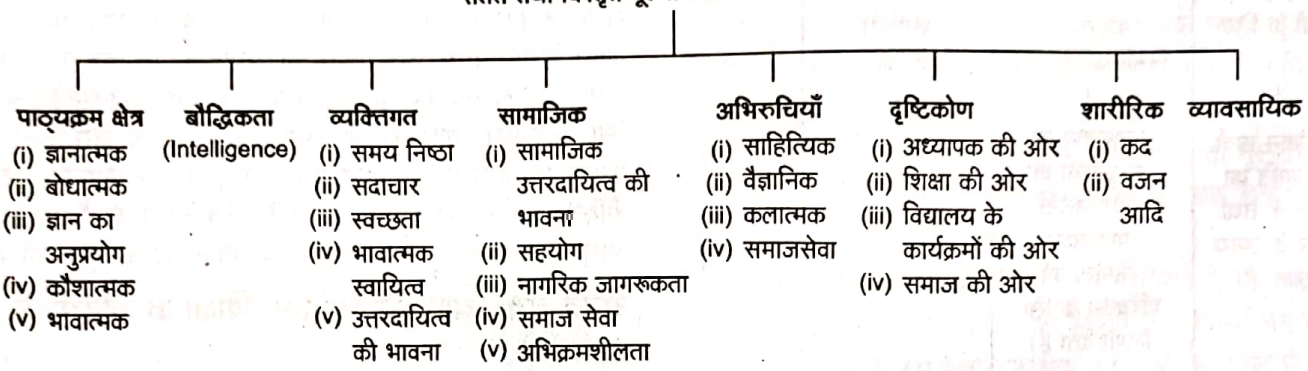

सतत् तथा विस्तृत मूल्यांकन पद्धतियाँ

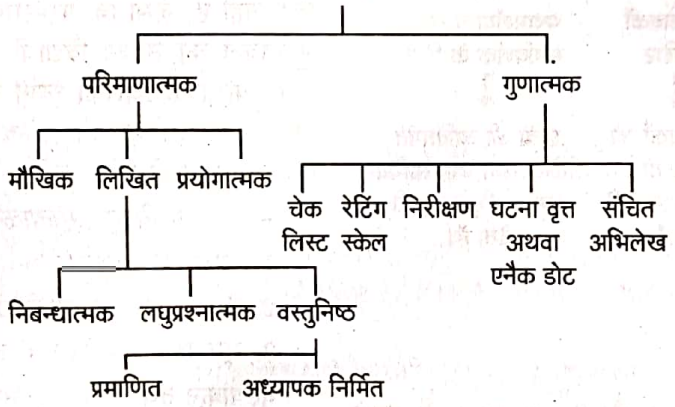

○○○

For Best PDF, Search on Google - "Nitin Gupta PDF"
Scanned by CamScanner

प्रश्नावली

1. पर्यावरण अध्ययन में संकल्पनाओं और मुद्दों को विज्ञान और सामाजिक विज्ञान विषय के रूप में नहीं रखा गया है। क्यों? (CTET 2019)

(1) सी.बी.एस.ई. के द्वारा पर्यावरण अध्ययन के पाठ्यक्रम को इसी प्रकार से निर्धारित किया है।
(2) इस आयु वर्ग के बच्चे अपने परिवेश को समग्र रूप में देखते हैं।
(3) यह शिक्षण-अधिगम की एक अच्छी युक्ति है।
(4) यह पाठ्यक्रम के भार को कम करने के लिए है।

व्याख्या *(2)* पर्यावरण अध्ययन में संकल्पनाओं और मुद्दों को विज्ञान और सामाजिक विज्ञान विषय के रूप में नहीं रखा गया है क्योंकि इस आयु वर्ग के बच्चे अपने परिवेश को समग्र रूप में देखते हैं।

- बच्चे पुस्तक के पृष्ठ को समेकित रूप से 'पढ़ते' हैं, उसमें दिए शब्दों, चित्रों आदि को अलग-अलग नहीं देखते हैं।
- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एन.सी.एफ.) 2005 पर्यावरण अध्ययन को कक्षा तीन से पाँच तक एक विषय के रूप में देखती है।

2. निम्नलिखित में से कक्षा I और II के लिए पर्यावरण अध्ययन विषय के सन्दर्भ में सच है (CTET 2019)

(1) पर्यावरण अध्ययन से सम्बन्धित मुद्दों और सम्बन्धों का संपादन भाषा के द्वारा होता है।
(2) पर्यावरण अध्ययन से सम्बन्धित मुद्दों और सम्बन्धों का संपादन भाषा और गणित के माध्यम से होता है।
(3) कक्षा I और II में पर्यावरण अध्ययन को एक नए विषय के रूप में प्रस्तुत किया गया है।
(4) कक्षा I और II में एक विषय के रूप में पर्यावरण अध्ययन समझने के लिए आसान नहीं है।

व्याख्या *(2)* कक्षा I और II के लिए पर्यावरण अध्ययन विषय के सन्दर्भ में सच है कि पर्यावरण अध्ययन से सम्बन्धित मुद्दों और सम्बन्धों का संपादन भाषा और गणित के माध्यम से होता है।

- कक्षा I और II में यह विषय नहीं हैं।
- यह विषय **विज्ञान, सामाजिक अध्ययन एवं पर्यावरण** से जुड़ी अवधारणाओं और मुद्दों को समेकित रूप से देखता हैं। अतः कक्षा I और II को पर्यावरण के मुद्दों की जानकारी **भाषा और गणित** के माध्यम से दी जाती है।

3. पर्यावरण अध्ययन के पाठ्यक्रम में उपविषयों के स्थान पर थीम को प्रस्तावित किया गया है। क्यों? (CTET 2019)

(1) पर्यावरण अध्ययन में पाठों को कम करने के लिए।
(2) बच्चों के परिवेशीय बोध में वृद्धि करने के लिए।
(3) बच्चों के स्थानीय परिवेश के मुद्दों से जुड़े हुए और अन्तः सम्बन्धित समझ के विकास के लिए।
(4) उपविषयों की तुलना में थीम आधारित पर्यावरण अध्ययन का संपादन आसान है।

व्याख्या *(3)* पर्यावरण अध्ययन के पाठ्यक्रम में उपविषयों के स्थान पर थीम को प्रस्तावित किया गया है क्योंकि यह बच्चों के स्थानीय परिवेश के मुद्दों से जुड़े हुए और अन्तः सम्बन्धित समझ के विकास के लिए है।

- थीम की गहरी समझ बनाने के लिए उपविषयों के स्थान पर थीम को प्रस्तावित किया गया है।

4. निम्नलिखित में से कौन-सा वर्तमान पर्यावरण अध्ययन पाठ्यक्रम के छः मुख्य थीमों में से एक नहीं है? (CTET 2019)

(1) भोजन
(2) आवास
(3) हम चीजें कैसे बनाते है
(4) काम और खेल

व्याख्या *(4)* वर्तमान पर्यावरण अध्ययन पाठ्यक्रम की छः मुख्य थीमों में काम और खेल नहीं है।

- नए पाठ्यक्रम में इस विषय को जिन छः थीमों में बाँटा गया है वे हैं–
  (1) परिवार एवं मित्र जिसकी चार उप थीम हैं
  (1.1) आपसी सम्बन्ध, (1.2) काम और खेल, (1.3) जानवर और (1.4) पौधे।
- अन्य थीमें हैं–(2) भोजन, (3) पानी, (4) आवास, (5) यात्रा और (6) हम चीजें कैसे बनाते हैं?

5. निम्नलिखित में से कौन-सा एक पर्यावरण अध्ययन के सम्बन्ध में सच नहीं है? (CTET 2019)

(1) पर्यावरण अध्ययन की प्रकृति एकीकृत है।
(2) पर्यावरण अध्ययन बालकेन्द्रित अध्ययन है।
(3) पर्यावरण अध्ययन बच्चों को अपने परिवेश को खोजने का अवसर देता है।
(4) पर्यावरण अध्ययन वर्णनों और परिभाषाओं पर बल देता है।

व्याख्या *(4)* पर्यावरण अध्ययन वर्णनों और परिभाषाओं पर बल देता है–यह पर्यावरण अध्ययन के सम्बन्ध में सच नहीं है।

- पर्यावरण अध्ययन की प्रकृति एकीकृत है क्योंकि यह विषय विज्ञान, सामाजिक अध्ययन, एवं पर्यावरण से जुड़ी अवधारणाओं और मुद्दों को समेकित रूप में देखता है।
- पर्यावरण अध्ययन बाल केन्द्रित अध्ययन है ताकि बच्चे स्वयं खोज करके सीखें तथा रटने की मजबूरी से बचे रहें।
- पर्यावरण अध्ययन बच्चों को स्वयं ज्ञान रचने में सहायक भूमिका निभाता है ताकि बच्चे अपने आसपास के लोगों से, परिवेश से और समाचार-पत्रों से भी सीखें।

6. निम्नलिखित में से क्या एक पर्यावरण-अध्ययन में ज्ञान की रचना में बहुत ही महत्त्वपूर्ण है?

1. **बच्चों की सक्रिय भागीदारी।**
2. **बच्चों के ज्ञान को शिक्षकों के ज्ञान से जोड़ना।**
3. **पर्यावरण अध्ययन को कक्षा की चार दीवारी से बाहर सीखना।**
4. **बच्चों के स्थानीय ज्ञान को विद्यालय के ज्ञान के सम्बन्धित करना। (CTET 2019)**

(1) 1, 3 और 4 (2) केवल 4
(3) केवल 1 (4) केवल 1 और 4

For Best PDF, Search on Google - "Nitin Gupta PDF"
Scanned by CamScanner

व्याख्या *(1)* पर्यावरण-अध्ययन में ज्ञान की रचना में बच्चों की सक्रिय भागीदारी, पर्यावरण अध्ययन को कक्षा की चार दीवारी से बाहर सीखना और बच्चों के स्थानीय ज्ञान को विद्यालय के ज्ञान से सम्बन्धित करने में बहुत ही महत्त्वपूर्ण है।

- ज्ञान सृजन के लिए बच्चों का क्रियात्मक रूप से शामिल होना आवश्यक है।
- पर्यावरण अध्ययन की पढ़ाई को कक्षा की चार दीवारी के बाहर से जोड़ा गया है ताकि विद्यार्थी कक्षीय ज्ञान को बाहरी परिवेश से अन्तः सम्बन्ध स्थापित कर समझ सके।
- बच्चों में अवलोकन क्षमता विकसित करने के लिए उनको बाग-बगीचे, तालाब के किनारे प्रकृति भ्रमण पर ले जाने की आवश्यकता है ताकि विद्यालय के ज्ञान को स्थानीय ज्ञान से सम्बन्धित किया जा सके।

7. पर्यावरण अध्ययन में बच्चों को जोड़ने की सबसे प्रभावशाली युक्ति ..... है। **(CTET 2019)**

(1) किस्से कहानियाँ
(2) पाठ्यपुस्तक का पठन
(3) शिक्षक द्वारा व्याख्याएँ
(4) कक्षा निदर्शन

व्याख्या *(1)* पर्यावरण अध्ययन में बच्चों को जोड़ने की सबसे प्रभावशाली युक्ति किस्से कहानियाँ है।

- बच्चें कहानी के पात्रों से स्वयं को आसानी से जोड़ पाते हैं इसलिए किस्से-कहानियाँ, संवाद, कविताएँ, हास्य खण्ड, पहेलियाँ, क्रियाकलाप आदि पर्यावरण अध्ययन में बच्चों को जोड़ने की सबसे प्रभावशाली युक्तियाँ हैं।

8. पर्यावरण-अध्ययन में बच्चों को पाठ्यपुस्तकों और शिक्षकों के अलावा अन्य स्रोतों की मदद लेने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। क्यों?

(1) पर्यावरण-अध्ययन सीखने के लिए पाठ्यपुस्तक और शिक्षक ही स्रोत नहीं हैं।
(2) यह पर्यावरण-अध्ययन सीखने के लिए समुदायों और माता-पिता की उपस्थिति का विकास करेगा।
(3) यह शिक्षकों को बच्चों की पृष्ठभूमि को जानने का अवसर देगा।
(4) यह बच्चों के सौन्दर्यगत और मनोक्रियात्मक कौशल का विकास करेगा। **(CTET 2019)**

(1) केवल 2 और 3 (2) 1, 2 और 3
(3) 2, 3 और 4 (4) केवल 3 और 4

व्याख्या *(2)* पर्यावरण-अध्ययन में बच्चों को पाठ्यपुस्तकों और शिक्षकों के अलावा अन्य स्रोतों की मदद लेने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए क्योंकि

- अन्य स्रोत जैसे-परिवार के सदस्य, समुदाय के लोग, समाचार-पत्र एवं पुस्तकें इत्यादि भी पर्यावरण-अध्ययन के लिए बच्चों को प्रोत्साहित करते हैं।
- इन स्रोतों की सहायता लेने से बच्चों के अभिभावकों और समाज का विद्यालय से जुड़ाव तो होगा, साथ ही उनका योगदान भी बढ़ेगा।
- शिक्षकों को भी बच्चों के परिवारों के बारे में जानने का अवसर प्राप्त होगा।

9. एक शिक्षक हमेशा क्रियाकलापों को करने के बाद प्रश्नों और चर्चाओं का संचालन करता है।
क्रियाकलापों, प्रश्नों और चर्चाओं के संचालन करने का उद्देश्य ..... है।

(1) बच्चों की प्रक्रिया कौशलों का आकलन।
(2) बच्चों को खोजने का अवसर देना।
(3) बच्चों को अपनी अभिव्यक्ति का अवसर देना।
(4) बच्चों में उनके सीखने की गति के आधार पर विभेद करना। **(CTET 2019)**

(1) केवल 4 (2) केवल 3
(3) 2, 3 और 4 (4) 1, 2 और 3

व्याख्या *(4)* शिक्षक द्वारा क्रियाकलापों, प्रश्नों और चर्चाओं के संचालन करने का उद्देश्य बच्चों की प्रक्रिया कौशलों का आकलन, खोजने के अवसर देना एवं बच्चों को अपनी अभिव्यक्ति का अवसर देना है।

- शिक्षक को चाहिए कि वह विभिन्न परिस्थितियों, जैसे–अवलोकन करना, प्रश्न पूछना, ड्रॉइंग अथवा चित्रकारी करना, समूह में चर्चा करना आदि के दौरान बच्चों के कौशलों का आकलन करें।
- बच्चों में सृजनात्मकता को उभारने, रचनात्मक करने का कौशल एवं सौन्दर्य बोध का विकास करने के लिए आवश्यक है कि बच्चों को सीखने के अवसर उपलब्ध कराए जाए।
- बच्चों की अभिव्यक्ति की प्रशंसा की जाए, उनकी रचनात्मकता को नकारा न जाए।

10. एक शिक्षक, "खाना किस प्रकार से खराब होता है," पर एक प्रयोग करता है।
शिक्षक बच्चों के समूह बनाकर उनको प्रयोग से सम्बन्धित सामग्री देता है। शिक्षक बच्चों के समूह क्यों बनाता है?

(1) यह सहपाठी अधिगम का समर्थन करता है।
(2) यह बच्चों की सामाजिक अन्तःक्रिया में सुधार करता है।
(3) समूह अधिगम बिना बोझ के पर्यावरण अध्ययन के अधिगम का प्रभावशाली तरीका है।
(4) कक्षा में अनुशासन को बनाए रखने के लिए समूह में अधिगम एक महत्त्वपूर्ण युक्ति है। **(CTET 2019)**

(1) केवल 1 और 2 (2) केवल 3 और 4
(3) केवल 1 और 3 (4) केवल 2 और 4

व्याख्या *(1)* शिक्षक द्वारा बच्चों का समूह कार्य करवाया जाना सहपाठी अधिगम का समर्थन करता है और यह बच्चों की सामाजिक अन्तःक्रिया में सुधार करता है।

- समूह में किए गए पारस्परिक क्रियाकलापों से बच्चे बहुत कुछ सीखते हैं। इसके अतिरिक्त इससे समूह में कार्य करने की क्षमता का विकास होता है।
- छोटे समूह या बड़े समूह में काम करके बच्चे आनंदित एवं प्रेरित होते हैं।

11. निम्नलिखित में से क्या पर्यावरण-अध्ययन में आकलन के लिए संकेतक नहीं होना चाहिए? **(CTET 2019)**

(1) न्याय और समानता के प्रति सरोकार
(2) सहभागिता
(3) याद करना
(4) प्रश्न पूछना

For Best PDF, Search on Google - "Nitin Gupta PDF"
Scanned by CamScanner

व्याख्या *(3)* याद करना पर्यावरण अध्ययन में आकलन के लिए संकेतक नहीं होना चाहिए।

- पर्यावरण-अध्ययन में आकलन के लिए न्याय और समानता के प्रति सरोकार, सहभागिता, प्रश्न पूछना के अतिरिक्त चर्चा करना, अभिव्यक्ति, व्याख्या, वर्गीकरण, विश्लेषण, प्रयोग करना आदि भी आकलन के संकेतकों में सम्मिलित है।

12. पर्यावरण अध्ययन में शिक्षक के द्वारा बच्चों को स्वयं अपने का आकलन के लिए अवसर देना चाहिए। स्व:आकलन है **(CTET 2019)**

(1) सी.सी.ई.
(2) सीखने के समान आकलन
(3) सीखने का आकलन
(4) सीखने के लिए आकलन

व्याख्या *(2)* स्व: आकलन **सीखने के समान आकलन** है।

- बच्चों के अपने विचार, अवलोकन की रिपोर्ट, स्वयं के अनुभव की अभिव्यक्ति, किसी बात के लिए तर्क, प्रयोग के बाद उसके परिणाम आदि ऐसे अवसर हैं जिनसे गुणात्मक रूप से बच्चों को स्वयं पता चलता है कि वे क्या-क्या सीख चुके हैं और क्या सीख रहे हैं एवं सीखने में कहाँ कठिनाई आ रही है।

13. निम्नलिखित में से कौन पर्यावरण अध्ययन का उद्देश्य नहीं है? **(CTET 2019)**

(1) बच्चों की जिज्ञासा और सृजनात्मकता का पोषण करना।
(2) परिवेशीय मुद्दों पर जागरूकता का विकास करना।
(3) बच्चे को स्वयं अपने हाथ से कार्य करने और खोजने को क्रियाकलापों से जोड़ना।
(4) बच्चों को पाठ्यपुस्तक की परिभाषाएँ प्रदान करने के लिए प्रोत्साहित करना।

व्याख्या *(4)* बच्चों को पाठ्यपुस्तक की परिभाषाएँ प्रदान करने के लिए प्रोत्साहित करना पर्यावरण अध्ययन का उद्देश्य नहीं है।

- पर्यावरण अध्ययन की पाठ्यपुस्तक में परिभाषाएँ, वर्णन, अमूर्त प्रत्यय को स्थान नहीं देना चाहिए क्योंकि ये रटने की प्रवृत्ति को प्रबल बनाते हैं।
- पर्यावरण अध्ययन का उद्देश्य मात्र जानकारी देना नहीं है बल्कि बच्चों को ऐसे अवसर प्रदान करना है जिससे कि वे अपने विचार प्रकट करें, उत्सुक बनें, करके देखें और सीखें, प्रश्न पूछें तथा प्रयोग करें।

14. पर्यावरण अध्ययन में चित्र पढ़ना एक महत्त्वपूर्ण क्रियाकलाप है। निम्नलिखित में से कौन-सा/से संकेतक/संकेतकों का बच्चों में आकलन चित्र पढ़ने के द्वारा हो सकता है?
(1) अवलोकन और अभिलेखन
(2) अभिव्यक्ति
(3) विश्लेषण
(4) प्रयोग करना **(CTET 2019)**

(1) केवल 4 (2) 1, 2 और 3
(3) केवल 1 और 3 (4) केवल 1 और 2

व्याख्या *(2)* पर्यावरण अध्ययन में चित्र पढ़ना एक महत्त्वपूर्ण क्रियाकलाप है। अत: चित्र पढ़ने से बच्चों के अवलोकन और अभिलेखन, अभिव्यक्ति एवं विश्लेषण संकेतकों का आकलन हो सकता है।

15. अभय ने अपने छात्रों से उन बीमारियों पर समूहों में एक सर्वेक्षण करने के लिए कहा जिनसे उनके पड़ोस के लोग पीड़ित थे। पाठ्यपुस्तक में सर्वेक्षण का उल्लेख नहीं किया गया है। इस शिक्षण-अधिगम की रणनीति के लिए कौन-सा विकल्प प्रासंगिक नहीं है? **(CTET 2018)**

(1) इसने बच्चों को डेटा हैंडलिंग समझने और एक साथ काम करने में सक्षम बनाया।
(2) इससे समुदाय को उन बीमारियों को समझने में मदद मिली जिनसे वे पीड़ित थे।
(3) इसने समुदाय के साथ बातचीत करने का अवसर प्रदान किया।
(4) इससे बच्चों को वास्तविक जीवन के साथ सीखने में मदद मिली।

व्याख्या *(2)* सर्वेक्षण वह गतिविधि है जिसके **अन्तर्गत निरीक्षण** एवं **अवलोकन** किया जाता है। यह **वास्तविक परिस्थितियों** पर आधारित होता है।

- सूचनाओं को प्राप्त करने के लिए लोगों के बीच जाकर, उनसे बातचीत एवं विचार-विमर्श करके समस्या के कारणों को ज्ञात किया जाता है, जिससे कि वास्तविक समस्या तक पहुँचा जा सके।
- समस्या के कारणों का ज्ञान होने पर प्राप्त सूचनाओं से आँकड़े (डेटा) प्राप्त होते हैं, जिससें बच्चों को डेटा हैंडलिंग की अवधारणा का ज्ञान होता है।
- अत: विकल्प 2 इस शिक्षण-अधिगम की रणनीति के लिए सही विकल्प नहीं है। क्योंकि (प्रश्न में) सर्वेक्षण विद्यालय आधारित गतिविधि है। इससे प्राप्त सूचनाएँ सार्वजनिक न होकर केवल अध्यापक एवं छात्रों के मध्य ही सीमित रहेगी, न कि समुदाय की जानकारी के लिए है।

16. आपातकालीन परिस्थितियों के बारे में बात करने के लिए प्रिया ने बच्चों के अनुभव पूछे जब उन्हें कभी आपात स्थिति का सामना करना पड़ा। बच्चों ने आग, बिजली के झटके और सड़क दुर्घटनाओं के साथ अपने अनुभव सुनाए। उन्होंने प्रश्न पूछे, उनकी मौजूदा समझ का आकलन किया और समाचार-पत्रों से सड़क सुरक्षा विज्ञापनों जैसे संसाधनों का उपयोग करके सुरक्षा पहलुओं पर चर्चा की और क्रमश: आग और बिजली के झटके पर सुरक्षा दिशानिर्देशों पर चर्चा के लिए एल.पी.जी. और इलेक्ट्रिक बिल का इस्तेमाल किया। प्रिया द्वारा अपनाया गया सबसे उपयुक्त दृष्टिकोण कौन-सा है? **(CTET 2018)**

(1) अन्वेषण दृष्टिकोण
(2) मानववादी दृष्टिकोण
(3) संज्ञानात्मक दृष्टिकोण
(4) अनुभवात्मक अधिगम दृष्टिकोण

व्याख्या *(1)* अन्वेषण दृष्टिकोण ऐसा दृष्टिकोण है, जिसमें विद्यार्थी केन्द्र में होता है, शिक्षक केवल **एक संसाधन** (facilitator) के रूप में होता है।

- इस दृष्टिकोण में "हमें कैसे पता चलता है" पर अधिक बल दिया जाता है न कि "हम क्या जानते हैं"। अर्थात् विद्यार्थी स्वयं अन्वेषण, खोज, क्रिया करके, सीखते हैं। शिक्षक केवल विद्यार्थियों की सहायता के लिए उपस्थित रहते हैं ताकि कोई समस्या होने पर विद्यार्थियों को मार्गदर्शन दिया जा सके। विद्यार्थी भी सक्रिय होकर अपने ज्ञान का निर्माण करते हैं, जिससे उनकी ज्ञान सम्बन्धी सूचनाएँ बढ़ती रहती है और संप्रत्यय का निर्माण होता रहता है।

For Best PDF, Search on Google - "Nitin Gupta PDF"
Scanned by CamScanner

- प्रश्न के अन्य विकल्पों से, मानवतावादी दृष्टिकोण में बालक के संपूर्ण व्यक्तित्व के विकास पर बल दिया जाता है विशेषतः संवेगात्मक विकास पर। क्योंकि संवेगात्मक विकास सही दिशा में होने पर बालक हर क्षेत्र में संतोषजनक प्रगति कर पाता है।
- संज्ञानात्मक दृष्टिकोण, संज्ञान से तात्पर्य मानसिक क्रियाओं से होता है जिसमें सोचना, याद करना, सीखना, भाषा का प्रयोग करना, कल्पना करना आदि शामिल हैं। यह दृष्टिकोण सूचनाओं, ज्ञान या संप्रत्ययों की समझ एवं उनके बोध पर आधारित है।
- अनुभवात्मक अधिगम दृष्टिकोण अनुभव पर आधारित है। यह अनुभव ''स्वयं करके सीखना'' से प्रबल होता है।

17. 'समुदाय' एक महत्त्वपूर्ण शिक्षण और अधिगम संसाधन है, क्योंकि– **(CTET 2018)**

(1) यह वास्तविक परिस्थिति में सीखने का अवसर प्रदान करता है
(2) कोई भी समुदाय में उपलब्ध समस्त ज्ञान को बिना आलोचना के स्वीकार कर सकता है
(3) यह सस्ता और सुलभ है
(4) बुजुर्ग लोग बुद्धिमान हैं और उनके पास समय है

व्याख्या *(1)* समुदाय अर्थात् लोगों का समूह। समुदाय में रहने वाले व्यक्तियों के समुदाय के प्रति कुछ उत्तरदायित्व होते हैं। ये उत्तरदायित्व व्यक्ति को समुदाय के लिए कुछ सकारात्मक करने के लिए प्रोत्साहित करती है।

- विद्यालय में शिक्षार्थियों को बताया एवं सिखाया जाता है कि अपनों से बड़ों व छोटों का सम्मान, बुजुर्गों की सेवा, दिव्यांगजनों के लिए उदारता एवं उनकी सहायता के लिए तत्पर रहना चाहिए जैसे मूल्य सिखाए जाते हैं।
- यही सीख यदि शिक्षार्थी अपने विद्यालय से बाहर वास्तविक जीवन की परिस्थितियों में प्रयोग में लाता है तो विद्यालय समुदाय की आवश्यकताओं को पूरा करने वाला स्रोत बन जाता है।
- अतः समुदाय वह मंच है जो बालक के लिए महत्त्वपूर्ण शिक्षण और अधिगम संसाधन उपलब्ध करवाता हैं। क्योंकि बालक विद्यालय में रहते हुए समुदाय के लिए तैयार हो रहा होता है।

18. ई.वी.एस. शिक्षण-अधिगम में कक्षा में प्राप्त अधिगम को विद्यालय के बाहर के जीवन से जोड़ने और इसे समृद्ध करने का तात्पर्य है **(CTET 2018)**

(1) पूर्ण विद्यालय दृष्टिकोण
(2) पाठ्यचर्या से बाहर जाना
(3) पाठ्यपुस्तकों से बाहर जाना
(4) वैश्विक पर्यावरणीय मुद्दों और चिंताओं को पाठ्यपुस्तकों से लिंक करना

व्याख्या *(3)* राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा, 2005 (NCF 2005) उल्लेख करती है कि **बच्चों के स्कूली जीवन को बाहर के जीवन से जोड़ा जाना चाहिए।**

- **यह सिद्धान्त किताबी ज्ञान की उस विरासत के विपरीत है जिसके प्रभाववश हमारी व्यवस्था आज तक स्कूल और घर के बीच अंतराल बनाये हुए है।**
- शिक्षण अधिगम को जीवंत बनाने के लिए आवश्यक है **कि बच्चों को जो भी पढ़ाया या सिखाया जा रहा है वह उनके वास्तविक जीवन एवं अनुभवों से मेल खाता हो।**

19. कक्षा III के छात्रों को रमा ने सिखाया कि पिता, माँ और उनके बच्चे एकल परिवार का गठन करते हैं और यदि दादा-दादी एवं अन्य रिश्तेदार साथ रहते हैं, तो यह एक विस्तारित परिवार है। आप इस बारे में क्या सोचते हैं? **(CTET 2018)**

(1) शिक्षण-अधिगम दृष्टिकोण समावेशी नहीं है।
(2) परिवार की अवधारणा को इसी तरह सिखाया जाना चाहिए।
(3) परिवार की परिभाषा गलत है।
(4) रमा अपने छात्रों के प्रति असंवेदनशील है।

व्याख्या *(1)* समावेशी का अर्थ है सभी को शामिल करना।

- परिवार वह इकाई है जिसमें सभी पारिवारिक सदस्य आपस में मिल-जुल कर अपनी आवश्यकताओं एवं उत्तरदायित्वों की पूर्ति करते हैं।
- उपर्युक्त प्रश्न में परिवार के प्रकार बताए गए हैं, समावेशी अवधारणा को स्पष्ट नहीं किया गया है।

20. निम्नलिखित में से कौन-सी ई.वी.एस. कक्षा में गतिविधि है/गतिविधियाँ हैं? **(CTET 2018)**

(1) फील्ड भ्रमण
(2) श्यामपट्ट का उपयोग
(3) चित्र पढ़ना
(4) उपर्युक्त सभी

व्याख्या *(4)* पर्यावरण अध्ययन का अर्थ है अपने चारों ओर के वातावरण को समझना। इसके लिए विद्यालयों द्वारा शिक्षार्थियों को फील्ड भ्रमण (पिकनिक, किसी फैक्ट्री का अवलोकन, किसी खेत का अवलोकन) करवाया जाता है ताकि संप्रत्यय का पूर्ण बोध एवं समझ विकसित हो।

- श्यामपट्ट का उपयोग करने से कक्षा में सजीवता बनी रहती है, शिक्षार्थियों का ध्यान पढ़ाई में लगा रहता है।
- चित्र पढ़ने से तात्पर्य है चित्र को देखकर सूचना ग्रहण करना। इससे शिक्षार्थी वाक्यों का निर्माण करना एवं व्याख्या करना सीखते हैं।। अतः सभी विकल्प सही हैं।

21. पर्यावरण अध्ययन पाठ्यक्रम बच्चों की समग्र शिक्षा का कारण बन सकता है यदि यह है **(UPTET 2018)**

(1) समावेशी (2) विषयगत
(3) एकीकृत (4) उपर्युक्त सभी

व्याख्या *(4)* पर्यावरण अध्ययन एक ऐसा विषय है जो अपने में चारों ओर के वातावरण को शामिल करता है। शिक्षण के सन्दर्भ में यह समावेशी, विषयगत विषय एवं एकीकृत तीनों ही आयामों को शामिल करता है। समावेशी के रूप में, पर्यावरण अध्ययन के पाठ्यक्रम को इतिहास, भूगोल, विज्ञान आदि जैसे विषयों के साथ जोड़कर पढ़ाया जा सकता है।

- विषयगत के रूप में–पुस्तक का किसी विषय से सम्बन्धित होना, जैसे पाठ्यपुस्तक प्रसंग को किसी विशेष पाठ के अंतर्गत शामिल करके बच्चों को पढ़ाना।
- एकीकृत के रूप में–केवल पर्यावरण अध्ययन विषय को ही पढ़ना।
- इस प्रकार पर्यावरण अध्ययन पाठ्यक्रम में बच्चों की समग्र शिक्षा के लिए समावेशी, विषयगत, व एकीकृत तीनों ही सम्मिलित हैं।

For Best PDF, Search on Google - "Nitin Gupta PDF"
Scanned by CamScanner

22. ई. वी.एस. पाठ्यपुस्तक में सपेरों पर एक अध्याय है। इसका उद्देश्य बच्चों को जागरूक करना और संवेदनशील बनाना है (UPTET 2018)

(1) कि सपेरे साँपों को नुकसान नहीं पहुँचाएँ और उन्हें अपनी आजीविका से वंचित करने से पहले विकल्पों को प्रदान करने की आवश्यकता है
(2) कि पशुपालन आजीविका का अच्छा स्रोत है
(3) कि यह एक अवैध कार्य है
(4) सपेरों के लिए क्योंकि बच्चे इन दिनों अक्सर उन्हें नहीं देखते हैं

व्याख्या *(1)* पर्यावरण अध्ययन की पाठ्यपुस्तक में साँप एवं सपेरों के संबंध में वर्णन इसलिए है ताकि बच्चों को साँप एवं सपेरों के जीवन की परिस्थितियों का ज्ञान हो। उनके जीवन-यापन के तरीकों का ज्ञान हो।
- बच्चे यह समझे कि साँप व सपेरे अपना जीवन यापन करने के लिए ऐसा करते हैं, उनका उद्देश्य साँपों को नुकसान पहुँचाना नहीं होता। यह उनका पारम्परिक कार्य होता है जो उनके पूर्वजों द्वारा उन्हें सौंपा जाता है।

23. पर्यावरण अध्ययन के संदर्भ में 'बोझ के बिना सीखना' क्या बताता है? (UPTET 2018)

(1) अबोध का भार कम करने की जरूरत है
(2) ई.वी.एस. पाठ्यक्रम को आधा कम करने की जरूरत है।
(3) स्कूल-बैग का कम वजन
(4) ई.वी.एस. पाठ्यपुस्तकों में अध्यायों की कम संख्या

व्याख्या *(1)* **'बोझ के बिना सीखना' यशपाल समिति, 1993 में प्रस्तावित एक रिपोर्ट थी, जिसका 'शीर्षक शिक्षा बिना बोझ के' था।** इस रिपोर्ट में शिक्षा के भार को कम करने पर जोर दिया गया। यह भार निम्न क्षेत्रों में समझा जा सकता है**–1. पाठ्यक्रम का बहुत ज्यादा होना जोकि निश्चित अवधि में पूरा करना कठिन होता था। 2. बच्चों के मानसिक स्तर का किताबों के स्तर या भाषा से मेल न होना, 3. किताबों की भाषा का उच्च स्तर का होना आदि।**
- ये सभी तथ्य **अबोध (बच्चा)** के लिए बोझ की तरह होते हैं, अतः 'बोझ के बिना सीखना' पर्यावरण अध्ययन में इस संदर्भ में शामिल है कि विद्यार्थी पढ़ने के लिए तत्पर रहें, उन्हें शिक्षा बोझ न लगे, वे ज्ञान को जीवन की वास्तविक स्थिति से मिलान कर पाए।

24. ई. वी.एस. कक्षा में समूह में सीखने का क्या उद्देश्य है? (UPTET 2018)

(1) सहयोग के मूल्यों को लागू करने और एक साथ काम करने के लिए प्रत्येक बच्चे को सक्रिय रूप से भाग लेने और सीखने में सक्षम बनाना
(2) छात्रों को आसानी से प्रबंधित करना और वर्कलोड को कम करना
(3) लड़के और लड़कियाँ अलग-अलग सीख सकते हैं
(4) कम और उच्च प्रदर्शन करने वाले छात्रों को अलग करना और उपचारात्मक शिक्षण देना

व्याख्या *(1)* समूह में रहकर बालक सहयोग की प्रवृत्ति, दूसरों के लिए सम्मान, उनकी आवश्यकताओं के प्रति संवेदनशील होना सीखता है जिससे सभी बच्चे मिल-जुलकर सक्रिय रूप से सीखने को आसान बनाते हैं।

25. 'बाला (BALA)' का पूरा रूप क्या है? (UPTET 2018)

(1) अधिगम सहायक के रूप में बिल्डिंग
(2) ब्रेल सहायता-प्राप्त अधिगम आकलन
(3) मस्तिष्क सहायता-प्राप्त अधिगम असाइन्मेंट
(4) अधिगम सहायक के रूप में ब्रेल

व्याख्या *(1)* BALA का पूर्ण विस्तारित रूप है–**Building as Learning Aid** अर्थात् **विद्यालय की दीवारों, सीढ़ियों, दरवाजों पर शैक्षिक जानकारी लिखा होना** जैसे गिनती, वर्णमाला, चित्रों का दरवाजों एवं सीढ़ियों पर चित्रित होना।
- इसका उद्देश्य है कि शिक्षार्थी खेल-खेल में रोचक ढंग से निरन्तर सीखते रहें और ज्ञान स्थायी होता रहे।

26. 'वैकल्पिक ढाँचे' का क्या अर्थ है? (UPTET 2018)

(1) वर्तमान में वैज्ञानिकों और सामाजिक वैज्ञानिकों द्वारा आयोजित विचार
(2) सभी विचार जो दृढ़ता से बच्चों द्वारा अर्जित किए जाते हैं
(3) विभिन्न भौतिक घटनाओं का पाठ्यपुस्तक स्पष्टीकरण
(4) विचार, जो अवधारणाओं के औपचारिक रूप से स्वीकृत स्पष्टीकरण से अलग हैं

व्याख्या *(4)* 'वैकल्पिक ढाँचे' का अर्थ है विचार, जो अवधारणाओं के औपचारिक रूप से स्वीकृत स्पष्टीकरण से अलग है।

27. किस राष्ट्रीय पाठ्यचर्या फ्रेमवर्क (एन.सी.एफ.) ने प्राथमिक स्तर पर एक एकीकृत पाठ्यचर्या क्षेत्र के रूप में पढ़ाए जाने के लिए पर्यावरण अध्ययन की सिफारिश की? (CTET 2018)

(1) एन.सी.एफ.–2000 (2) एन.सी.एफ.–1975
(3) एन.सी.एफ.–2005 (4) एन.सी.एफ.–1988

व्याख्या *(2)* राष्ट्रीय पाठ्यचर्या फ्रेमवर्क (NCF)-1975, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या फ्रेमवर्क-**1975, 1988, 2000** और **2005** में से प्रकाशित एक रूपरेखा है। ये सभी **राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद-(NCERT)** द्वारा प्रकाशित हुई थीं।
- NCF-1975 में प्राथमिक स्तर पर एक एकीकृत पाठ्यचर्या क्षेत्र के रूप में पढ़ाए जाने के लिए पर्यावरण अध्ययन की सिफारिश की गई थी।

28. पर्यावरण अध्ययन की अपनी कक्षा में समूह क्रियाकलाप का निर्माण करते हुए आप निम्नलिखित विचारों में से किनका ध्यान रखेंगे?
A. बच्चों की रुचियों का ध्यान हो।
B. लड़कों और लड़कियों को समान रूप से रुचिकर लगे। इसमें मूल्यवान सामग्री लगी हो।
सभी धार्मिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के बच्चों को रुचिकर लगे। (CTET 2016)

(1) B और C (2) A, B और D
(3) A, C और D (4) B और D

व्याख्या *(2)* पर्यावरण अध्ययन की अपनी कक्षा में समूह क्रियाकलाप का निर्माण करते हुए बच्चों की रुचियाँ, लड़कों और लड़कियों की समान रुचि को ध्यान में रखना चाहिए जो सभी धार्मिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के बच्चों को रुचिकर लगे।

For Best PDF, Search on Google - "Nitin Gupta PDF"
Scanned by CamScanner

29. निम्नलिखित सभी कथन पर्यावरण अध्ययन में सामूहिक रूप से क्रियाकलापों में संलग्न शिक्षकों और विद्यार्थियों के पक्ष में तर्क प्रस्तुत करते हैं, केवल एक कथन को छोड़कर। वह कथन कौन-सा है? **(CTET 2016)**

(1) बच्चे परस्पर सामंजस्य और सहयोग करना सीखते हैं
(2) बच्चे दूसरे बच्चों से बात और बहस करने से अधिक सीखते हैं
(3) समूह क्रिया-कलापों की वजह से बच्चे अंक उपलब्धि में अच्छा सुधार प्रदर्शित करते हैं
(4) प्रौढ़ों के समर्थन से बच्चों को अपनी क्षमता से अधिक ज्ञान के निर्माण में सहायता मिल सकती है

व्याख्या *(4)* सामूहिक क्रियाकलापों में बच्चे प्रौढ़ों से सीख सकते हैं। यह कथन गलत है क्योंकि प्रौढ़ो द्वारा समर्थन विद्यालयी पर्यावरण का भाग नहीं हैं।
- बच्चे समूह में परस्पर सामंजस्य और सहयोग से सीखते हैं तथा सामूहिक क्रियाकलापों से बच्चों में बहस होने से वे अधिक सीखते हैं।

30. समूह कार्य से पर्यावरण अध्ययन कर रहे बच्चों की सामाजिक-वैयक्तिक विशेषताओं के आकलन के लिए निम्नलिखित में से कौन-सा उपकरण सर्वाधिक उपर्युक्त होगा? **(CTET 2016)**

(1) दत्तकार्य (2) कागज-पेन्सिल परीक्षण
(3) मौखिक प्रश्न (4) निर्धारण मापनियाँ

व्याख्या *(3)* समूह कार्य से पर्यावरण अध्ययन कर रहे बच्चों की सामाजिक वैयक्तिक विशेषताओं के आकलन के लिए मौखिक प्रश्न सबसे उपर्युक्त है।
- मौखिक प्रश्नों के माध्यम से एक शिक्षक/शिक्षिका यह ज्ञात कर सकता है/सकती है कि विद्यार्थियों में पर्यावरण अध्ययन के विषय में सामाजिक-वैयक्तिक विशेषताओं के सन्दर्भ में कितनी समझ विकसित हुई है।

31. कक्षा IV की एक शिक्षिका ने अपने विद्यार्थियों से कहा, "कुछ वयोवृद्ध लोगों से यह पूछिए कि जब वे जवान थे, तो क्या उन्होंने कुछ ऐसे पौधे देखे थे जो आजकल नहीं दिखाई पड़ते।"
उपरोक्त प्रश्न के पूछे जाने पर निम्नलिखित में से किस कौशल के आकलन की सम्भावना नहीं है? **(CTET 2016)**

(1) चर्चा (2) प्रश्न पूछना
(3) अभिव्यक्ति (4) प्रयोग

व्याख्या *(4)* जब विद्यार्थी किसी वयोवृद्ध व्यक्ति से ऐसे पौधे के बारे में प्रश्न करता है, जो आजकल दिखाई नहीं पड़ते, ऐसे में विद्यार्थी के चर्चा, अभिव्यक्ति तथा प्रश्न पूछने के कौशल के आंकलन की संभावना है।
- इस प्रकार के प्रश्न से प्रयोग कौशल की आकलन की संभावना नहीं है।
- प्रयोग कौशल के अन्तर्गत विद्यार्थी स्वयं प्रयोग करके उसका निष्कर्ष निकालते है।

32. एक शिक्षक प्रत्येक बच्चे को अपने घरों की रद्दी-सामग्री से कुछ उपयोगी वस्तु बनाने को कहता है। शिक्षक का शैक्षिक अभिप्राय नहीं है **(CTET 2016)**

(1) कूड़े से बनी श्रेष्ठ वस्तुओं की प्रदर्शनी आयोजित करना
(2) कक्षा के श्रेष्ठ विद्यार्थी के बारे में निर्णय करना
(3) बच्चों में सृजनशीलता का विकास करना
(4) बच्चों को पुनश्चक्रण, पुनःप्रयोग और रूपान्तरण को समझने देना

व्याख्या *(2)* शिक्षक का प्रत्येक विद्यार्थी से रद्दी सामग्री से कुछ उपयोग वस्तु बनाने को कहना, से अभिप्राय बच्चों को पुनश्चक्रण, पुनः प्रयोग और रूपांतरण को समझने देना है।
- इससे बच्चों में सृजनशीलता का विकास होता है।
- अतः कक्षा के श्रेष्ठ विद्यार्थी के बारे में निर्णय करना शिक्षक का उद्देश्य नहीं हैं।

33. निम्नलिखित प्रश्नों को पढ़िए।
A. मैने क्रियाकलाप की योजना कितनी अच्छी बनाई?
B. मैंने योजना का अनुसरण कितना अच्छा किया?
C. मेरी शक्तियाँ क्या थीं?
D. मुझे सचमुच कठिन क्या लगा?
ऊपर दिए गए चार प्रकार के प्रश्नों के उत्तरों से होगा **(CTET 2016)**

(1) बच्चों और शिक्षकों, दोनों का स्व-आकलन
(2) शिक्षक द्वारा समग्र आकलन
(3) बच्चों का स्व-आकलन
(4) शिक्षकों का स्व-आकलन

व्याख्या *(1)* उपर्युक्त विकल्पों से बच्चों और शिक्षकों, दोनों का स्व-आकलन हो सकता है।

34. पर्यावरण अध्ययन की पाठ्य-पुस्तक में प्रयुक्त भाषा **(UPTET 2016)**

(1) परिभाषाओं पर बल देते हुए औपचारिक बनाई जानी चाहिए
(2) तकनीकी और औपचारिक होनी चाहिए
(3) बच्चे की दिन-प्रतिदिन की भाषा से सम्बद्ध होनी चाहिए
(4) रूखी और बच्चों के द्वारा समझने में कठिन होनी चाहिए

व्याख्या *(3)* पर्यावरण अध्ययन की पाठ्य-पुस्तक में प्रयुक्त भाषा बच्चे की दिन-प्रतिदिन की भाषा से सम्बद्ध होनी चाहिए।
- दिन-प्रतिदिन की भाषा से बच्चे सरलता से सीखते हैं एवं अधिगम में रूचि लेते हैं।

35. एक शिक्षक अपने विद्यार्थियों को विभिन्न पशुओं के चित्र देता है और उन पशुओं पर रंग भरने को कहता है जो हमारे घरों में नहीं रहते। इस क्रिया-कलाप का उद्देश्य है
A. सृजनात्मकता का विकास करना
B. अवलोकन का विकास करना
C. वर्गीकरण कौशल का विकास करना
D. डाटा संग्रह का विकास करना
उपरोक्त में से कौन-से सही हैं? **(UPTET 2016)**

(1) B, C और D
(2) A, C और D
(3) A, B और C
(4) A, B और D

For Best PDF, Search on Google - "Nitin Gupta PDF"
Scanned by CamScanner

व्याख्या *(3)* यदि शिक्षक बच्चों को घरों में नहीं रहने वाले पशुओं पर रंग भरने को कहता है तो वह बच्चों में सृजनात्मकता का विकास, अवलोकन का विकास तथा वर्गीकरण कौशल का विकास करना चाहता है।

36. पर्यावरण अध्ययन के पाठ्यक्रम, जिसे छः उप-विषयों के चतुर्दिक निर्मित किया गया है, में 'पौधे' और 'पशु' को जानबूझकर 'परिवार और मित्र' उप-विषय के अन्तर्गत सम्मिलित किया गया है। इसके लिए निम्नलिखित में से एक कारण को छोड़कर शेष सभी कारण हो सकते हैं। वह एक कारण कौन-सा है? **(UPTET 2016)**

(1) विद्यार्थियों को विज्ञान के दृष्टिकोण से पौधों और पशुओं को समझने में सक्षम बनाना

(2) सामाजिक और सांस्कृतिक सन्दर्भ में पौधों और पशुओं के स्थान निर्धारित करने में विद्यार्थियों को सहायता करना

(3) इस बात को उभारना कि किस प्रकार मनुष्य एक-दूसरे से घनिष्ठ सम्बन्धों को साझा करते हैं

(4) इस बात को उभारना कि किस प्रकार कुछ समुदायों के जीवन और आजीविकाएँ विशेष पशुओं या पौधों से घनिष्ठ रूप से जुड़े हैं

व्याख्या *(1)* पर्यावरण अध्ययन के पाठ्यक्रम में पौधों और पशुओं को परिवार और मित्र उप-विषय के अन्तर्गत शामिल करने का उद्देश्य विद्यार्थियों को विज्ञान के दृष्टिकोण से पौधों और पशुओं को समझने में सक्षम बनाना तथा सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ में पौधों और पशुओं के स्थान निर्धारित करने में विद्यार्थियों की सहायता करना है।

- इसके अतिरिक्त इस बात को उभारना कि किस प्रकार कुछ समुदायों के जीवन और आजीविकाएं विशेष पशुओं या पौधों से घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित हैं।

37. पर्यावरण अध्ययन के शिक्षण-अधिगम में 'सर्वेक्षण' का उद्देश्य है

A. समुदाय के साथ अन्योन्यक्रिया का अवसर प्रदान करना
B. बच्चों को विभिन्न लोगों के प्रति संवेदनशील बनाना
C. सूचना को प्रत्यक्ष प्राप्त करने का अवसर प्रदान करना
D. आकलन के एक अवसर के रूप में इनका उपयोग करना
उपरोक्त में से कौन-से सही हैं? **(UPTET 2016)**

(1) A, C और D (2) A, B, C और D
(3) A, B और C (4) A, B और D

व्याख्या *(2)* पर्यावरण अध्ययन के शिक्षण-अधिगम में 'सर्वेक्षण' का उद्देश्य समुदाय के साथ अन्योन्यक्रिया का अवसर प्रदान करना तथा बच्चों को विभिन्न लोगों के प्रति संवेदनशील बनाना है। इसके साथ ही सूचना को प्रत्यक्ष प्राप्त करने का अवसर प्रदान करना तथा आकलन के एक अवसर के रूप में इनका उपयोग करना है।

38. कक्षा III के एक शिक्षक ने अपने बच्चों को निम्नलिखित पेड़ों/पौधों की पत्तियों को विभिन्न वर्गों में वर्गीकृत करने को कहा जैसे-नींबू, आम, तुलसी, पुदीना, नीम, केला आदि। कुछ विद्यार्थियों ने पत्तियों का वर्गीकरण इस प्रकार किया

(1) दवाओं के गुणों वाली पत्तियों और दवाओं के गुण से रहित पत्तियाँ
(2) बड़ी पत्तियाँ और छोटी पत्तियाँ।

शिक्षक ने समूह (1) को सही माना और समूह (2) को गलत। निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा कथन अधिगम प्रतिबिम्बित करता है? **(CTET 2016)**

(1) यह क्रियाकलाप पत्तियों से सूचना ग्रहण करने पर केन्द्रित है, जिसका भिन्न अर्थ लगाया जा सकता है

(2) बच्चे बहुत प्रकार के सन्दर्भों को कक्षा में ले आते हैं, जिसकी सराहना होनी चाहिए

(3) अपने अनुभवों पर निर्भर करते हुए बच्चे वर्गीकरण के बहुत-से तरीकों का उपयोग कर सकते हैं

(4) वर्गीकरण का कार्य बहुत विशिष्ट और स्तरीकृत है तथा इसका एक ही सही उत्तर होता है

व्याख्या *(4)* वर्गीकरण का कार्य बहुत विशिष्ट और स्तरीकृत है तथा इसका एक ही सही उत्तर होता है।

39. कक्षा I में पर्यावरण अध्ययन में शिक्षार्थियों के आकलन के बारे में निम्नलिखित में से कौन-सा/से सत्य है/हैं?

1. मौखिक परीक्षाएँ, क्योंकि हो सकता है कि बच्चे लिखने में सक्षम न हों
2. ड्रॉइंग, क्योंकि बच्चों को इसमें आनन्द आता है
3. शिक्षकों को अवलोकन और रिकॉर्डिंग
4. "किसी को न रोके नीति" को ध्यान में रखते हुए आकलन की कोई आवश्यकता नहीं है **(CTET 2016)**

(1) 1, 2 तथा 3
(2) केवल 4
(3) 1 और 2
(4) 3 और 4

व्याख्या *(1)* कक्षा I में पर्यावरण अध्ययन में शिक्षार्थियों के आकलन के सन्दर्भ में मुख्यतः मौखिक परीक्षा ही उपयुक्त होती है क्योंकि वे लिखने में उतने सक्षम नहीं होते हैं।

- परीक्षा में ऐसी विषय-वस्तु देना उपयुक्त होता है जिससे वे आनंदित हो सके जैसे–ड्रॉइंग। ये सभी कार्य शिक्षक के निरीक्षण में होने चाहिए जिससे वे उनका अवलोकन तथा रिकॉर्डिंग कर सकें।

40. कक्षा V की शिक्षिका एक एल्युमीनियम फॉइल लेती है और पानी में डाल देती है एवं दिखाती है कि वह ऊपर तैरता है। फिर वह फॉइल को मरोड़कर जोर से दबाती (निचोड़ती) है और फिर पानी में डालती है तथा शिक्षार्थियों को दिखाती है कि वह डूबता है। बाद में वह शिक्षार्थियों को यह सोचने और कारण देने के लिए कहती है कि ऐसा क्यों हुआ। इस प्रश्न का उत्तर देने में निम्नलिखित में से कौन-से प्रक्रमण कौशल का प्रयोग किया जाएगा? **(CTET 2016)**

(1) परिकल्पना (2) वर्गीकरण
(3) अवलोकन (4) मापन

व्याख्या *(3)* प्रश्न में कक्षा V की शिक्षिका द्वारा किया गया प्रयोग अवलोकन कौशल से सम्बन्धित है। विद्यार्थियों के सामने जो प्रयोग दिखाया गया है उस पर विद्यार्थी अपने विचार तथा इसके कारणों को अवलोकन कौशल द्वारा व्यक्त करेंगे।

For Best PDF, Search on Google - "Nitin Gupta PDF"
Scanned by CamScanner

41. पर्यावरण अध्ययन के शिक्षाशास्त्र के सन्दर्भ में, सिवाय ..... के निम्नलिखित सभी वांछनीय अभ्यास हैं। (CTET 2016)

(1) आलोचनात्मक चिन्तन और समस्या-समाधान के लिए क्षमता-संवर्द्धन करने
(2) बच्चे की अस्मिता (व्यक्तित्व) का पोषण करने
(3) वास्तविक अवलोकन के स्थान पर पाठ्य-पुस्तकीय ज्ञान की श्रेष्ठता को स्वीकार करने
(4) पाठ्य-वस्तुओं और सन्दर्भों की बहुलता को बढ़ावा देने

व्याख्या *(3)* पर्यावरण अध्ययन के शिक्षाशास्त्र के सन्दर्भ में छात्रों को वास्तविक अवलोकन के स्थान पर पाठ्य-पुस्तकीय ज्ञान की श्रेष्ठता को स्वीकार करने के अलावा सभी वांछनीय अभ्यास हैं।

42. महेश कक्षा IV के शिक्षक हैं। वे 'वृक्ष-संरक्षण' की अवधारणा पर शिक्षार्थियों को संवेदनशील बनाने के लिए योजना बनाते हैं। निम्नलिखित में से कौन-सी एक गतिविधि इस उद्देश्य के लिए सर्वाधिक उपयुक्त है? (CTET 2016)

(1) वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन करना
(2) एक पौधे को अपनाने और उसका पोषण करने के लिए प्रत्येक शिक्षार्थी को अभिप्रेरित करना
(3) पोस्टर प्रतियोगिता में हिस्सा लेने के लिए, शिक्षार्थियों को प्रोत्साहित करना
(4) समूह चर्चा के लिए शिक्षार्थियों के समूह बनाना

व्याख्या *(2)* 'वृक्ष संरक्षण' की अवधारणा पर शिक्षार्थियों को संवेदनशील बनाने के लिए योजना बनायी जाती है, इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये प्रत्येक विद्यार्थी को एक पौधें को अपनाने और उसका पोषण करने के लिए अभिप्रेरित करना सर्वाधिक उपयुक्त होगा।

43. पर्यावरण अध्ययन में, बच्चे शिल्पकला और चित्रकला को समूह में सीखना विशेष रूप से पसन्द करते हैं, क्योंकि
1. यह सहपाठी अधिगम को बढ़ावा देता है
2. यह सामाजिक अधिगम को बेहतर बनाता है
3. जब बच्चों की सृजनात्मकता की प्रशंसा की जाती है, तो वे खुश होते हैं व उसके प्रति प्रेरित भी होते हैं
4. यह कक्षा में अनुशासन को बढ़ाता है
सही विकल्प को चुनिए। (CTET 2016)

(1) 1 और 4 (2) 1, 2 और 4
(3) 1, 2 और 3 (4) 2 और 3

व्याख्या *(3)* पर्यावरण अध्ययन में, बच्चे शिल्पकला और चित्रकला को समूह में सीखना विशेष रूप से पसन्द करते हैं, क्योंकि यह सहपाठी अधिगम को बढ़ावा देता है, यह सामाजिक अधिगम को बेहतर बनाता है तथा जब बच्चों की सृजनात्मकता की प्रशंसा की जाती है, तो वे खुश होते हैं एवं उसके प्रति प्रेरित भी होते हैं।

44. 'प्रयोग करना' आकलन का एक संकेतक है। निम्नलिखित में से कौन-सा एक प्रयोग करने सम्बन्धी संकेतक का आकलन करने का सबसे उपयुक्त तरीका है? (CTET 2016)

(1) चित्र-पठन (2) सृजनात्मक लेखन
(3) निदर्शन/प्रदर्शन (4) हस्तपरक गतिविधि

व्याख्या *(4)* हस्तपरक गतिविधि करने सम्बन्धी संकेतक का आकलन करने का सबसे उपर्युक्त तरीका है।

45. प्राथमिक कक्षाओं में शिक्षार्थियों के पास अनेक प्रकरणों में अनेक वैकल्पिक अवधारणाएँ होती हैं; जैसे-सजीव-निर्जीव, जल-चक्र, पौधे आदि। इन वैकल्पिक अवधारणाओं के स्रोत हो सकते हैं
1. परिवार एवं समुदाय
2. पाठ्य-पुस्तकें एवं अन्य पुस्तकें
3. शिक्षक
4. कहानियाँ एवं कविताएँ
सही विकल्प को चुनिए (CTET 2016)

(1) 1, 2 और 4
(2) 1, 2, 3 और 4
(3) केवल 1
(4) 1 और 2

व्याख्या *(2)* प्राथमिक कक्षाओं में शिक्षार्थियों के पास अनेक प्रकरणों में अनेक वैकल्पिक अवधारणाएँ होती हैं।
- इन अवधारणाओं के मुख्य स्रोत परिवार एवं समुदाय, पाठ्य-पुस्तकें एवं अन्य पुस्तकें, शिक्षक तथा कहानियाँ एवं कविताएँ सम्मिलित होती हैं।

46. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 के अनुसार, निम्नलिखित में से कौन-सी एक पर्यावरण अध्ययन की विषय-वस्तु (थीम) है? (CTET 2016)

(1) भोजन (2) सौरमण्डल
(3) मौसम (4) ऊर्जा

व्याख्या *(1)* राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 के अनुसार, भोजन पर्यावरण अध्ययन की विषय-वस्तु है।
- पर्यावरण अध्ययन की विषय-वस्तु को 6 भागों में बाँटा गया हैं। ये हैं– 1. परिवार, 2. भोजन, 3. पानी, 4. आवास, 5. यात्रा और 6. हम चीजें कैसे बनाते हैं?
- सौरमण्डल तथा मौसम भूगोल की विषय-वस्तु हैं जबकि ऊर्जा विज्ञान की विषय-वस्तु है।

47. पर्यावरण अध्ययन में विषय-वस्तु (थीम) आधारित उपागम को अपनाने के समर्थन में निम्नलिखित में से कौन-सा तर्क सबसे अधिक सशक्त है? (CTET 2016)

(1) यह पाठ-योजनाओं को एक ढाँचा प्रदान करने और शिक्षण को अधिक प्रभावी बनाने में मदद करता है
(2) यह शिक्षण को अधिक रोचक और गतिविधि आधारित बनाने में मदद करता है
(3) यह अवधारणाओं, मुद्दों और कौशलों के वृहत् विस्तार को सम्मिलित करने में मदद करता है
(4) यह विषय-सीमाओं को नरम (सौम्य) बनाने और सम्पूर्णता में ज्ञान को प्राप्त करने में मदद करता है

व्याख्या *(4)* पर्यावरण अध्ययन में विषय-वस्तु आधारित उपागम को अपनाने के समर्थन में सबसे अधिक सशक्त तर्क यह है कि यह विषय-सीमाओं को नरम (सौम्य) बनाने और सम्पूर्णता में ज्ञान को प्राप्त करने में मदद करता है।

For Best PDF, Search on Google - "Nitin Gupta PDF"
Scanned by CamScanner

48. शिक्षार्थियों का आकलन करते समय पर्यावरण अध्ययन की शिक्षिका को निम्नलिखित में से क्या नहीं करना चाहिए? **(CTET 2015)**

(1) बच्चों के पूर्व आकलन के साथ तुलना करनी
(2) शिक्षार्थियों की सीखने की क्षमताओं को ध्यान में रखकर सूचना दर्ज करनी
(3) बच्चों के कार्यों के केवल कुछ पक्षों पर ध्यान केन्द्रित करना
(4) बच्चों के कार्य से सम्बन्धित गुणात्मक उल्लेख करना

व्याख्या *(3)* शिक्षार्थियों का आकलन करते समय पर्यावरण अध्ययन की शिक्षिका को बच्चों के कार्यों के केवल कुछ पक्षों पर ध्यान केन्द्रित नहीं करना चाहिए।
- आकलन में बच्चों के सभी पक्षों का अवलोकन किया जाता है, कुछ का नहीं।
- पूर्व आकलन के साथ तुलना, क्षमताओं को ध्यान में रखकर सूचना दर्ज करना तथा बच्चों के कार्य से सम्बन्धित गुणात्मक उल्लेख करना, आकलन के अन्य उद्देश्य हैं।

49. प्राथमिक स्तर पर पर्यावरण अध्ययन में 'समुदाय' सीखने-सिखाने का एक महत्त्वपूर्ण संसाधन है, क्योंकि **(CTET 2015)**

(1) यह एक बहुत सस्ता संसाधन है
(2) यह आसानी से उपलब्ध होने वाला संसाधन है
(3) इसमें समझदार और बुजुर्ग व्यक्ति होते हैं
(4) यह वास्तविक स्थितियों में सीखने के अवसर उपलब्ध कराता है।

व्याख्या *(4)* प्राथमिक स्तर पर पर्यावरण अध्ययन में 'समुदाय' सीखने-सिखाने का एक महत्त्वपूर्ण संसाधन है, क्योंकि यह वास्तविक स्थितियों में सीखने के अवसर उपलब्ध कराता है।
- 'समुदाय' पर्यावरण का अध्ययन करने के लिए एक स्रोत है।
- पर्यावरण से सम्बन्धित सभी कारक समुदाय में पाए जाते हैं। जैसे परिवार, मित्र, जानवर, पौधे, आवास, यात्रा आदि।
- अतः पर्यावरण अध्ययन में 'समुदाय' सीखने-सिखाने का महत्त्वपूर्ण संसाधन है।
- प्रश्न के अन्य विकल्प भी सही हैं, लेकिन विकल्प 4 सीखने-सिखाने के सन्दर्भ में सर्वाधिक उपयुक्त है।

50. कविताएँ और कहानियाँ पर्यावरण अध्ययन की अन्तर्वस्तु को पढ़ाने में प्रभावशाली हैं। ऐसा इसीलिए है, क्योंकि कविताएँ और कहानियाँ
A. बच्चों के परिवेश का समृद्ध चित्रण कर सकती हैं
B. सन्दर्भित अधिगम परिवेश प्रदान कर सकती हैं
C. विभिन्न अमूर्त अवधारणाओं की प्रभावशाली तरीके से व्याख्या कर सकती हैं
D. सृजनात्मकता एवं सौन्दर्यबोध का पोषण कर सकती हैं **(CTET 2015)**

(1) A, B और D (2) केवल C
(3) केवल B (4) A और B

व्याख्या *(1)* कविताएँ और कहानियाँ पर्यावरण अध्ययन की अन्तर्वस्तु को पढ़ाने में प्रभावशाली हैं। ऐसा इसलिए है, क्योंकि कविताएँ और कहानियाँ बच्चों के परिवेश का समृद्ध चित्रण कर सकती हैं। सन्दर्भित अधिगम परिवेश तथा सृजनात्मकता एवं सौन्दर्यबोध का पोषण कर सकती है।
प्रश्न का कथन C कि कविताएँ और कहानियाँ विभिन्न अमूर्त अवधारणाओं की प्रभावशाली तरीके से व्याख्या कर सकती हैं– उचित नहीं है।

51. कक्षा V की शिक्षिका के रूप में आप 'ईंधन के संरक्षण' प्रकरण को पढ़ाने के लिए निम्नलिखित में से किस संसाधन के उपयोग को सर्वश्रेष्ठ पाते हैं? **(CTET 2015)**

(1) सन्दर्भ पुस्तकें (2) पोस्टर
(3) समाचार-पत्र (4) पाठ्य-पुस्तक

व्याख्या *(3)* कक्षा V की शिक्षिका के रूप में 'ईंधन के संरक्षण' प्रकरण को पढ़ाने के लिए समाचार-पत्र संसाधन के उपयोग को सर्वश्रेष्ठ पाते हैं।
- समाचार-पत्र विश्वस्तरीय संसाधन है जिससे पर्यावरण या अन्य क्षेत्रों की भी सम्पूर्ण जानकारी अच्छी तरह से मिल जाती है।
- 'ईंधन के संरक्षण' के प्रकरण को पढ़ाने के लिए समाचार-पत्र का प्रयोग करने से न केवल छात्रों में ईंधन के संरक्षण के बारे में जागरूकता आएगी साथ बल्कि ईंधन के बचाव, उनके उपयोग की सतर्कता के बारे में भी समझ व जानकारी होगी।
- अतः विकल्प (3) सबसे उपयुक्त विकल्प है।

52. कक्षा IV की एक शिक्षिका, शिक्षार्थियों से कहती है कि वे अपने कार्य-पत्रक, अवलोकन-रिपोर्ट और सत्र में एकत्रित की गई सामग्री को एक फोल्डर में डाल दें।
इन फोल्डरों को ..... कहा जा सकता है। **(CTET 2015)**

(1) पोर्टफोलियो (2) दत्त कार्य
(3) परियोजना कार्य (4) घटना-वृत्तान्त अभिलेख

व्याख्या *(1)* कक्षा IV की एक शिक्षिका, शिक्षार्थियों से कहती है कि वे अपने कार्य-पत्रक, अवलोकन-रिपोर्ट और सत्र में एकत्रित की गई समाग्री को एक फोल्डर में डाल दें। इन फोल्डरों को पोर्टफोलियो कहा जा सकता है।
- **पोर्टफोलियो**–यह प्रत्येक छात्र का एक फोल्डर होता है, जिसमें लिखा नहीं जाता बल्कि छात्र द्वारा की गई महत्त्वपूर्ण गतिविधियों के दस्तावेजों की फोटो प्रतिलिपि (Xerox), प्रमाण-पत्र व फोटोग्राफ साक्ष्य के रूप में रखे जाते हैं।
- प्रश्न के अन्य विकल्प, घटना वृत्तान्त अभिलेख (Anecdotal Records) यह बालकों के व्यवहार तथा आदतों से सम्बन्धित केवल विशिष्ट घटनाओं तथा कार्यों का संक्षिप्त वर्णन है।

53. एन.सी.ई.आर.टी. (रा.शै.अ.प्र.प.) की पर्यावरण अध्ययन की कक्षा V की पाठ्य-पुस्तक में 'सुनीता अन्तरिक्ष में' शीर्षक पाठ स्पेसशिप में अन्तरिक्ष यात्री सुनीता विलियम्स के अनुभवों का वर्णन करता है। इसे शामिल करने का/के क्या कारण हो सकता है–सकते हैं?
A. यह घटना अन्तरिक्ष यात्रियों की जिन्दगी में झाँकने का अवसर देती है
B. यह घटना स्पेसशिप में भौतिक स्थितियों का वर्णन करती है

For Best PDF, Search on Google - "Nitin Gupta PDF"
Scanned by CamScanner

C. यह घटना स्त्री-पुरुष लिंग (जेण्डर) रूढ़िवादिता को चुनौती देती है।
D. यह घटना गुरुत्वाकर्षण की अवधारणा को समझने में मदद करती है **(CTET 2015)**

(1) केवल D (2) A, B और C
(3) A, B, C और D (4) केवल A

व्याख्या *(1)* 'सुनीता अन्तरिक्ष में' शीर्षक पाठ को N.C.E.R.T. की पर्यावरण अध्ययन की कक्षा V की पाठ्य-पुस्तक में शामिल करने का कारण यह है कि यह घटना गुरुत्वाकर्षण की अवधारणा को समझने में मदद करती है।

- गुरुत्वाकर्षण बल (Gravitational force) एक पदार्थ द्वारा दूसरे पदार्थ की ओर आकृष्ट (attract) होने की प्रवृत्ति है।
- **गुरुत्वाकर्षण बल के कारण पृथ्वी ही नहीं, अपितु विश्व का प्रत्येक कण दूसरे कण को अपनी ओर आकर्षित करता है।**
- सुनीता विलियम्स **पृथ्वी से 360 किलोमीटर** दूर अन्तरिक्ष यान में गई थी।
- अन्तरिक्ष यान के पृथ्वी के इर्द-गिर्द घूमने से ही सुनीता पृथ्वी के खिंचाव से मुक्त थी।
- गुरुत्वाकर्षण बल के सम्पर्क में न होने से सुनीता विलियम्स एक जगह से दूसरी जगह तैरते हुए पहुँचती, हाथ-मुँह धोने के लिए पानी के बुलबुलों को पकड़कर कपड़ा गीला करती फिर हाथ-मुँह साफ करती। उड़ते हुए खाना खाती तथा सुनीता विलियन्स को कंघी करने की आवश्यकता ही नहीं होती थी, क्योंकि बाल हमेशा खड़े रहते थे।

54. पर्यावरण अध्ययन की एक शिक्षिका निम्नलिखित कारणों से अपनी कक्षा का प्रारम्भ कुछ मुख्य प्रश्न पूछते हुए करती है। सबसे कम प्राथमिकता वाला कारण कौन-सा है, उसे चुनिए? **(CTET 2015)**

(1) शिक्षार्थियों का चिन्तन उद्दीप्त किया जा सकता है।
(2) प्रश्न शिक्षार्थियों में उत्सुकता जगाते हैं।
(3) प्रश्न प्रकरण को सन्दर्भपरक बनाने में मदद करते हैं।
(4) शिक्षार्थियों का चिन्तन सीमित किया जा सकता है।

व्याख्या *(4)* पर्यावरण अध्ययन की एक शिक्षिका अपनी कक्षा का प्रारम्भ कुछ प्रश्न पूछते हुए करती है। सबसे कम प्राथमिकता वाला कारण यह होगा कि शिक्षार्थियों का चिन्तन सीमित किया जा सकता है।

- कक्षा का प्रारम्भ करने के लिए शिक्षार्थियों का चिन्तन एवं उत्सुकता को जागृत करना चाहिए तथा प्रश्न प्रकरण को सन्दर्भपरक बनाना चाहिए। शिक्षार्थियों का चिन्तन सीमित करने से शिक्षण-प्रक्रिया में बाधा आएगी तथा शिक्षार्थी निष्क्रिय श्रोता बन जाएँगे।

55. प्राथमिक स्तर पर पर्यावरण अध्ययन की पाठ्य-पुस्तक में निम्नलिखित में से कौन-सी विशेषता नहीं होनी चाहिए? **(CTET 2015)**

(1) यह शिक्षार्थियों की वैविध्यपूर्ण पृष्ठभूमि की जरूरतों को पूरा करती है
(2) यह वास्तविक कहानियों और घटनाओं को शामिल करती है
(3) यह परिभाषाओं और अमूर्त अवधारणाओं की व्याख्या करने पर ध्यान केन्द्रित करती है
(4) यह प्राकृतिक और समाज-सांस्कृतिक परिवेश को एकीकृत तरीके से प्रस्तुत करती है

व्याख्या *(3)* प्राथमिक स्तर पर पर्यावरण अध्ययन की पाठ्य-पुस्तक में परिभाषाओं और अमूर्त अवधारणाओं की व्याख्या नहीं होनी चाहिए।

- क्योंकि **प्राथमिक स्तर के छात्रों में परिभाषा और अमूर्त अवधारणाओं को समझने की समझ का विकास होता ही नहीं है।**
- प्राथमिक स्तर पर पाठ्य-पुस्तक में वैविध्यपूर्ण पृष्ठभूमि, कहानियों और घटनाओं को शामिल किया जाना तथा प्राकृतिक और समाज-सांस्कृतिक परिवेश को प्रस्तुत किया जाना चाहिए।

56. पर्यावरण अध्ययन शिक्षण के सन्दर्भ में राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (NCF, 2005) निम्नलिखित में से किसे प्रस्तावित नहीं करती? **(CTET 2015)**

(1) बच्चों को अनुभवों और सन्दर्भों से जोड़ना
(2) हस्तपरक क्रियाकलाप
(3) तकनीकी शब्दावली से परिचित कराना
(4) विषयानुसार उपागम

व्याख्या *(3)* पर्यावरण अध्ययन शिक्षण के सन्दर्भ में राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (NCF, 2005) तकनीकी शब्दावली से परिचित कराना को प्रस्तावित नहीं करती।

- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (NCF, 2005) पर्यावरण अध्ययन को बच्चों को **अनुभवों और सन्दर्भों से जोड़ना, हस्तपरक क्रियाकलाप** तथा **विषयानुसार उपागम को** प्रस्तावित करती है।

57. प्राथमिक स्तर के शिक्षार्थियों में मानचित्र बनाने और समझने के लिए निम्नलिखित मे से किन कौशल/कौशलों के विकास की आवश्यकता है?
A. स्थानों की सापेक्ष स्थिति की समझ
B. स्थानों की सापेक्ष दूरी और दिशाओं की समझ
C. प्रतीकों और स्केल/पैमाने की समझ
D. स्केल/पैमाने के अनुसार स्पष्ट ड्रॉइंग बनाना
(CTET 2015)

(1) केवल C (2) A, B और C
(3) केवल D (4) A और B

व्याख्या *(2)* प्राथमिक स्तर के शिक्षार्थियों में मानचित्र बनाने और समझने के लिए स्थानों की सापेक्ष स्थिति की समझ, सापेक्ष दूरी व दिशाओं का ज्ञान तथा प्रतीकों और स्केल/पैमाने की समझ जैसे कौशलों के विकास की आवश्यकता है।

- मानचित्र एक आरेखण होता है, जो पूरे विश्व या इसके एक भाग को छोटा कर कागज के एक पन्ने पर दर्शाता है या कह सकते हैं कि मानचित्र छोटे पैमाने पर **खींचा** जाता हैं।
- दिक्सूचक (Compass) की सहायता से दिशाओं का पता लगाया जाता है। इसकी चुम्बकीय सुई की दिशा सदैव उत्तर-दक्षिण दिशा में होती है।
- **प्रतीक** कम स्थान में अधिक जानकारी देते हैं। जैसे भवनों, सड़कों, पुलों, वृक्षों, रेल की पटरियों या कुएँ को वास्तविक रूप में दिखाना सम्भव नहीं होता है, तो इन सभी को दर्शाने के लिए कुछ निश्चित प्रतीक होते हैं जैसे रेलवे लाइन के लिए +++++++ प्रतीक, ═══ सड़कों के लिए प्रतीक आदि।

58. प्राथमिक कक्षाओं में पर्यावरण अध्ययन पढ़ाने के लिए निम्नलिखित में कौन-सा उद्देश्य सम्बन्धित नहीं है? **(CTET 2015)**

For Best PDF, Search on Google - "Nitin Gupta PDF"
Scanned by CamScanner

(1) विज्ञान के आधारभूत प्रत्ययों और सिद्धान्तों को रटकर याद कर लेना
(2) पर्यावरण को खोजने के अवसर प्रदान करना
(3) अवलोकन, मापन, भविष्यकथन और वर्गीकरण जैसे कौशलों का विकास करना
(4) भौतिक और सामाजिक परिवेश के प्रति संवेदनशीलता विकसित करना

व्याख्या *(1)* प्राथमिक कक्षाओं में पर्यावरण अध्ययन पढ़ाने के लिए विज्ञान के आधारभूत प्रत्ययों और सिद्धान्तों को रटकर याद कराना– उद्देश्य सम्बन्धित नहीं है।
- क्योंकि विज्ञान के सिद्धान्तों और अवधारणाओं को व्यवहारिक ज्ञान द्वारा याद किया जाता है रटकर नहीं।
- अन्य विकल्प पर्यावरण अध्ययन पढ़ाने के उद्देश्यों से सम्बन्धित हैं। अतः विकल्प 1 गलत है।

59. पर्यावरण अध्ययन के शिक्षण से उन प्रक्रिया पर आधारित कौशलों को बढ़ावा दिया जाना चाहिए जो पूछताछ आधारित प्रत्यक्ष अनुभवों के केन्द्र बिन्दु हैं। निम्नलिखित में से कौन-सा एक ऐसा कौशल नहीं है? **(CTET 2015)**
(1) पूर्वानुमान (2) निर्धारण
(3) निष्कर्ष निकालना (4) अवलोकन

व्याख्या *(2)* निर्धारण एक कौशल नही है। पर्यावरण अध्ययन की शिक्षण प्रक्रिया पर आधारित कौशलों को बढ़ावा दिए जाने के संदर्भ में निर्धारण पूछताछ आधारित प्रत्यक्ष अनुभवों का केन्द्र बिन्दु नहीं होता है।
- पर्यावरण अध्ययन के अंतर्गत शिक्षार्थी अपने अध्ययन क्षेत्र का अवलोकन करते हैं। उन अवलोकन के आधार पर उनके अपने अनुभव, विचार तथा निष्कर्ष होते हैं।
- अतः पर्यावरण अध्ययन के शिक्षण के लिए पूर्वानुमान, अवलोकन तथा निष्कर्ष निकालने के कौशलों को बढ़ावा देना चाहिए।

60. प्राथमिक कक्षाओं के विद्यार्थियों को मानचित्र-शिक्षण के लिए निम्नलिखित में से कौन-सी युक्ति सर्वाधिक उपयुक्त प्रतीत होती है? **(CTET 2015)**
(1) अध्यापक द्वारा श्यामपट्ट पर मानचित्र बनाना तथा शिक्षार्थियों को विभिन्न स्थानों की स्थिति बताने को कहना
(2) शिक्षार्थियों को निर्देश देना कि वे घर से भारत का मानचित्र लेकर आएँ
(3) शिक्षार्थियों को एटलस दिखाना और विभिन्न स्थानों की स्थिति बताने के लिए कहना
(4) शिक्षार्थियों की सहायता करना कि वे अपने ही संकेतों का उपयोग करते हुए अपने निकटतम परिवेश का मानचित्र बनाएँ तथा वस्तुओं की सापेक्ष स्थिति और दिशा पर ध्यान केन्द्रित करें

व्याख्या *(4)* प्राथमिक कक्षाओं के विद्यार्थियों को मानचित्र-शिक्षण के लिए शिक्षार्थियों की सहायता करना कि वे अपने ही संकेतों का उपयोग करते हुए अपने निटतम परिवेश का मानचित्र बनाएँ तथा वस्तुओं की सापेक्ष स्थिति और दिशा पर ध्यान केन्द्रित करें।
- इस विधि द्वारा शिक्षार्थियों को मानचित्र बनाना, उसे पढ़ना तथा दिशाओं का ज्ञान सरलता से हो सकता है।

61. कक्षा V की अध्यापिका माहिका चाहती है कि उसके विद्यार्थी आस-पास के पौधो का अवलोकन करें। सार्थक अधिगम (सीखने) के लिए उसे बच्चों को क्या करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए? **(CTET 2015)**
(1) यह समझना कि पौधे भी सजीव होते हैं
(2) यह समझना कि पौधे हमारे लिए उपयोगी होते हैं
(3) अधिगतम पौधों के नाम लिखना
(4) उनकी ऊँचाई, पतियों, गन्ध और उगने के स्थानों में अन्तर का अवलोकन करना

व्याख्या *(4)* शिक्षक को पौधो की ऊँचाई, पत्तियों, गन्ध और उनके उगने के स्थानों में अंतर का अवलोकन करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।
- इससे विद्यार्थी आस-पास के पौधो का सही अवलोकन तथा सही जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

62. प्राथमिक स्तर पर पर्यावरण अध्ययन पढ़ाने के लिए निम्नलिखित में से कौन-सा पहलू सबसे महत्वपूर्ण होना चाहिए? **(CTET 2015)**
(1) क्रियाकलाप संचालित करना तथा कौशलों का विकास करना
(2) आकलन में सफलता प्राप्त करना
(3) विज्ञान की आधारभूत संकल्पनाओं (अवशारणाओं) को समझना
(4) सीखने वालों को प्राकृतिक और सामाजिक-सांस्कृतिक पर्यावरण से जोड़ना

व्याख्या *(4)* प्राथमिक स्तर पर पर्यावरण अध्ययन पढ़ाने के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण सीखने वालों को प्राकृतिक और सामाजिक-सांस्कृतिक पर्यावरण से जोड़ना है।

63. प्राथमिक स्तर पर 'मानचित्रांकन' सिखाने से शिक्षार्थियों में निम्नलिखित में से किस कौशल को बढ़ावा मिलता है? **(CTET 2015)**
(1) साफ-सुथरा रेखांकन
(2) गणनाएँ और अनुमान
(3) माप के अनुसार चित्रण करना
(4) सापेक्ष स्थिति और दिशा बोध की जानकारी

व्याख्या *(4)* प्राथमिक स्तर पर मानचित्रांकन सिखाने से शिक्षार्थियों में सबसे ज्यादा सापेक्ष स्थिति और दिशा बोध कौशल को बढ़ावा मिलता है।
- दिशा और स्थिति के बिना सही या शुद्ध मानचित्र नहीं बनाया जा सकता है।

64. प्राथमिक कक्षाओं में पर्यावरण अध्ययन के लिए निम्नलिखित सभी सामान्य उपागमों का अनुपालन किया जाना है, केवल इसे छोड़कर
A. मूर्त से अमूर्त
B. सरल से कठिन
C. स्थानीय से वैश्विक
D. अमूर्त से मूर्त **(CTET 2015)**
(1) केवल B (2) केवल D
(3) A और B (4) B और C

For Best PDF, Search on Google - "Nitin Gupta PDF"
Scanned by CamScanner

व्याख्या *(2)* प्राथमिक कक्षाओं में पर्यावरण अध्ययन के लिए मूर्त से अमूर्त, सरल से कठिन तथा स्थानीय से वैश्विक उपागमों का अनुपालन किया जाना चाहिए।
- प्राथमिक कक्षाओं में पर्यावरण अध्ययन के लिए अमूर्त से मूर्त उपागम का का अनुपालन किया जाना कठिन होता है।

65. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा (NCF), 2005 ने कक्षा I और II के लिए पर्यावरण अध्ययन के किसी पाठ्यक्रम या पाठ्य-पुस्तकों की संस्तुति नही की है। इसके लिए सबसे उपयुक्त कारण है **(CTET 2015)**
(1) पाठ्यक्रम का भार कम करने के लिए
(2) पर्यावरण अध्ययन केवल कक्षा III से आगे की कक्षाओं के लिए है
(3) कक्षा I और II के शिक्षार्थी पढ़ना-लिखना नहीं जानते
(4) सन्दर्भयुक्त अधिगम परिवेश प्रदान करना

व्याख्या *(4)* कक्षा I और II में सन्दर्भयुक्त अधिगम परिवेश प्रदान करने पर बल दिया जाता है। अतः राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा (NCF), 2005 ने कक्षा-I और II के लिए पर्यावरण अध्ययन के किसी पाठ्यक्रम या पाठ्य पुस्तकों की संस्तुति नहीं की है।

66. एक अध्यापक को कक्षा IV के विद्यार्थियों को हमारे देश के भोजन की सांस्कृतिक विविधताएँ पढ़ानी हैं। इस विषय को पढ़ाने के लिए सर्वोत्तम विधि निम्नलिखित में से क्या है? **(CTET 2015)**
(1) विभिन्न प्रकार की खाने की चीजों के चित्रों वाले फ्लैश कार्ड दिखाएँ
(2) अपने देश के विभिन्न राज्यों के विभिन्न लोगों द्वारा खाए जाने वाले विविध भोजन के बारे में विद्यार्थियों को एक प्रोजेक्ट परियोजना दें
(3) विद्यार्थियों से पूछे कि उन्होंने क्या खाया है, उसके बाद चर्चा करें
(4) विद्यार्थियों से कहें कि वे अपने परिवार के भोजन के बारे में सूचना एकत्र करें

व्याख्या *(2)* प्रोजेक्ट कार्य द्वारा बच्चों को किसी विषय के बारे में समझना समझने का सर्वोत्तम तरीका होता है।
- अतः देश के भोजन की सांस्कृतिक विधिताएँ पढ़ाने के लिए अध्यापक को शिक्षार्थियों को देश के विभिन्न राज्यों के विभिन्न लोगों द्वारा खाए जाने वाले विविध भोजन के बारे में एक प्रोजेक्ट देना चाहिए।

67. प्राथमिक स्तर पर पर्यावरण अध्ययन के शिक्षण में कहानियों और कविताओं का प्रभावी ढंग से उपयोग किया जा सकता है। पर्यावरण अध्ययन में इनके उपयोग का मुख्य उद्देश्य है– **(CTET 2015)**
(1) कक्षा की विविधता की पूर्ति
(2) सीखने के लिए सन्दर्भगत वातावरण प्रदान करना
(3) पाठों को आनन्ददायक बनाना
(4) भाषिक कौशलों को बढ़ावा देना

व्याख्या *(2)* प्राथमिक स्तर पर पर्यावरण अध्ययन के शिक्षण में कहानियों और कविताओं का प्रभावी ढंग से उपयोग शिक्षार्थियों के सीखने के लिए सन्दर्भगत वातावरण प्रदान करता है।
- यह शिक्षार्थियों की कल्पना शक्ति, मौलिक सृजन को बढ़ावा देता है।

68. एक प्राथमिक स्तर की अध्यापिका 'जलाभाव' के विषय पर अपनी कक्षा IV के बच्चों को प्रभावपूर्ण तरीके से किस प्रकार आँकेगी? **(CTET 2015)**
(1) बच्चों को जल संरक्षण पर नारे लिखने के लिए कहकर
(2) उपरोक्त विषय पर लिखित परीक्षा का आयोजन करके
(3) यह पता करके कि उन्होंने अपने दैनिक जीवन में जल की बचत कैसे प्रारम्भ की है?
(4) जल संरक्षण पर पोस्टर बनाने की गतिविधि का आयोजन करके

व्याख्या *(3)* शिक्षा तभी सार्थक सिद्ध होती है जब उसका उपयोग वास्तविक जीवन में हो।
- अतः जलाभाव के विषय पर अध्यापिका को बच्चों से यह पता करना चाहिए कि वे अपने दैनिक जीवन में व जल का उपयोग किस प्रकार करते हैं, एवं जल को किस प्रकार बचाते हैं।

69. आपके प्रधानाचार्य ने आपको कहा कि कक्षा V के विद्यार्थियों को शैक्षिक अवलोकन यात्रा के लिए ले जाएँ। इस अवलोकन यात्रा को सार्थक बनाने के लिए आप अपनी योजना में क्या सम्मिलित करेंगी? **(CTET 2015)**
(1) क्रियाकलापों की एक स्तरीकृत शीट उस स्थान के बारे में तैयार करना और प्रामाणिक तथा सार्थक अध्ययन के लिए उसे विद्यार्थियों के साथ यात्रा से पूर्व साझा करना
(2) जहाँ जाना हो उसके बारे में जानकारी प्राप्त करने और पढ़ने के लिए विद्यार्थियों को कहना
(3) आनन्द के लिए पर्याप्त भोजन और खेलों को साथ ले जाना
(4) यह सुनिश्चित करना कि विद्यार्थी अनुशासित रहें और उस स्थान का शान्तिपूर्वक अवलोकन करें

व्याख्या *(1)* शैक्षणिक अवलोकन यात्रा को सार्थक बनाने के लिए क्रियाकलापों की एक स्तरीकृत शीट उस स्थान के बारे में तैयार कर लेनी चाहिए। प्रामाणिक तथा सार्थक अध्ययन के लिए उसे विद्यार्थियों के साथ यात्रा से पूर्व साझा करना चाहिए।

70. प्राथमिक स्तर पर पर्यावरण अध्ययन के आकलन में निम्नलिखित में से कौन-सा एक संकेतक उपयुक्त नहीं है? **(CTET 2015)**
(1) स्मरण रखना
(2) प्रश्न पूछना
(3) न्याय और समानता के प्रति चिन्ता
(4) सहयोग

व्याख्या *(1)* प्राथमिक स्तर पर पर्यावरण के आकलन में स्मरण रखना एक उपयुक्त संकेतक नहीं है।
- प्राथमिक स्तर पर प्रश्न पूछना, न्याय और समानता के प्रति चिन्ता अर्थात विविध, विभिन्न और वंचित लोगों के प्रति संवेदनशीलता, सहयोग करना आकलन के उपयुक्त संकेतक है।

71. ई वी एस संक्षेपण ..... अर्थ प्रयुक्त होता है। **(CTET 2014)**
(1) एनवायरमेण्टल स्किल्स (2) एनवायरमेण्टल साइन्स
(3) एनवायरमेण्टल सोर्सेज (4) एनवायरमेण्टल स्टडीज

व्याख्या *(4)* ई वी एस का विस्तारित रूप एनवायरमेण्टल स्टडीज होता है।

For Best PDF, Search on Google - "Nitin Gupta PDF"
Scanned by CamScanner

72. निम्नलिखित में से कौन-सा प्राथमिक स्तर पर पर्यावरण अध्ययन के शिक्षण का उद्देश्य नहीं है? (CTET 2014)

(1) कक्षा-कक्षा में होने वाले अधिगम को विद्यालय के बाहर की दुनिया के साथ जोड़ना
(2) शिक्षक कक्षा-कक्ष में कड़े अनुशासन को सुनिश्चित करें
(3) बच्चों को प्रश्न पूछने के लिए अवश्य अभिप्रेरित करना चाहिए
(4) बच्चों को अपने निकटतम परिवेश से परिचय प्राप्त करने के लिए अवश्य अभिप्रेरित करना चाहिए

व्याख्या *(2)* प्राथमिक स्तर पर पर्यावरण अध्ययन के शिक्षण के उद्देश्य निम्नलिखित हैं–
(i) कक्षा-कक्ष में होने वाले अधिगम को विद्यालय के बाहर की दुनिया के साथ जोड़ना।
(ii) बच्चों को अपने निकटतम परिवेश से परिचय प्राप्त करने के लिए अवश्य अभिप्रेरित करना चाहिए।
(iii) प्रश्न पूछने के लिए बच्चों को प्रेरित करना।
अतः विकल्प 2 प्राथमिक स्तर पर्यावरण अध्ययन के शिक्षण का उद्देश्य नहीं है।

73. आँचल अपनी कक्षा V में पर्यावरण अध्ययन की कक्षा में अक्सर गहन जाँच-पड़ताल वाले और कल्पनापरक प्रश्न पूछती है। उसके द्वारा इस प्रकार के प्रश्न करने का उद्देश्य ..... सुधार करना है। (CTET 2014)

(1) अवलोकन कौशलों में (2) संवेगात्मक कौशलों में
(3) चिन्तन कौशलों में (4) बोलने सम्बन्धी कौशलों में

व्याख्या *(3)* पर्यावरण अध्ययन की कक्षा में चिन्तन कौशलों में सुधार करने का सबसे सही तरीका है– कक्षा में गहन जाँच-पड़ताल वाले और कल्पनापरक प्रश्न पूछना।

74. कक्षा III के शिक्षार्थियों को 'हमारे दोस्त पक्षी' प्रकरण पढ़ाते समय नलिनी नीचे दी गई पद्धति का प्रयोग करती है
I. पक्षियों पर आधारित वृत्त-चित्र दिखाना
II. विभिन्न पक्षियों की तस्वीरों वाले चार्ट का प्रयोग करना और संक्षेप में उनका वर्णन करना
III. शिक्षार्थियों को नजदीक के पार्क में ले जाना और उनसे पक्षियों को ध्यान से देखने के लिए कहना
नलिनी निम्न में से किस प्रयोजन के लिए सीखने के विभिन्न उपागमों का प्रयोग कर रही है। (CTET 2014)

(1) अपनी पाठ योजना का पालन करना
(2) बहुबुद्धि वाले शिक्षार्थियों की विभिन्न आवश्यकताओं को पूरा करना
(3) दूसरे शिक्षकों और अभिभावकों को प्रभावित करना
(4) शिक्षार्थियों में तर्कशक्ति का विकास करना

व्याख्या *(2)* बहुबुद्धि वाले शिक्षार्थियों की विभिन्न आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए नलिनी इस पद्धति का प्रयोग कर रही है।

75. निम्न में से कौन-सा पर्यावरण की कक्षा में रूपात्मक आकलन का समुचित कार्य नहीं है? (CTET 2014)

(1) पाठ में दी गई महत्त्वपूर्ण शब्दावली की परिभाषा की व्याख्या करना
(2) दिए गए प्रयोगात्मक क्रियाकलापों को पूरा करना और अपने अवलोकन को दर्ज करना
(3) दिए गए प्रयोगात्मक प्रारूप के चिह्नांकन वाले आरेख बनाना
(4) जल प्रदूषण की हानियों के विषय में चर्चा करना

व्याख्या *(4)* दिए गए विकल्पों में विकल्प संख्या 4 पर्यावरण की कक्षा में रूपात्मक आकलन का समुचित कार्य **नहीं** है।
- पाठ में दी गई महत्त्वपूर्ण शब्दावली की परिभाषा की व्याख्या करना, प्रयोगात्मक क्रियाकलापों को पूरा करना एवं उनका अवलोकन दर्ज करना तथा चिह्नांकन वाले आरेख बनाना पर्यावरण की कक्षा में रूपात्मक आकलन के समुचित कार्य है।

76. जीव-जन्तुओं पर आधारित पाठ को पढ़ाने के बाद शीतल कक्षा IV के शिक्षार्थियों के लिए चिड़ियाघर के भ्रमण का आयोजन करती है। यह ..... में शिक्षार्थियों की मदद करेगा। (CTET 2014)

(1) जीव-जन्तु संरक्षण के कौशलों के विकास
(2) दैनिक समय सारणी की चर्चा में बदलाव
(3) कक्षा-कक्षीय अधिगम को वास्तविक जीवन की परिस्थितियों के साथ जोड़ने
(4) जीव जन्तुओं को पालतू कैसे बनाया जाए इसके प्रति संवेदनशीलता विकसित करना

व्याख्या *(3)* कक्षा-कक्षीय अधिगम को वास्तविक जीवन की परिस्थितियों के साथ जोड़ने के लिए शिक्षार्थियों को चिड़ियाघर का भ्रमण कराना चाहिए।
- जीव-जन्तुओं पर आधारित पाठ को पढ़ाने के बाद चिड़ियाघर का भ्रमण, शिक्षार्थियों को वास्तविक जीवन की परिस्थितियों के साथ जोड़ता है।

77. रश्मि को यह सिखाया जाता है कि वह प्रश्न-पत्र बनाते समय निम्न चरणों (क्रम में नहीं है) का अनुपालन करे
I. प्रश्न लिखना
II. रूपरेखा डिजाइन तैयार करना
III. प्रश्न-पत्र का सम्पादन करना
IV. ब्लू-प्रिण्ट तैयार करना
अनुपालन किए जाने वाले चरणों का सही क्रम कौन-सा है? (CTET 2014)

(1) IV, II, I, III (2) II, IV, I, III
(3) IV, I, II, III (4) I, II, IV, III

व्याख्या *(2)* रश्मि को प्रश्न-पत्र बनाते समय निम्न चरणों का अनुपालन करना चाहिए–
I. रूपरेखा डिजाइन तैयार करें II. ब्लू-प्रिंट तैयार करें
III. प्रश्न लिखें IV. प्रश्न-पत्र का सम्पादन करें

78. कक्षा V की पर्यावरण अध्ययन की पाठ्य-पुस्तक के एक पाठ में 'सर्वेक्षण और लेखन' पर एक भाग का मुख्य उद्देश्य है (CTET 2014)

(1) शिक्षार्थियों की सामान्य जानकारी का आकलन करना
(2) शिक्षार्थियों को अवसर उपलब्ध कराना कि वे चीजों को खोजें और सीखें
(3) विषय की आधारभूत अवधारणाओं को सीखने में शिक्षार्थियों की मदद करना
(4) शिक्षार्थियों के व्यावहारिक कौशलों में सुधार करना

For Best PDF, Search on Google - "Nitin Gupta PDF"
Scanned by CamScanner

व्याख्या *(2)* कक्षा V की पर्यावरण अध्ययन की पाठ्य-पुस्तक के एक पाठ में 'सर्वेक्षण और लेखन' पर एक भाग का मुख्य उद्देश्य है शिक्षार्थियों को अवसर उपलब्ध कराना कि वे चीजों को खोजें और सीखें।

79. वृक्ष संरक्षण की अवधारणा के विषय में शिक्षार्थियों को संवेदनशील बनाने के लिए गुंजन निम्नलिखित क्रियाकलापों का आयोजन करती है।

A. प्रत्येक शिक्षार्थी को इस बात के लिए प्रोत्साहित करना कि वे एक-एक वृक्ष को अपनाएँ और उसकी देखभाल करें

B. वन-संरक्षण पर वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन करना

C. वृक्षों पर आधारित पोस्टर-निर्माण सम्बन्धी प्रतियोगिता का आयोजन करना

D. शिक्षार्थियों को कटी लकड़ियों के भण्डार दिखाना।

वांछित उद्देश्य को प्राप्त करने में ऊपर दी गई गतिविधियों में से कौन-सी सबसे कम प्रभावी होगी (CTET 2014)

(1) A (2) B
(3) C (4) D

व्याख्या *(4)* वृक्ष संरक्षण की अवधारणा के विषय में शिक्षार्थियों को संवेदनशील बनाने के लिए ग्रत्येक शिक्षार्थी को इस बात के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए कि वे एक-एक वृक्ष को अपनाएँ और उसकी देखभाल करें।

- शिक्षार्थियों को कटी लकड़ियों के भण्डार दिखाना वृक्ष संरक्षण की अवधारणा के विषय में सबसे कम संवेदनशील गतिविधि है।

80. नेहा कक्षा V के EVS विषय में नीचे दी गई मूल्यांकन तकनीक का प्रयोग करती है।

A. हस्तसिद्ध क्रियाकलापों का मूल्यांकन

B. गृहकार्य मूल्यांकन

C. परियोजना कार्य मूल्यांकन

D. मौखिक परीक्षा

नीचे दी गई तकनीकों का कौन-सा युगल अधिक वस्तुनिष्ठ मूल्यांकन दे सकता है? (CTET 2014)

(1) B और C (2) A और D
(3) B और D (4) A और B

व्याख्या *(2)* हस्तसिद्ध क्रियाकलापों का मूल्यांकन तथा मौखिक परीक्षा अधिक वस्तुनिष्ठ मूल्यांकन दे सकते हैं।

- परियोजना कार्य तथा गृहकार्य में शिक्षक-शिक्षार्थी के मध्य संवाद नहीं हो पाता है। अतः यह अधिक वस्तुनिष्ठ नहीं हैं।

81. EVS में किसी अच्छे गृहकार्य को मुख्यतः किस पर केन्द्रित होना चाहिए? (CTET 2014)

(1) पुनरावृत्ति और प्रबलीकरण
(2) मास्टरी लर्निंग
(3) विस्तारित अधिगम के लिए चुनौतियाँ और उत्तेजना
(4) समय का सदुपयोग

व्याख्या *(3)* EVS में किसी अच्छे गृहकार्य को मुख्यतः विस्तारित अधिगम के लिए चुनौतियाँ और उत्तेजना पर केन्द्रित होना चाहिए।

82. प्राथमिक स्तर की अच्छी EVS पाठ्यचर्या में होना चाहिए (CTET 2014)

(1) पाठ के अन्त में अधिक अभ्यास प्रश्न सम्मिलित करना
(2) अपने आस-पास को खोजने के अवसर प्रदान करना
(3) संकल्पनाओं की विस्तृत व्याख्या पर अधिक एकाग्रता
(4) पदों की यथार्थ की परिभाषा पर अधिक बल देना

व्याख्या *(2)* प्राथमिक स्तर की अच्छी EVS पाठ्यचर्या को विद्यार्थी को अपने आस-पास को खोजने के अवसर प्रदान करने चाहिए।

83. प्राथमिक स्तर की EVS पाठ्य-पुस्तकों में कविताएँ और कहानियाँ सम्मिलित करने का कारण है (CTET 2014)

(1) विद्यार्थियों में साहित्यिक रुचि विकसित करना
(2) विषय के अधिगम में आमोद-प्रमोद प्रदान करना
(3) मूल संकल्पनाओं के अधिगम में वृद्धि करना
(4) विषय-वस्तु को प्रस्तुत करने की नित्यचर्या और एकरसता में परिवर्तन

व्याख्या *(2)* प्राथमिक स्तर की EVS पाठ्य-पुस्तकों में कविताएँ और कहानियों को सम्मिलित करने का मुख्य उद्देश्य विषय के अधिगम में आमोद-प्रमोद प्रदान करना है।

84. चार भावी शिक्षकों से कक्षा V के विद्यार्थियों के लिए मूल विषय 'यात्रा' पर प्रस्तुतीकरण बनाने के लिए कहा गया। प्रत्येक ने निम्नलिखित नीतियों में से किसी एक पर मुख्य रूप से केन्द्रित किया (CTET 2014)

(1) यात्रा के विभिन्न साधनों/विधियों को दर्शाने वाले चार्ट का उपयोग और उनकी व्याख्या
(2) पाठ्य-पुस्तक की विषय-वस्तु के उपयोग द्वारा यात्रा की विभिन्न विधियों की व्याख्या
(3) विद्यार्थियों से यात्रा के विभिन्न साधनों के चित्र एकत्र करके स्क्रैपबुक बनाने के लिए कहना
(4) विद्यार्थियों से यात्रा में उपयोग किए गए विभिन्न साधनों के अनुभवों का वर्णन करने के लिए कहना

व्याख्या *(4)* यात्रा पर प्रस्तुतीकरण बनाने के लिए विद्यार्थियों से यात्रा में उपयोग किए गए विभिन्न साधनों के अनुभवों का वर्णन करने के लिए कहना सबसे ज्यादा उपयुक्त होगा।

- यात्रा वृतांत के वर्णन के क्रम में विद्यार्थी स्वयं के विचारों को अच्छे से प्रस्तुत कर पाँएगें।

85. कक्षा V की EVS की पाठ्य-पुस्तक के किसी पाठ में 'सोचिए और चर्चा कीजिए' भाग में नीचे दिया गया कथन लिखा है

''यदि आपके गाँव अथवा शहर में एक सप्ताह तक पेट्रोल अथवा डीजल न हो, तो क्या होगा?''

इस कथन का मुख्य उद्देश्य है (CTET 2014)

(1) छात्रों को तेल के न्यायसंगत उपयोग के बारे में संवेदनशील बनाना
(2) छात्रों को पेट्रोल और डीजल के स्रोतों के बारे में मूल्यांकन
(3) वास्तविक जीवन की चिन्ताओं को समझने हेतु कल्पना और सोचने विचारने की कुशलता को बढ़ावा देना
(4) पेट्रोल और डीजल की कमी के बारे में जागृति उत्पन्न करना

For Best PDF, Search on Google - "Nitin Gupta PDF"
Scanned by CamScanner

व्याख्या *(3)* "यदि आपके गाँव अथवा शहर में एक सप्ताह तक पेट्रोल अथवा डीजल न हो, तो क्या होगा"–इस कथन का मुख्य उद्देश्य है–वास्तविक जीवन की चिन्ताओं को समझने हेतु कल्पना और सोचने-विचारने की कुशलता को बढ़ावा देना।

86. EVS की पढ़ाई में 'कक्षा में प्रश्नोत्तर' तकनीक का सबसे अच्छा उपयोग किसके लिए किया जा सकता है? **(CTET 2014)**

(1) विद्यार्थियों का ध्यान आकर्षित करने के लिए
(2) शिक्षार्थियों में सीखने की जिज्ञासा उत्पन्न करने के लिए
(3) प्रायोगिक कौशल को बढ़ावा देने के लिए
(4) कक्षा में अनुशासन बनाए रखने के लिए

व्याख्या *(2)* कक्षा में 'प्रश्नोत्तर' तकनीक का सबसे अच्छा उपयोग शिक्षार्थियों में सीखने की जिज्ञासा उत्पन्न करने के लिए किया जा सकता है।

- प्रश्नोत्तर तकनीक/विधि के माध्यम से शिक्षक यह जानकारी प्राप्त करने में सक्षम हो जाते हैं कि शिक्षार्थी अधिगम के किस स्तर पर है।

87. प्राथमिक स्तर पर, वृक्षों के संरक्षण की संकल्पना के बारे में विद्यार्थियों को संवेदनशील बनाने के लिए नीचे दिया गया कौन-सा क्रियाकलाप उपयुक्त नहीं है? **(CTET 2014)**

(1) वृक्षों पर नारा लेखन (Slogan writing) प्रतियोगिता आयोजित करना
(2) प्रत्येक छात्र को एक वृक्ष को अपनाकर उसकी देख-रेख के लिए प्रोत्साहित करना
(3) बच्चों को लकड़ी के लट्ठों का भण्डार दिखाना
(4) वृक्षों पर पोस्टर बनाने की प्रतियोगिता आयोजित करना

व्याख्या *(3)* बच्चों को लकड़ी के लट्ठों का भण्डार दिखाना अनुपयुक्त क्रियाकलाप है।

- वृक्षों के संरक्षण की संकल्पना के बारे में विद्यार्थियों को संवेदनशील बनाने के लिए वृक्षों पर नारा लेखन प्रतियोगिता आयोजित करना, प्रत्येक छात्र को एक वृक्ष को अपनाकर उसकी देख-रेख के लिए प्रोत्साहित करना तथा वृक्षों पर पोस्टर बनाने की प्रतियोगिता आयोजित करना सबसे उपयुक्त क्रियाकलाप हैं।

88. EVS की कक्षा में 'जल' का पाठ पढ़ाते समय अंजलि ने अपनी कक्षा में जल के विभिन्न स्त्रोतों और जल को संरक्षित करने के लिए व्यक्तिगत क्रियाओं पर रोल-प्ले आयोजित किया। इस क्रियाकलाप का मुख्य उद्देश्य है **(CTET 2014)**

(1) विद्यार्थियों की सामाजिक कुशलताओं में सुधार करना
(2) अधिगम की प्रक्रिया में एकरसता को तोड़ना
(3) अधिगम की प्रक्रिया में विद्यार्थियों का सक्रिय भाग लेना सुनिश्चित करना
(4) जल के स्त्रोतों के विषय में विद्यार्थियों के ज्ञान में वृद्धि करना

व्याख्या *(3)* EVS की कक्षा में जल के विभिन्न स्त्रोतों और जल को संरक्षित करने के लिए व्यक्तिगत क्रियाओं पर रोल-प्ले आयोजित करने का मुख्य उद्देश्य अधिगम की प्रक्रिया में विद्यार्थियों का सक्रिय भाग लेना सुनिश्चित करना है।

89. EVS कक्षा में सामाजिक असमानताओं पर अधिक बल देने के लिए निम्नलिखित में से कौन-सा अधिक प्रभावी अधिगम अनुभव होगा? **(CTET 2014)**

(1) सम्बन्धित मामलों (समस्याओं) पर विडियो फिल्म दिखाना
(2) सम्बन्धित मामलों (समस्याओं) पर विशिष्ट भाषण आयोजित करना
(3) सम्बन्धित मामलों पर क्विज प्रतियोगिता (प्रश्नोत्तर प्रतियोगिता) का संचालन
(4) विद्यार्थियों से समूह परियोजनाओं का भार अपने ऊपर लेने के लिए कहना

व्याख्या *(4)* सामाजिक असमानताओं पर अधिक बल देने के लिए विद्यार्थियों से समूह परियोजना बनाकर कार्य करने को कहना चाहिए।

- इससे विद्यार्थियों के बीच परस्पर संवाद तथा अंतः क्रिया होगी जिससे उन्हें समाज में व्याप्त सामाजिक असमानताओं के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त हो सकेगी।

90. पर्यावरण अध्ययन की पाठ्य-पुस्तकों में विभिन्न प्रकरणों में एक खण्ड 'करके देखो' को शामिल किया गया है, जिसका उद्देश्य है **(CTET 2013)**

(1) घर में शिक्षार्थियों को व्यस्त रखना
(2) प्रत्यक्ष हस्तपरक अनुभव उपलब्ध कराना
(3) परीक्षा में निष्पादन को सुधारना
(4) वैज्ञानिक शब्दावली की परिभाषाएँ सीखना

व्याख्या *(2)* पर्यावरण अध्ययन की पाठ्य-पुस्तकों में विभिन्न प्रकरणों में एक खण्ड 'करके देखो' को शामिल किया गया है, जिसका उद्देश्य प्रत्यक्ष हस्तपरक अनुभव उपलब्ध कराना है।

- इससे शिक्षार्थियों की अधिगम-प्रक्रिया सुदृढ़ होगी।

91. पर्यावरण अध्ययन में एक अच्छे दत्तकार्य का मुख्य लक्ष्य होना चाहिए **(CTET 2013)**

(1) अधिगम-विस्तार के अवसर उपलब्ध कराना
(2) प्रभावी अधिगम के लिए पाठ की दोहराई
(3) समय का बेहतर उपयोग सुनिश्चित करना
(4) शिक्षार्थियों को अनुशासन में बनाए रखना

व्याख्या *(1)* पर्यावरण अध्ययन में एक अच्छे दत्तकार्य का मुख्य लक्ष्य अधिगम-विस्तार के अवसर उपलब्ध कराना है।

92. पर्यावरण अध्ययन के शिक्षक के रूप में चिड़ियाघर के भ्रमण का आयोजन करने का मुख्य उद्देश्य होना चाहिए। **(CTET 2013)**

(1) शिक्षा की गुणवत्ता के बारे में अभिभावकों को सन्तुष्ट करना
(2) शिक्षार्थियों को आनन्द और मजा उपलब्ध कराना
(3) नित्य शिक्षण कार्यक्रम की एकरसता को बदलना
(4) शिक्षार्थियों को सक्रिय अधिगम अनुभव उपलब्ध कराना

व्याख्या *(4)* पर्यावरण अध्ययन के शिक्षक के रूप में चिड़ियाघर के भ्रमण का आयोजन करने का मुख्य उद्देश्य शिक्षार्थियों को सक्रिय अधिगम अनुभव उपलब्ध कराना है।

For Best PDF, Search on Google - "Nitin Gupta PDF"
Scanned by CamScanner

93. सामाजिक विज्ञान के सन्दर्भ में पर्यावरण अध्ययन पढ़ने का निम्नलिखित में से कौन-सा उद्देश्य नहीं है? (CTET 2013)

(1) इसे बच्चों को मुख्य शब्दावली की सही परिभाषा याद करने योग्य बनाना चाहिए
(2) इसे शिक्षार्थियों को विद्यमान विचारों और अभ्यासों पर प्रश्न करने के योग्य बनाना चाहिए
(3) इससे बच्चों को समाज के एक जिम्मेदार सदस्य के रूप में बढ़ने के योग्य बनाना चाहिए
(4) इसे बच्चों को संस्कृति-अभ्यासों में विविधता का सम्मान करने योग्य बनाना चाहिए

व्याख्या *(1)* सामाजिक विज्ञान के सन्दर्भ में पर्यावरण अध्ययन पढ़ने का उद्देश्य शिक्षार्थियों को विद्यमान विचारों और अभ्यासों पर प्रश्न करने योग्य बनाना, समाज के जिम्मेदार सदस्य के रूप में बढ़ने के योग्य बनाना तथा बच्चों को सांस्कृतिक विविधता का सम्मान करने योग्य बनाना है।
- अतः इसका यह उद्देश्य कदापि नहीं है कि बच्चों को मुख्य शब्दावली की सही परिभाषा याद करने योग्य बनाया जाए।

94. कविता पर्यावरण अध्ययन की कक्षा में गरीबी, निरक्षरता और वर्ग-असमानता जैसे सामाजिक मुद्दों पर बल देना चाहती है। निम्नलिखित में से कौन-सा अधिगम-अनुभव इस उद्देश्य की प्राप्ति में अधिक प्रभावी होगा? (CTET 2013)

(1) शिक्षार्थियों को सम्बन्धित मुद्दों पर स्लोगन लिखने के लिए कहना
(2) सम्बन्धित मुद्दों पर विशेष व्याख्यानों का आयोजन करना
(3) शिक्षार्थियों को सम्बन्धित सामाजिक मुद्दों पर चार्ट तैयार करने के लिए कहना
(4) शिक्षार्थियों को सम्बन्धित जानकारी एकत्र करने और विश्लेषण करने के लिए सामूहिक परियोजना लेने के लिए कहना

व्याख्या *(4)* पर्यावरण अध्ययन की कक्षा में गरीबी, निरक्षरता और वर्ग-असमानता जैसे सामाजिक मुद्दों को बताने के लिए शिक्षार्थियों को सम्बन्धित जानकारी एकत्र करने और उनका विश्लेषण करने के लिए सामूहिक परियोजना लेने के लिए कहा जाए। इससे शिक्षार्थी मूल समस्याओं से अवगत हो पाएँगें।

95. प्राथमिक स्तर पर पर्यावरण अध्ययन में रचनात्मक आकलन ..... को शामिल नहीं करता। (CTET 2013)

(1) शिक्षार्थियों की ग्रेडिंग और रैंकिंग
(2) शिक्षार्थियों के अधिगम-रिक्तियों की पहचान
(3) शिक्षण में कमियों की पहचान
(4) शिक्षार्थियों के सीखने को बढ़ाने

व्याख्या *(1)* प्राथमिक स्तर पर पर्यावरण अध्ययन में रचनात्मक आकलन शिक्षार्थियों की ग्रेडिंग और रैंकिंग को शामिल नहीं करता।

96. निम्नलिखित में से कौन-सा प्राथमिक स्तर पर पर्यावरण अध्ययन की पाठ्यचर्या की आवश्यकता के अनुरूप नहीं है? (CTET 2013)

(1) उसे शिक्षार्थियों के मानसिक स्तर के अनुकूल होना चाहिए
(2) उसे काम की दुनिया में प्रवेश के लिए शिक्षार्थियों को ज्ञान एवं कौशल से लैस करना चाहिए
(3) उसे शिक्षार्थियों में पर्यावरण के सरोकार को उत्पन्न करना चाहिए
(4) उसे शिक्षार्थियों को उन पद्धतियों और प्रक्रियाओं को अर्जित करने में शामिल रखना चाहिए जो नये ज्ञान को उत्पन्न करने में आगे ले जाएँगे

व्याख्या *(2)* काम की दुनिया में प्रवेश के लिए शिक्षार्थियों को ज्ञान एवं कौशल से लैस करना पर्यावरण अध्ययन की पाठ्यचर्या की आवश्यकता के अनुरूप नहीं है।

97. एनसीईआरटी की पाठ्य-पुस्तकों में पर्यावरण अध्ययन को उच्च प्राथमिकता और स्थान दिया गया है (CTET 2013)

(1) अधिक संख्या में अभ्यास प्रश्नों को शामिल करने के लिए
(2) विषय की आधारभूत संकल्पनाओं की व्याख्या करने के लिए
(3) चिन्तन और विस्मय के लिए शिक्षार्थियों को अवसर उपलब्ध कराने के लिए
(4) तकनीकी शब्दावली की सटीक परिभाषाएँ उपलब्ध कराने के लिए

व्याख्या *(3)* एनसीईआरटी की पाठ्य-पुस्तकों में पर्यावरण अध्ययन को उच्च प्राथमिकता और स्थान चिन्तन और विस्मय के लिए शिक्षार्थियों को अवसर उपलब्ध कराने के लिए दिया गया है।

98. पर्यावरण अध्ययन की पाठ्य-पुस्तकों में कविताओं और कहानियों को शामिल करने का निम्नलिखित में से कौन-सा उद्देश्य नहीं है? (CTET 2013)

(1) शिक्षार्थियों में कल्पनाशीलता और सृजनात्मक योग्यता को बढ़ावा देना
(2) विषय में रुचि का विकास करना
(3) नित्य और एकरस विषय-वस्तु में बदलाव करना
(4) शिक्षार्थियों को आनन्द और मजा उपलब्ध कराना

व्याख्या *(4)* पर्यावरण अध्ययन की पाठ्य-पुस्तकों में कविताओं और कहानियों को शामिल करने का उद्देश्य है विषय में रूचि का विकास करना, शिक्षार्थियों में कल्पनाशीलता और सृजनात्मक योग्यता को बढ़ावा देना तथा नित्य और एकरस विषय-वस्तु में बदलाव करना है।
- अतः शिक्षार्थियों को आनन्द और मजा उपलब्ध कराना इसका उद्देश्य नहीं होता है।

99. 'पर्यावरण अध्ययन की एक अच्छी पाठ्यचर्या को बच्चे के प्रति सही, जीवन के प्रति सही और विषय के प्रति सही होना चाहिए।' पाठ्यचर्या की निम्नलिखित विशेषताओं में से कौन-सी उपरोक्त आवश्यकता को पूरा नहीं करती? (CTET 2013)

(1) यह शब्दावली और परिभाषाओं पर अधिक बल देती है
(2) यह भय एवं पूर्वाग्रहों से मुक्त होने के मूल्य को बढ़ावा देती है
(3) यह विषय को एक सामाजिक प्रक्रम के रूप में देखने के लिए शिक्षार्थियों हेतु आवश्यक है
(4) यह शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया पर अधिक बल देती है

व्याख्या *(1)* पाठ्यचर्या शब्दावली और परिभाषाओं पर अधिक बल देती है। यह पूर्ण रूप से सही नहीं हैं। पर्यावरण अध्ययन की पाठ्यचर्या को बच्चे के जीवन और विषय के प्रति सही होना चाहिए।

For Best PDF, Search on Google - "Nitin Gupta PDF"
Scanned by CamScanner

100. नलिनी कक्षा III के शिक्षार्थियों को 'जानवर-हमारे साथी' प्रकरण से परिचित कराना चाहती है। प्रकरण को और अधिक रोचक तरीके से प्रस्तुत करने के लिए निम्नलिखित में से कौन-सी युक्ति सर्वाधिक उपयुक्त होगी? (CTET 2013)

(1) शिक्षार्थियों को पाठ्य-पुस्तक में जानवरों के दिए गए चित्रों को देखने के लिए कहना
(2) विभिन्न जानवरों के चित्रों को प्रदर्शित करने वाले चार्ट का प्रयोग करना
(3) विभिन्न जानवरों के चित्रों को श्यामपट्ट पर बनाना
(4) जानवरों तथा उनकी उपयोगिता पर आधारित फिल्म प्रदर्शित करना

व्याख्या *(4)* जानवरों तथा उनकी उपयोगिता पर आधारित फिल्म प्रदर्शित करके नलिनी कक्षा III के शिक्षार्थियों को 'जानवर-हमारे साथी' प्रकरण को अच्छे से समझा सकती है।

101. प्रयोगशीलता, खोजना, जाँच-पड़ताल और प्रश्न पूछना पर्यावरण अध्ययन के सक्रिय अधिगम के अनिवार्य तत्वों का निर्माण करते हैं। एक शिक्षक 'खाना, जो हमें खाना चाहिए' की संकल्पना के बारे में बताने के लिए निम्नलिखित गतिविधियों की व्यवस्था करता है (CTET 2013)

(1) प्रकरण पर एक वीडियो दिखाता है
(2) श्यामपट्ट पर उस प्रकार के सभी भोज्य पदार्थों के चित्र बनाता है
(3) विभिन्न भोज्य पदार्थों के उदाहरण देता है, प्रत्येक में अनिवार्य तत्व बताता है
(4) शिक्षार्थियों से कहता है कि सभी सम्भावित स्रोतों से सम्बन्धी जानकारी एकत्र करें।

उपरोक्त चार गतिविधियों में से कौन-सी सक्रिय अधिगम को सन्तुष्ट करती है?

व्याख्या *(2)* एक शिक्षक को 'खाना, जो हमें खाना चाहिए' की संकल्पना के बारे में बताने के लिए श्यामपट्ट पर उसी प्रकार के भोज्य पदार्थों के चित्र बनाकर दिखाना चाहिए।
- यह तरीका सक्रिय अधिगम का भाग होगा।

102. पर्यावरण अध्ययन की कक्षा में संकल्पनाओं को स्पष्ट करने के लिए कविताओं और कहानी-कथन का प्रयोग करना .....सहायता करता है। (CTET 2012)

(1) पाठ को आनंददायी और रोचक बनाने में
(2) स्थानीय एवं वैश्विक स्तर पर संसार की प्रकृति को खोजने और कल्पना करने की योग्यता को बढ़ावा देने में
(3) शिक्षार्थियों में निहित भाषा एवं सांस्कृतिक विविधताओं का ध्यान रखने में
(4) सही दिशा में विद्यार्थियों की ऊर्जा का सारणीकरण करने में

व्याख्या *(2)* पर्यावरण अध्ययन की कक्षा में संकल्पनाओं को स्पष्ट करने के लिए कविताओं और कहानी-कथनों का प्रयोग करने से छात्रों में स्थानीय एवं वैश्विक स्तर पर संसार की प्रकृति को खोजने और कल्पना करने की योग्यता को बढ़ावा देने में सहायता मिलती है।

103. सहयोगात्मक अधिगम में पुराने एवं अधिक दक्ष विद्यार्थी छोटे एवं कम कुशल विद्यार्थियों का आकलन करते हैं। (CTET 2012)

(1) समूहों में द्वन्द्व
(2) गहन प्रतियोगिता
(3) उच्च उपलब्धि और स्व-गरिमा
(4) उच्च नैतिक विकास

व्याख्या *(3)* सहयोगात्मक अधिगम में पुराने एवं अधिक दक्ष विद्यार्थी अपनी उच्च उपलब्धि और स्व-गरिमा के आधार पर कम कुशल विद्यार्थियों का आकलन करते हैं।

104. पर्यावरण अध्ययन की पाठ्य-पुस्तकों में अभ्यास एवं गतिविधियों को ..... उपलब्ध कराना चाहिए। (CTET 2012)

(1) प्रकरणों में अन्त: निर्मित
(2) पुस्तक में अलग-अलग स्थानों पर
(3) इकाई के अन्त में
(4) पाठ के अन्त में

व्याख्या *(1)* पर्यावरण अध्ययन की पाठ्य-पुस्तकों में अभ्यास एवं गतिविधियों के प्रकरणों को अन्त: निर्मित उपलब्ध कराना चाहिए।

105. पर्यावरण अध्ययन के शिक्षकों को (CTET 2012)

(1) बच्चों के दृष्टिकोण को स्वीकार करना एवं सम्मान देना चाहिए
(2) अभिभावकों के विचार को स्वीकार करना एवं सम्मान देना चाहिए
(3) विशेषत: प्रयोगों पर ध्यान देना चाहिए
(4) विशेषत: पुस्तकों और परीक्षाओं पर ध्यान देना चाहिए

व्याख्या *(3)* पर्यावरण अध्ययन के शिक्षकों को विशेषत: प्रयोगों पर ध्यान देना चाहिए। इस विधि से बालक स्वयं प्रयोग करके प्राप्त ज्ञान की प्राप्ति कर सकता है।

106. प्राथमिक स्तर पर बच्चे का आकलन करने का सर्वश्रेष्ठ तरीका है ..... का प्रयोग करना। (CTET 2012)

(1) गृह कार्य (2) योगात्मक कार्य
(3) पोर्टफोलियो (4) आवधिक परीक्षाएँ

व्याख्या *(3)* प्राथमिक स्तर पर बच्चे का आकलन करने का सर्वश्रेष्ठ तरीका पोर्टफोलियो का प्रयोग करना है।

107. ..... के अलावा निम्नलिखित पर्यावरण अध्ययन पढ़ाने की विधियाँ हैं। (CTET 2012)

(1) सहयोगात्मक अधिगम
(2) निर्देशित खोज
(3) व्याख्यानों द्वारा स्पष्ट करने
(4) समस्या-समाधान

व्याख्या *(3)* व्याख्यानों द्वारा स्पष्ट करने के अलावा सभी पर्यावरण अध्ययन पढ़ाने की विधियाँ हैं।

108. ..... के अलावा बच्चे के विकास को आकार देने वाले वातावरणीय कारकों में निम्नलिखित सभी शामिल हैं। (CTET 2012)

(1) शिक्षा की गुणवत्ता (2) पौष्टिकता की गुणवत्ता
(3) शारीरिक गठन (4) संस्कृति

For Best PDF, Search on Google - "Nitin Gupta PDF"
Scanned by CamScanner

व्याख्या (3) शारीरिक गठन के अलावा बच्चे के विकास को आकार देने वाले वातावरणीय कारकों में अन्य तीनों विकल्प शामिल हैं।

109. कक्षा में एक प्रभावी शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया होती है जब शिक्षक बच्चों के ज्ञान को पढ़ाई जानी वाली नई संकल्पना के साथ जोड़ने में सहायता करता है। इसके पार्श्व में निहित उद्देश्य है ..... को बढ़ावा देना। (CTET 2012)

(1) शिक्षार्थी-स्वायत्तता
(2) पुनर्बलन
(3) ज्ञान का सह-सम्बन्ध एवं स्थानान्तरण
(4) वैयक्तिक भिन्नताओं

व्याख्या (3) कक्षा में एक प्रभावी शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया होती है जब शिक्षक बच्चों के ज्ञान को पढ़ाई जाने वाली नई संकल्पना के साथ जोड़ने में सहायता करता है।
- इसके पार्श्व में निहित उद्देश्य है ज्ञान का सह-सम्बन्ध एवं स्थानान्तरण को बढ़ावा देना।

110. रोहन के विद्यालय में एक विज्ञान प्रदर्शनी का आयोजन किया गया था। इसका आयोजन एक उद्देश्य के साथ किया गया था। आपके विचार से कौन-सा उद्देश्य सर्वाधिक उपयुक्त है? (CTET 2012)

(1) विद्यालय का नाम प्रसिद्ध करना
(2) अभिभावकों को सन्तुष्ट करना
(3) विभिन्न व्यवसायों के लिए विद्यार्थियों को प्रशिक्षित करना
(4) शिक्षार्थियों के लिए सृजनात्मक माध्यम उपलब्ध कराना

व्याख्या (4) विद्यालय में विज्ञान प्रदर्शनी का आयोजन इसलिए किया गया था ताकि शिक्षार्थियों के लिए सृजनात्मक माध्यम उपलब्ध हो सके।
- अर्थात् शिक्षार्थी स्वयं विज्ञान के क्षेत्र में सृजनात्मक निर्माण करने के कौशल से अवगत हो सकें।

111. प्रयोग और प्रयोगात्मक कार्य करते हुए श्यामा का निष्पादन कक्षा में सर्वश्रेष्ठ होता है। उसे बहुत सृजनात्मक शिक्षार्थी माना जाता है। इसलिए वह ..... के द्वारा संकल्पनाओं को सीखती है। (CTET 2012)

(1) अपसारी चिन्तन (2) मॉडलिंग
(3) अनुकरण (4) अभिसारी चिन्तन

व्याख्या (1) प्रयोग और प्रयोगात्मक कार्य करते हुए श्यामा का निष्पादन कक्षा में सर्वश्रेष्ठ होता है। उसे बहुत सृजनात्मक शिक्षार्थी माना जाता है।
- अर्थात् श्यामा कम समय में शीघ्रता से अच्छा कार्य करती है। अतः वह अपसारी चिन्तन के द्वारा संकल्पनाओं को सीखती है।

112. एक पब्लिक स्कूल में प्रत्येक कक्षा में लगभग दो से तीन बच्चे विशेष आवश्यकता वाले हैं। कुछ बच्चे शारीरिक या मानसिक रूप से विकलांग (बाधित) हैं। ये बच्चे अन्य बच्चों के साथ उसी कक्षा में एक साथ पढ़ते हैं। उपरोक्त पब्लिक स्कूल निम्न में से किसका अनुपालन करता है? (CTET 2012)

(1) समव्यस्क शिक्षा
(2) प्रतिपूरक अधिगम
(3) सतत एवं व्यापक मूल्यांकन
(4) समावेशी शिक्षा

व्याख्या (4) वह पब्लिक स्कूल समावेशी शिक्षा का अनुपालन करता है।
- समावेशी शिक्षा के अन्तर्गत अशक्त बच्चों की शिक्षा-सशक्त बच्चों के साथ व्यवस्थित की जाती है।

113. पर्यावरण अध्ययन (EVS) की शिक्षिका 'वायु' प्रकरण को पढ़ाते समय यह प्रदर्शित करना चाहती है कि वायु में भार होता है और वह जगह घेरती है। उसके सहयोगी इस उद्देश्य के लिए उसे निम्नलिखित चार भिन्न गतिविधियाँ सुझाते हैं
1. **खाली उलटा बीकर पानी की सतह के ऊपर रखें और उसे नीचे धकेलें।**
2. **स्ट्रॉ के माध्यम से जूस को खींचना।**
3. **गुब्बारे में हवा भरना।**
4. **दो भरे हुए गुब्बारे एक छड़ से बाँधे तथा साम्यावस्था में ले आएँ, तब किसी एक गुब्बारे को फोड़ दें।**

उपरोक्त गतिविधियों में से कौन-सी गतिविधियाँ वाँछनीय परिणामों को प्रदर्शित करेगी? (CTET 2012)

(1) 1 और 2 (2) 1 और 4
(3) 2 और 4 (4) 1 और 3

व्याख्या (2) पर्यावरण अध्ययन (EVS) की शिक्षिक 'वायु' प्रकरण को पढ़ाते समय यह प्रदर्शित करना चाहती है कि वायु में भार होता है और वह जगह घेरती है। उसके सहयोगी इस उद्देश्य के लिए चार गतिविधियाँ सुझाते हैं जिनमें से विकल्प 2 सही गतिविधि है।
- खाली उलटा बीकर पानी की सतह के ऊपर रखकर तथा उस उलटे बीकर को सीधे ही नीचे धकेलने पर उसमें पानी नहीं भरता है।
- यदि बीकर को थोड़ा झुका दिया जाए तो इसमें से वायु के बुलबुले बाहर आते हुए दिखाई देते हैं और पानी धीरे-धीरे बीकर में अन्दर जाने लगता है जिससे सिद्ध होता है कि वायु जगह घरेती है।
- यदि दो भरे गुब्बारों को एक छड़ से बाँधे तथा साम्यावस्था में ले आएँ, तब किसी एक गुब्बारे को फोड दें तो छड़ फूटे हुए गब्बारे की ओर झुक जाएगी। इससे स्पष्ट होता है कि वायु में भार होता है तथा वह जगह घेरती है।

अतः गतिविधि 2 तथा 3 वायु में भार तथा जगह घेरने से सम्बन्धित गतिविधियाँ नहीं हैं।

114. एक विज्ञान शिक्षिका 'श्वसन' प्रकरण पढ़ाने के बाद परीक्षा का आयोजन करती है और यह देखती है कि अधिकांश विद्यार्थी श्वसन और साँस लेने के बीच अन्तर को नहीं समझते हैं। यह किसके कारण हो सकता है? (CTET 2012)

(1) वह कक्षा में प्रभावी तरीके से सम्बन्धित संकल्पना को व्याख्यायित नहीं कर सकी
(2) वह उनकी कक्षा अध्यापिका नहीं है
(3) विद्यार्थी प्रश्न को सही तरीके से नहीं समझ सके
(4) शिक्षिका की कक्षा में प्रायः बहुत अनुशासनहीनता रहती है

व्याख्या (1) एक विज्ञान शिक्षिका 'श्वसन' प्रकरण पढ़ाने के बाद परीक्षा का आयोजन करती है और यह देखती है कि अधिकांश विद्यार्थी श्वसन और साँस लेने के बीच अन्तर को नहीं समझते हैं इसका कारण यह है कि वह कक्षा में प्रभावी तरीके से सम्बन्धित संकल्पना को व्याख्यायित नहीं कर सकी है।

For Best PDF, Search on Google - "Nitin Gupta PDF"
Scanned by CamScanner

- शिक्षिका द्वारा किया गया शिक्षण प्रभावशाली नहीं था।
- शिक्षिका को प्रकरण के दौरान प्रयोग (experiment) करने चाहिए थे तथा उदाहरणों के द्वारा 'श्वसन' प्रकरण को प्रस्तुत करना चाहिए था।
- प्रयोग व उदाहरणों से प्रकरण को समझना सरल हो जाता है।

115. भारत में समृद्ध वनस्पतिजात और प्राणीजात (Flora-fauna) के बारे में पढ़ाने के बाद, विद्यालय द्वारा प्राथमिक कक्षाओं में विद्यार्थियों को रणथम्भोर राष्ट्रीय उद्यान ले जाया जाता है। यह ..... में विद्यार्थियों की सहायता करेगा। **(CTET 2012)**

(1) प्रकृति के प्रति सम्मान विकसित करने
(2) कक्षीय अधिगम को वास्तविक जीवन-स्थितियों के साथ जोड़ने
(3) पर्यावरण संरक्षण के लिए कौशलों के विकास
(4) बाहरी भ्रमण में दोस्तों के साथ मजा लेने

व्याख्या *(2)* भारत में समृद्ध वनस्पतिजात और प्राणीजात (Flora-founa) के बारे में पढ़ाने के बाद, विद्यालय द्वारा प्राथमिक कक्षाओं के विद्यार्थियों को राष्ट्रीय उद्यान ले जाया जाता है। यह कक्षीय अधिग्रम को वास्तविक जीवन-स्थितियों के साथ जोड़ने में विद्यार्थियों की सहायता करेगा।

- भ्रमण का उद्देश्य कक्षीय अधिगम को वास्तविक जीवन स्थितियों के साथ जोड़ना है।
- वास्तविक परिस्थितियों के सम्पर्क में आने से अधिगम स्थायी हो जाता है।

116. शामिल करना (Engage), खोजबीन करना (Explore), व्याख्या करना (Explain), विस्तार देना (Elaborate), और मूल्यांकन करना (Evaluate), विज्ञान के प्रभावी शिक्षण से जुड़े पाँच महत्त्वपूर्ण 'Es' हैं।
'अंकुरण के लिए आवश्यक स्थितियाँ' की संकल्पना से जुड़े व्यावहारिक अनुभवों को विद्यार्थियों को उपलब्ध कराते समय एक विज्ञान शिक्षिका उनसे निम्नलिखित गतिविधियाँ करने के लिए कहती है

1. **बीजों को रातभर पानी में रखें और उन्हें सूती गीले कपड़े में रखें।**
2. **दो दिनों बाद बीजों का अवलोकन करें और उनमें आए परिवर्तनों को रिकॉर्ड करें।**
3. **पुस्तक पढ़ें और दिए गए कार्य-पत्रक (Work sheet) का काम करें।**

शिक्षक द्वारा दी गई उपरोक्त गतिविधियों में इन पाँच 'Es' में से कौन-से शामिल नहीं होते हैं? **(CTET 2012)**

(1) Engage और Evaluate
(2) Explain और Elaborate
(3) Explore और Evaluate
(4) Engage और Explore

व्याख्या *(4)* 'अंकुरण के लिए आवश्यक स्थितियाँ' की संकल्पना से जुड़े व्यावहारिक अनुभवों को विद्यार्थियों को उपलब्ध कराते समय एक विज्ञान शिक्षिका गतिविधियाँ कराती है। इन गतिविधियों में Engage और Explore शामिल नहीं होते हैं।

- Engage अर्थात-शामिल करना और Explore अर्थात् खोजबीन करना।
- प्रश्न में दी गई गतिविधियाँ Explain (व्याख्या करना), Elaborate (विस्तार देना) तथा Evaluate (मूल्यांकन करना) कर रही हैं।
- लेकिन Engage और Explore कहीं भी नहीं हो रहा है अतः विकल्प 4 सही उत्तर है।

117. एक कक्षा के अनुभाग 'अ' को 'पेट्रोलियम और कोयले के भण्डारों में रिक्तिकरण' प्रकरण पढ़ाने के लिए 'मल्टीमीडिया कैपसूल' (Multimedia Capsule) का प्रयोग किया गया, जबकि अनुभाग 'ब' को ग्रीन बोर्ड पर आरेख बनाते हुए पढ़ाया गया। बाद में यह पाया गया कि अनुभाग 'अ' के विद्यार्थियों ने एक बेहतर सीमा तक प्रकरण को समझ लिया। ऐसा होने का कारण यह हो सकता है कि **(CTET 2012)**

(1) ग्रीन बोर्ड एक अच्छी दृश्य सामग्री नहीं है
(2) बहुत उपागम दैनिक जीवन-स्थितियों के अधिक नजदीक है
(3) मल्टीमीडिया सामग्रियों का प्रयोग अपेक्षाकृत अधिक मितव्ययी (Economical) है
(4) दृश्य-श्रव्य सामग्रियाँ बेहतर संधारण के लिए सभी इन्द्रियों को शामिल करती हैं।

व्याख्या *(4)* एक कक्षा के अनुभाग 'अ' को 'पेट्रोलियम और कोयले के भण्डारों में रिक्तिकरण' प्रकरण पढ़ाने के लिए 'मल्टीमिडिया कैपसूल (Multimedia Capsule) का प्रयोग किया गया, जबकि अनुभाग 'ब' को ग्रीन बोर्ड पर आरेख बनाते हुए पढ़ाया गया।

- बाद में यह पाया गया कि भाग 'अ' के विद्यार्थियों ने एक बेहतर सीमा तक प्रकरण को समझ लिया है। ऐसा होने के पीछे कारण यह कि दृश्य-श्रव्य सामग्रियाँ बेहतर संधारण के लिए सभी इन्द्रियों को शामिल करती हैं।
- शिक्षण प्रक्रिया के दौरान विद्यार्थी जितना अधिक इन्द्रियों का प्रयोग करेगा, अधिगम उतना ही स्थायी होगा।
- कक्षा को दो अनुभागों में बाँटकर इस प्रकार से शिक्षण देकर यह सिद्ध हो ही चुका है।

118. एक सन्तुलित प्रश्न-पत्र बनाने के लिए निम्नलिखित चरणों के क्रम में से कौन-सा सही तरीका है? **(CTET 2012)**

(1) डिजाइन तैयार करना, ब्लूप्रिन्ट तैयार करना, प्रश्न लिखना और उनका सम्पादन करना, अंक-योजना लिखना
(2) डिजाइन तैयार करना, प्रश्न लिखना, अंक-योजना तैयार करना, ब्लूप्रिन्ट से मिलान करना
(3) प्रश्न लिखना और उनका सम्पादन करना, डिजाइन से मिलान करना, ब्लूप्रिन्ट तैयार करना, अंक-योजना लिखना
(4) प्रश्न लिखना,' ब्लूप्रिन्ट (रूपरेखा) तैयार करना, डिजाइन से मिलान करना, अंक-योजना लिखना

व्याख्या *(1)* एक सन्तुलित प्रश्न-पत्र बनाने के लिए डिजाइन तैयार करना, ब्लूप्रिन्ट तैयार करना, प्रश्न लिखना और उनका सम्पादन करना तथा अंक-योजना लिखना सही तरीका है।

- प्रश्न के अन्य विकल्पों में चरणों का क्रम सही नहीं हैं, अतः वे गलत हैं।

For Best PDF, Search on Google - "Nitin Gupta PDF"
Scanned by CamScanner

119. पर्यावरण अध्ययन के शिक्षक के रूप में आप बच्चों को चिड़ियाघर ले जाने की योजना बनाते हैं। आप बच्चों को निम्नलिखित में से कौन-सी गतिविधि करने की अनुमति नहीं देंगे? (CTET 2012)

(1) चिड़ियाघर के जानवरों के लिए बहुत सारी खाने की सामग्री ले जाना
(2) चिड़ियाघर के विभिन्न जानवर कौन-सा भोजन खाते हैं यह पता लगाना
(3) चिड़ियाघर में जिन जानवरों को वे देखेंगे उनकी फोटो एकत्रित करना
(4) चिड़ियाघर में उन्होंने जो देखा उसका चित्र बनाने के लिए उनकी ड्राइंग की कॉपी को साथ ले जाना

व्याख्या *(1)* पर्यावरण अध्ययन के शिक्षक के रूप में बच्चों को चिड़ियाघर ले जाने की योजना बनाते हैं, तो चिड़ियाघर के जानवरों के लिए बहुत सारी खाने की सामग्री ले जाने की अनुमति नहीं देंगे।
- खाने की वस्तुओं से आकर्षित होकर जानवर बच्चों को नुकसान भी पहुँचा सकते हैं।

120. पर्यावरण अध्ययन की कक्षा में बच्चों के व्यक्तिगत अनुभवों को महत्व देना शिक्षक को लाभ पहुँचाता है (CTET 2012)

(1) विषय को बच्चों के अनुभव-संसार से जोड़ने और विमर्श व सीखने को बढ़ावा देने में
(2) उसकी ऊर्जा बचाने में, क्योंकि बच्चे बातचीत करना पसन्द करते हैं
(3) बच्चों के विशिष्ट अनुभवों को जानने में
(4) बच्चों की भाषा और सम्प्रेषण कुशलताओं को सुधारने और परिमार्जित करने में

व्याख्या *(1)* पर्यावरण अध्ययन की कक्षा में बच्चों के व्यक्तिगत अनुभवों को महत्व देकर शिक्षक विषय को बच्चों के अनुभव - संसार से जोड़कर और विमर्श व सीखने को बढ़ावा देने में लाभ पहुँचाता है।

121. निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा प्राथमिक स्तर पर पर्यावरण अध्ययन पढ़ाने का उद्देश्य नहीं है? (CTET 2012)

(1) बच्चों पर आकलन के लिए शब्दावली और परिभाषाओं का बोझ डालना
(2) जीवन और पर्यावरण से सरोकार रखने वाले मूल्यों को आत्मसात् करना
(3) प्राकृतिक व सामाजिक वातावरण के बारे में उत्सुकता जगाना
(4) बच्चों को खोजने की क्रियाओं में लगाना तथा व्यावहारिक क्रियाएँ करवाना जो संज्ञानात्मक और मनश्चालक कौशलों के विकास में सहायक होती हैं

व्याख्या *(1)* बच्चों पर आकलन के लिए शब्दावली और परिभाषाओं का बोझ डालना प्राथमिक स्तर पर पर्यावरण अध्ययन पढ़ाने का उद्देश्य नहीं है।
- बच्चों को पर्यावरण अध्ययन पढ़ाने का तरीका सरल होना चाहिए।

122. पर्यावरण अध्ययन की पाठ्य-पुस्तक में रेलवे टिकट का एक नमूना दिखाना (CTET 2012)

(1) निष्कर्ष पर पहुँचने की बच्चों की कुशलता का विकास करता है
(2) बच्चों को वास्तविक जानकारी से अन्तःक्रिया करने का अवसर देता है, साथ ही अवलोकन की कुशलता का विकास करता है
(3) बच्चों को रेल के किराये के बारे में बताता है
(4) टिकट में प्रयुक्त विभिन्न संक्षिप्ताक्षरों का ज्ञान उपलब्ध कराता है

व्याख्या *(2)* पर्यावरण अध्ययन की पाठ्य-पुस्तक में रेलवे टिकट का एक नमूना दिखाने से तात्पर्य, बच्चों को वास्तविक जानकारी से अन्तःक्रिया करने का अवसर देना साथ ही अवलोकन की कुशलता का विकास करना है।

123. निम्नलिखित में से कौन-सा प्राथमिक विद्यालय में पर्यावरण अध्ययन पढ़ाने का उद्देश्य निरूपित है? (CTET 2012)

(1) अपने ज्ञान का विस्तार करने के लिए बच्चों को सूचना देना कि उन्हें कौन-सी पुस्तकें पढ़नी चाहिए
(2) विद्यालय में बच्चों के अनुभवों को बाहरी दुनिया से जोड़ना
(3) बच्चों को तकनीकी शब्दावली और परिभाषाओं से परिचित कराना
(4) पर्यावरण अध्ययन से सम्बन्धित तकनीकी शब्दों का आकलन

व्याख्या *(2)* प्राथमिक विद्यालय में पर्यावरण अध्ययन पढ़ाने का उद्देश्य विद्यालय में बच्चों के अनुभवों को बाहरी दुनिया से जोड़ना है।

124. पर्यावरण अध्ययन की कक्षा में सरल प्रयोग और निदर्शन किए जा सकते हैं (CTET 2012)

(1) बच्चों द्वारा पूछे गए प्रश्नों पर आधारित विचारों पर चर्चा करने, अवलोकनों को दर्ज करने तथा उनका विश्लेषण करने के लिए
(2) कक्षा में अनुशासन को सुनिश्चित करने हेतु बच्चों को नियन्त्रित करने के लिए
(3) बच्चों को स्वयं सीखने के योग्य बनाने और अवलोकन कौशलों को पैना करने के लिए
(4) उच्च कक्षाओं में क्या किया जाता है उसका अनुकरण करने के लिए

व्याख्या *(3)* पर्यावरण अध्ययन की कक्षा में सरल प्रयोग और निदर्शन किए जा सकते हैं क्योंकि इससे बच्चों को स्वयं सीखने के योग्य बनाने और अवलोकन कौशलों को पैना करने का अवसर प्राप्त होता है।

125. दोपहर के भोजन अवकाश के बाद पर्यावरण अध्ययन पढ़ाते समय आप यह पाते हैं कि बच्चे पाठ में रुचि नहीं ले रहे हैं। आप क्या करेंगे? (CTET 2012)

(1) बच्चों को बाहर मैदान में खेलने के लिए ले जाएँगे
(2) बच्चों से कहेंगे कि वे डेस्क पर सिर रखकर आराम करें
(3) पाठ को रोचक बनाने के लिए बहु-आयामी बुद्धि पर आधारित दृश्य-श्रव्य सामग्रियों का प्रयोग करेंगे
(4) प्रकरण को तुरन्त बदल देंगे

व्याख्या *(3)* दोपहर के भोजन अवकाश के बाद अगर शिक्षार्थी पर्यावरण अध्ययन में रूचि नहीं लेते हैं तो शिक्षक को पाठ को रोचक बनाने के लिए बहु-आयामी बुद्धि पर आधारित दृश्य-श्रव्य सामग्रियों का प्रयोग करना चाहिए।

126. एक विद्यालय ने राजस्थान के लिए कक्षा-V के बच्चों के शैक्षिक भ्रमण की योजना बनाई। भ्रमण के दौरान बच्चों से आपकी क्या अपेक्षाएँ रहेंगी? (CTET 2012)

For Best PDF, Search on Google - "Nitin Gupta PDF"
Scanned by CamScanner

(1) यदि उनके कोई प्रश्न हों तो उन्हें दर्ज कर लेना चाहिए और घर पहुँचने के बाद अभिभावकों से उन्हें पूछना चाहिए
(2) चीजों के बारे में बिना कोई प्रश्न पूछे, सभी का अवलोकन करना चाहिए
(3) उन्हें आनन्द उठाना चाहिए
(4) उन्हें ध्यान से अवलोकन करना चाहिए, टिप्पणियाँ दर्ज करनी चाहिए और बाकी बच्चों तथा शिक्षक के साथ अपने अवलोकनों को बाँटना चाहिए

व्याख्या *(4)* किसी विद्यालय ने राजस्थान के लिए कक्षा-V के बच्चों के शैक्षणिक भ्रमण की योजना बनाई है तो भ्रमण के दौरान बच्चों से अपेक्षाएँ रहेंगी कि–
- वे पूरे ध्यान से अवलोकन करें तथा सम्बन्धित स्थानों के बारे में जाने और प्रश्न करें, अन्य शिक्षकों और बच्चों के साथ उस विषय पर चर्चा करें।

127. प्राथमिक स्तर पर, आकलन में शामिल होना चाहिए **(CTET 2012)**
(1) अर्द्ध-वार्षिक और वर्ष के अन्त में वार्षिक परीक्षाएँ
(2) छोटे बच्चों को उत्तीर्ण अथवा अनुत्तीर्ण की श्रेणी के अन्तर्गत आँकने के लिए प्रत्येक सप्ताह गृह-कार्य और कक्षा-कार्य
(3) शिक्षक द्वारा सतत और असंरचनात्मक तरीके से किए गए अवलोकन को बच्चों और अभिभावकों के साथ बाँटना
(4) प्रत्येक सप्ताह औपचारिक परीक्षाएँ और खेल तथा उन्हें प्रगति पत्र में दर्ज करना

व्याख्या *(3)* प्राथमिक स्तर पर आकलन के अन्तर्गत शिक्षक द्वारा सतत और असंरचनात्मक तरीके से किए गए अवलोकन को बच्चों और अभिभावकों के साथ बाँटना चाहिए।

128. पर्यावरण अध्ययन की कक्षा में अवधारणाओं को नष्ट करने के लिए कविताओं और कहानी कथन का प्रयोग करना **(CTET 2011)**
(1) बच्चों में विद्यमान भाषिक एवं सांस्कृतिक विविधिता को ध्यान में रखता है
(2) उचित दिशा में बच्चों की ऊर्जा को संकेन्द्रित करता है
(3) पाठ को आनन्ददायक और रोचक बनाने में मदद करता है
(4) स्थानीय एवं विश्व स्तर पर संसार की प्रकृति को खोजने और कल्पना करने की योग्यता का विकास करने में मदद करता है

व्याख्या *(4)* पर्यावरण अध्ययन की कक्षा में अवधारणाओं को स्पष्ट करने के लिए कविताओं और कहानियों का प्रयोग स्थानीय एवं विश्व स्तर पर संसार की प्रकृति को खोजने और कल्पना करने की योग्यता का विकास करने में मदद करता है।

129. पर्यावरण अध्ययन की अपनी कक्षा में समूह क्रियाकलाप का निर्माण करते हुए आप निम्नलिखित विचारों में से किनका ध्यान रखेंगे?
A. बच्चों की रुचियों का ध्यान हो।
B. लड़कों और लड़कियों को समान रूप से रुचिकर लगे।
C. इसमें मूल्यवान सामग्री लगी हो।
D. सभी धार्मिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के बच्चों को रुचिकर लगे। **(CTET 2011)**
(1) B और C (2) A, B और D
(3) A, C और D (4) B और D

व्याख्या *(2)* पर्यावरण अध्ययन की अपनी कक्षा में समूह क्रियाकलाप का निर्माण करते हुए बच्चों की रूचियाँ, लड़कों और लड़कियों की समान रूचि को ध्यान में रखना चाहिए जो सभी धार्मिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के बच्चों को रूचिकर लगे।

130. निम्नलिखित सभी कथन पर्यावरण अध्ययन में सामूहिक रूप से क्रियाकलापों में संलग्न शिक्षकों और विद्यार्थियों के पक्ष में तर्क प्रस्तुत करते हैं, केवल एक कथन को छोड़कर। वह कथन कौन-सा है? **(CTET 2011)**
(1) बच्चे परस्पर सामंजस्य और सहयोग करना सीखते हैं
(2) बच्चे दूसरे बच्चों से बात और बहस करने से अधिक सीखते हैं
(3) समूह क्रिया-कलापों की वजह से बच्चे अंक उपलब्धि में अच्छा सुधार प्रदर्शित करते हैं
(4) प्रौढ़ों के समर्थन से बच्चों को अपनी क्षमता से अधिक ज्ञान के निर्माण में सहायता मिल सकती है

व्याख्या *(4)* सामूहिक क्रियाकलापों में बच्चे प्रौढ़ों से सीख सकते हैं। यह कथन गलत है क्योंकि प्रौढ़ो द्वारा समर्थन विद्यालयी पर्यावरण का भाग नहीं हैं।
- बच्चे समूह में परस्पर सामंजस्य और सहयोग से सीखते हैं तथा सामूहिक क्रियाकलापों से बच्चों में बहस होने से वे अधिक सीखते हैं।

131. समूह कार्य से पर्यावरण अध्ययन कर रहे बच्चों की सामाजिक-वैयक्तिक विशेषताओं के आकलन के लिए निम्नलिखित में से कौन-सा उपकरण सर्वाधिक उपर्युक्त होगा? **(CTET 2011)**
(1) दत्तकार्य (2) कागज-पेन्सिल परीक्षण
(3) मौखिक प्रश्न (4) निर्धारण मापनियाँ

व्याख्या *(3)* समूह कार्य से पर्यावरण अध्ययन कर रहे बच्चों की सामाजिक वैयक्तिक विशेषताओं के आकलन के लिए मौखिक प्रश्न सबसे उपर्युक्त है।
- मौखिक प्रश्नों के माध्यम से एक शिक्षक/शिक्षिका यह ज्ञात कर सकता है/सकती है कि विद्यार्थियों में पर्यावरण अध्ययन के विषय में सामाजिक-वैयक्तिक विशेषताओं के सन्दर्भ में कितनी समझ विकसित हुई है।

132. कक्षा IV की एक शिक्षिका ने अपने विद्यार्थियों से कहा, "कुछ वयोवृद्ध लोगों से यह पूछिए कि जब वे जवान थे, तो क्या उन्होंने कुछ ऐसे पौधे देखे थे जो आजकल नहीं दिखाई पड़ते।"
उपरोक्त प्रश्न के पूछे जाने पर निम्नलिखित में से किस कौशल के आकलन की सम्भावना नहीं है? **(CTET 2011)**
(1) चर्चा (2) प्रश्न पूछना
(3) अभिव्यक्ति (4) प्रयोग

व्याख्या *(4)* जब विद्यार्थी किसी वयोवृद्ध व्यक्ति से ऐसे पौधे के बारे में प्रश्न करता है, जो आजकल दिखाई नहीं पड़ते, ऐसे में विद्यार्थी के चर्चा, अभिव्यक्ति तथा प्रश्न पूछने के कौशल के आंकलन की संभावना है।

For Best PDF, Search on Google - "Nitin Gupta PDF"
Scanned by CamScanner

- इस प्रकार के प्रश्न से प्रयोग कौशल की आकलन की संभावना नहीं है।
- प्रयोग कौशल के अन्तर्गत विद्यार्थी स्वयं प्रयोग करके उसका निष्कर्ष निकालते है।

133. एक शिक्षक प्रत्येक बच्चे को अपने घरों की रद्दी-सामग्री से कुछ उपयोगी वस्तु बनाने को कहता है। शिक्षक का शैक्षिक अभिप्राय नहीं है **(UPTET 2011)**

(1) कूड़े से बनी श्रेष्ठ वस्तुओं की प्रदर्शनी आयोजित करना
(2) कक्षा के श्रेष्ठ विद्यार्थी के बारे में निर्णय करना
(3) बच्चों में सृजनशीलता का विकास करना
(4) बच्चों को पुनश्चक्रण, पुनःप्रयोग और रूपान्तरण को समझने देना

व्याख्या *(2)* शिक्षक का प्रत्येक विद्यार्थी से रद्दी सामग्री से कुछ उपयोग वस्तु बनाने को कहना, से अभिप्राय बच्चों को पुनश्चक्रण, पुनः प्रयोग और रूपांतरण को समझने देना है।
- इससे बच्चों में सृजनशीलता का विकास होता है।
- अतः कक्षा के श्रेष्ठ विद्यार्थी के बारे में निर्णय करना शिक्षक का उद्देश्य नहीं हैं।

134. निम्नलिखित प्रश्नों को पढ़िए।
A. मैंने क्रियाकलाप की योजना कितनी अच्छी बनाई?
B. मैंने योजना का अनुसरण कितना अच्छा किया?
C. मेरी शक्तियाँ क्या थीं?
D. मुझे सचमुच कठिन क्या लगा?
ऊपर दिए गए चार प्रकार के प्रश्नों के उत्तरों से होगा **(UPTET 2011)**

(1) बच्चों और शिक्षकों, दोनों का स्व-आकलन
(2) शिक्षक द्वारा समग्र आकलन
(3) बच्चों का स्व-आकलन
(4) शिक्षकों का स्व-आकलन

व्याख्या *(1)* उपर्युक्त विकल्पों से बच्चों और शिक्षकों, दोनों का स्व-आकलन हो सकता है।

135. पर्यावरण अध्ययन की पाठ्य-पुस्तक में प्रयुक्त भाषा **(UPTET 2011)**

(1) परिभाषाओं पर बल देते हुए औपचारिक बनाई जानी चाहिए
(2) तकनीकी और औपचारिक होनी चाहिए
(3) बच्चे की दिन-प्रतिदिन की भाषा से सम्बद्ध होनी चाहिए
(4) रूखी और बच्चों के द्वारा समझने में कठिन होनी चाहिए

व्याख्या *(3)* पर्यावरण अध्ययन की पाठ्य-पुस्तक में प्रयुक्त भाषा बच्चे की दिन-प्रतिदिन की भाषा से सम्बद्ध होनी चाहिए।
- दिन-प्रतिदिन की भाषा से बच्चे सरलता से सीखते हैं एवं अधिगम में रूचि लेते हैं।

136. एक शिक्षक अपने विद्यार्थियों को विभिन्न पशुओं के चित्र देता है और उन पशुओं पर रंग भरने को कहता है जो हमारे घरों में नहीं रहते। इस क्रिया-कलाप का उद्देश्य है
A. सृजनात्मकता का विकास करना
B. अवलोकन का विकास करना
C. वर्गीकरण कौशल का विकास करना
D. डाटा संग्रह का विकास करना
उपरोक्त में से कौन-से सही हैं? **(UPTET 2011)**

(1) B, C और D (2) A, C और D
(3) A, B और C (4) A, B और D

व्याख्या *(3)* यदि शिक्षक बच्चों को घरों में नहीं रहने वाले पशुओं पर रंग भरने को कहता है तो वह बच्चों में सृजनात्मकता का विकास, अवलोकन का विकास तथा वर्गीकरण कौशल का विकास करना चाहता है।

137. पर्यावरण अध्ययन के पाठ्यक्रम, जिसे छः उप-विषयों के चतुर्दिक निर्मित किया गया है, में 'पौधे' और 'पशु' को जानबूझकर 'परिवार और मित्र' उप-विषय के अन्तर्गत सम्मिलित किया गया है। इसके लिए निम्नलिखित में से एक कारण को छोड़कर शेष सभी कारण हो सकते हैं। वह एक कारण कौन-सा है? **(CTET 2011)**

(1) विद्यार्थियों को विज्ञान के दृष्टिकोण से पौधों और पशुओं को समझने में सक्षम बनाना
(2) सामाजिक और सांस्कृतिक सन्दर्भ में पौधों और पशुओं के स्थान निर्धारित करने में विद्यार्थियों को सहायता करना
(3) इस बात को उभारना कि किस प्रकार मनुष्य एक-दूसरे से घनिष्ठ सम्बन्धों को साझा करते हैं
(4) इस बात को उभारना कि किस प्रकार कुछ समुदायों के जीवन और आजीविकाएँ विशेष पशुओं या पौधों से घनिष्ठ रूप से जुड़े हैं

व्याख्या *(1)* पर्यावरण अध्ययन के पाठ्यक्रम में पौधों और पशुओं को परिवार और मित्र उप-विषय के अन्तर्गत शामिल करने का उद्देश्य विद्यार्थियों को विज्ञान के दृष्टिकोण से पौधों और पशुओं को समझने में सक्षम बनाना तथा सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ में पौधों और पशुओं के स्थान निर्धारित करने में विद्यार्थियों की सहायता करना है।
- इसके अतिरिक्त इस बात को उभारना कि किस प्रकार कुछ समुदायों के जीवन और आजीविकाएं विशेष पशुओं या पौधों से घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित हैं।

138. पर्यावरण अध्ययन के शिक्षण-अधिगम में 'सर्वेक्षण' का उद्देश्य है
A. समुदाय के साथ अन्योन्यक्रिया का अवसर प्रदान करना
B. बच्चों को विभिन्न लोगों के प्रति संवेदनशील बनाना
C. सूचना को प्रत्यक्ष प्राप्त करने का अवसर प्रदान करना
D. आकलन के एक अवसर के रूप में इनका उपयोग करना
उपरोक्त में से कौन-से सही हैं? **(CTET 2011)**

(1) A, C और D (2) A, B, C और D
(3) A, B और C (4) A, B और D

व्याख्या *(2)* पर्यावरण अध्ययन के शिक्षण-अधिगम में 'सर्वेक्षण' का उद्देश्य समुदाय के साथ अन्योन्यक्रिया का अवसर प्रदान करना तथा बच्चों को विभिन्न लोगों के प्रति संवेदनशील बनाना है। इसके साथ ही सूचना को प्रत्यक्ष प्राप्त करने का अवसर प्रदान करना तथा आकलन के एक अवसर के रूप में इनका उपयोग करना है।

For Best PDF, Search on Google - "Nitin Gupta PDF"
Scanned by CamScanner

Daily Current Affairs एवं अन्य Free Study Material PDF के लिए अभी Download करें हमारी Apps

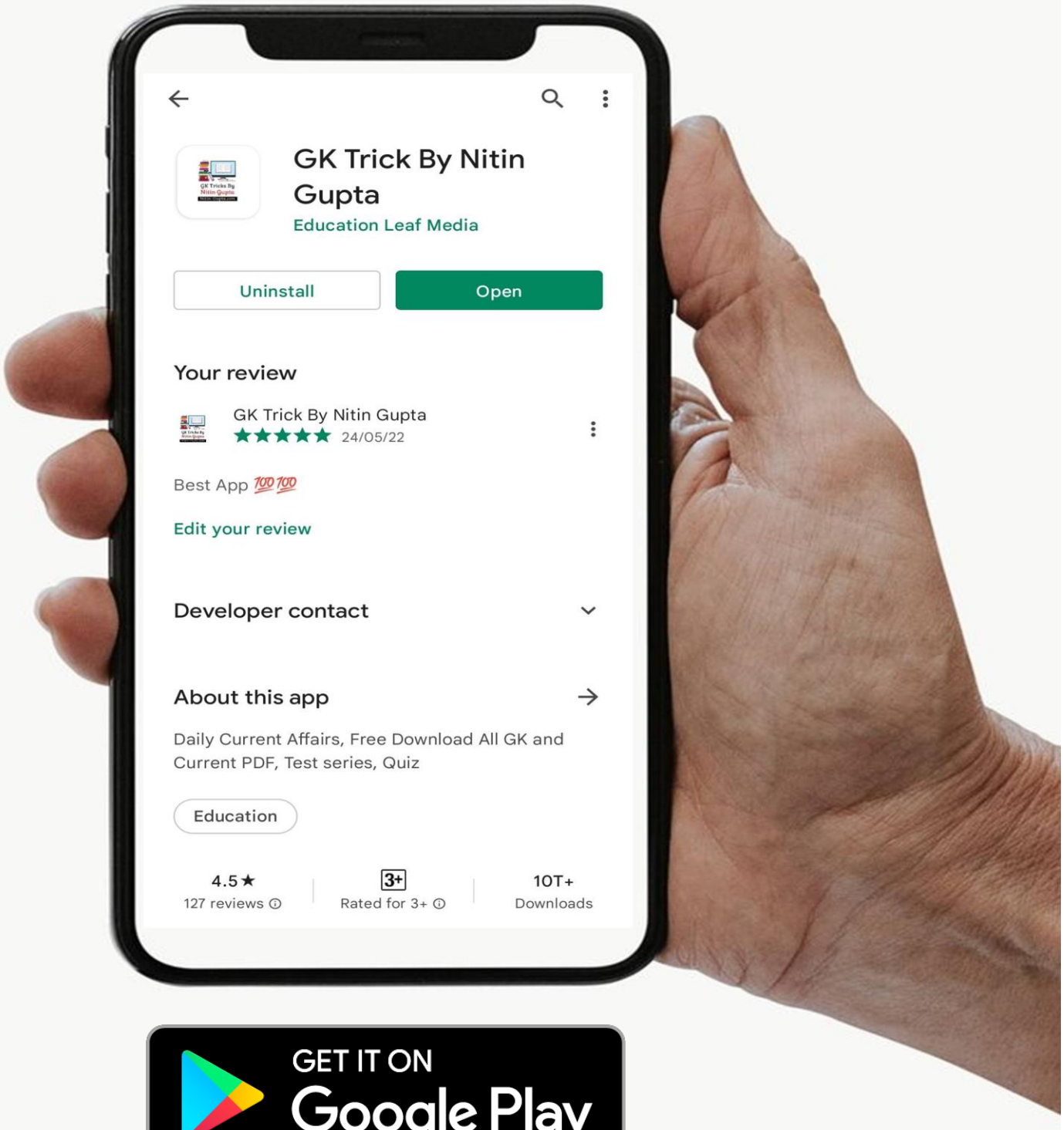

GET IT ON Google Play